श्रीजिनदत्तसूरिप्राचीनपुस्तकोद्धारफण्ड, ग्रन्थांक ६०

जैन धातु-प्रतिमालेख

प्रथम भाग

संग्राहक और संपादक

शान्तमूर्ति परमपूज्योपाध्याय मुनि श्रीसुखसागरजी महाराज के

शिष्यरत्नः—

मुनि कान्तिसागर

—०—

जबलपुर निवासी गोलेच्छा कुलोत्पन्न स्वर्गीय श्रेष्ठिवर्य्य बन्धुद्वय

प्रतापचन्दजी धनराजजी के परिवार

द्वारा प्रदत्त द्रव्य सहाय्य से

—:०:—

प्रकाशक—

मंत्री, श्रीजिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार

सूरत

प्रथमावृत्ति ५००

वीर निर्वाण सं० २४७६	ईस्वीसन् १९५०	विक्रम संवत् २००७

प्राप्ति स्थान—

श्रीजिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार
शीतलवाड़ी, गोपीपुरा
सूरत, (उत्तर गुजरात)

प्रतापचन्द धनराज गोलेच्छा
सदर बाजार
जबलपुर, (मध्यप्रान्त)

सम्पतलाल मूलचन्द गोलेच्छा,
कटनी।

मुद्रक—
(१) जोरावरमल जैन
प्रतिभा प्रिंटिंग प्रेस
३६६ सराफा, जबलपुर म० प्र०
(पृष्ठ १ से ६४ तक)

(२) एन० एल० जैन
चन्द्रकान्ता प्रिंटिंग वर्क्स
४५२ गांधीगंज, जबलपुर म० प्र०)
(आवरण से प्रस्तावना पर्यन्त)
(पृष्ठ ६५ से ८० तक)

किंचित् प्रास्ताविक

श्रमणसंस्कृति—

श्रमणसंस्कृति का अतीत अत्यन्त उज्ज्वल और प्रेरणाप्रद रहा है। मानव-पवित्रता की रक्षा के लिये इस जनतन्त्रमूलक संस्कृति ने कितना भारी वर्ग संघर्ष किया है, कितनी यातनाएं सही, यह तो इसका इतिहास ही बतायेगा, निवृत्तिमूलक प्रवृत्ति द्वारा इस परंपरा ने भारतीयसंस्कृति और सभ्यता के मौलिक स्वरूप को संकटकाल में भी, अपने आपको होमकर, सुरक्षित रखा। भारतीय नैतिकता और परंपरा की रक्षा, श्रमण एवं तदनुयायी वर्ग ने भली-भांति की। उसमें सामयिक परिवर्तन और परिवर्द्धन कर जानतिक सुख शान्ति को स्थिर रखा, मानव द्वारा मानव शोषण की भयंकर रीतिका घोर विरोध कर, समत्व की मौलिक भावना को अपने जीवन में मूर्तरूप देकर, जन-जीवन में सत्य और अहिंसा की प्रतिष्ठा की। कला और सौन्दर्य द्वारा मानव परंपरा के उच्चतर दार्शनिक भावों को छैनी एवं तूलिका के सहारे रूपदान दे-दिल—वाकर भावमूलक विचारोत्तेजक परंपरा का संरक्षण किया। निर्दोष, बलीष्ठ और प्रगतिशील साहित्य की सृष्टिकर न केवल तत्कालीन जन-जीवन उन्नयन में महत्त्वपूर्ण योग ही दिया अपितु सामाजिक और लोक-संस्कृति के बहुमूल्य सिद्धान्तों एवम् भारतीय इतिहास विषयक साधनों में उल्लेखनीय अभिवृद्धि की। अनुभवमूलक ज्ञान दान से राष्ट्र के प्रति जनता को जाग्रत किया, आध्यात्मिक विकास के साथ साथ समाज और राष्ट्र को भी उपेक्षित न रखा। ज्ञानमूलक आचारों को अपने जीवन में साकार कर जनता के सामने चरित्रनिर्माण विषयक नूतन आदर्श उपस्थित किया, और आध्यात्मिक साधना में प्राणीमात्र को समान अधिकार दिया। मानवकृत ऊंचत्व नीचत्व की दीवारों को समूल नष्टकर अखण्ड मानव संस्कृति का समर्थन किया। इन्हीं कारणों से शताब्दियों तक श्रमणसंस्कृति की धारा अखंडरूप से बही और बह रही है। सामाजिक शान्ति के बाद उनका अन्तिम साध्य था मुक्ति।

श्रमणसंस्कृति का क्रमबद्ध इतिहास आज हमारे सम्मुख नहीं है, परन्तु इस विषय के साधन ही हमारे यहां नहीं हैं, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता। कारण कि, पुरातन ग्रन्थभंडारों में और शिला व ताम्रपत्रों पर खुदी हुई लिपियों में इतिहास के तत्त्व भरे पड़े हैं। हमारी असावधानी या औदासिन्य मनोवृत्ति के कारण बहुतसी सामग्री तो नष्ट हो चुकी और दैनन्दिन नष्ट होती ही जा रही है। समाज ने अपने ऐतिहासिक साधनों पर बहुत ही कम ध्यान दिया है। ऐसी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साधन सामग्री में प्रतिमालेखोंकी उपयोगिता सर्वविदित है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैले हुए जिनमन्दिरों में ये साधन बिखरे पड़े हैं। इन्हीं में श्रमण-परम्परा का इतिहास छुपा हुआ है। ऐसी लेखयुक्त मूर्तियों को अध्ययन की सुविधा के लिए, हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं,—प्रस्तर मूर्ति और धातु मूर्ति। सापेक्षतः धातुमूर्तियाँ ही अधिक मिलती हैं। प्रस्तर प्रतिमाएँ भी सलेख रहती हैं, पर उनकी संख्या सैकड़ों की ही समझनी चाहिए। जब १० वीं शती के बाद की बहुत ही कम ऐसी धातु प्रतिमाएं मिलेंगी जो सलेख न हों। अतः श्रमणों की परंपरा और जाति, कुलों, नगरों का इतिहास जानने के लिए धातुमूर्तियों पर खुदे हुए लेखों का गंभीर अध्ययन वांछनीय है। यद्यपि इस विषय पर प्रकाश डालने वाली सामग्री भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा संग्रहीत हो पर्याप्त प्रकाश में आ चुकी है, परन्तु अभी भी बहुतसी सामग्री अंधकार के गर्भ में है। जब तक इस प्रकार के सभी साधन हमारे सामने नहीं आ जाते तब तक सर्वांगीण इतिहास की कल्पना संभव नहीं। धातुप्रतिमाओं के लेखों की चर्चा करने के पूर्व कलाकी दृष्टि से धातु मूर्तियों का क्रमिक विकास जान लेना आवश्यक है।

धातु मूर्तियाँ—

अद्यावधि प्राप्त प्राचीन जैनप्रतिमाओं में प्रथम कोटि की प्रतिमा प्रस्तर की ही हैं। सर्व प्रथम कलाकारों ने भाव प्रकाशन के माध्यम-स्वरूप प्रस्तर को ही उपयुक्त समझा था।

कलाकार आत्मस्थ सौंदर्य को कल्पना के सम्मिश्रण से उपादान द्वारा रूप प्रदान करता है। इसमें उपादानों की अपेक्षा आन्तरिक भावों की ही प्रधानता रहती है। तात्पर्य कि किसी भी प्रकार के माध्यम द्वारा, यदि कलाकार में सौंदर्य-दर्शन एवं प्रदर्शन की उत्कृष्ट क्षमता है, तो वह व्यक्त

कर देगा। जैनाश्रित कलाचार्यों ने यही किया है। समस्त जैनाश्रित शिल्पकृतियों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सभी प्रकार के उपादानों का उपयोग कलाकारों ने भावों के व्यक्तिकरण में सफलतापूर्वक किया है। प्राप्त प्रतिमाओं के आधार पर तो यही कहा जा सकता है कि सर्व प्रथम मूर्ति निर्माण में काष्ठ-प्रस्तरादि का उपयोग हुआ। पर काल परिवर्तनशील होता है। कलाकार भी सामयिक उपादानों की उपेक्षा नहीं कर सकता। गुप्तकाल में मूर्तिनिर्माण विषयक कला उन्नति के शिखर पर थी। इस युग में धातु की ढली हुई मूर्तियाँ प्रचुर परिमाण में बनती थीं। इस युग में जैन मूर्तियाँ भी धातु की बना करती थीं। यद्यपि इस काल की जैनप्रतिमाएँ बहुत ही कम उपलब्ध होती हैं, पर जो भी हैं, वे तात्कालिक कला का प्रतिनिधित्व कर सकती हैं। गुप्तकालीन एक जैनधातुप्रतिमा *सोनागिरि* में थी, जो अब भारतकलाभवन में सुरक्षित है। मेरे विनम्र मतानुसार यही, उपलब्ध जैन धातुमूर्तियों में सर्व प्राचीन है। इसके बाद गुजरात की उन मूर्तियों का स्थान आता है जिन पर डा० *हीरानन्द*[1] शास्त्री, *साराभाई*[2] नवाब, डा० *एच० डी०*[3] सांकलिया आदि विद्वान प्रकाश डाल चुके हैं। सातवीं शती तक की सलेख मूर्तियों में इन मूर्तियों का अपना स्वतंत्र स्थान है। प्राचीन धातुप्रतिमाओं की कला से ज्ञात होता है कि उन दिनों वे प्रायः अपरिकर ही बनती थीं। अति प्राचीन प्रस्तरोत्कीर्ण मूर्तियों के व्यापक भाव सूचक परिकर का प्रभाव उन पर नहीं है। लेख लिखने की प्रथा भी व्यापक नहीं थी। इसी कारण मूर्ति का पृष्ठ भाग भी उतना साफ नहीं बनता था। परन्तु कला और सौन्दर्य की दृष्टि से इन प्रतिमाओं का महत्व सर्वोपरि है शरीर रचना, सौष्ठव और विन्यास कलाकार की दीर्घकालव्यापी साधना का परिचय देता है। मुखमण्डल पर शान्ति की आभा परिलक्षित होती है। इनकी प्रभावशाली रचना एवं कुछेक उपकरण तो जैनाश्रित मूर्तिकला में अभिमान की वस्तु है।

गुप्तकाल से ११ वीं शती की प्रतिमाओं को एक ही भाग में रखना उचित है। इस युग की जितनी भी धातुप्रतिमाएँ प्राप्त हुई हैं उनका

१—रिपोर्ट ऑफ दि आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ बरोरा स्टेट, १९३७-८।
२—भारतीय विद्या वर्ष १, अं० २।
३—बुलेटिन ऑफ दि डेक्कन कॉलेज रिसर्च इन्स्टिट्यूट, १९४० मार्च।

अपना स्वन्तत्र स्थान है। नवग्रहों का स्पष्ट अंकन भी उस समय आवश्यक था। ऐसी एक प्रतिमा मुझे भी मध्यप्रदेश से प्राप्त हुई थी। इस युग की कुछेक मूर्तियों में लेख भी उपलब्ध हुए हैं, पर वे सामान्य बातों की ही सूचना देते हैं। प्रतिष्ठापक आचार्य या मुनि तथा बनवाने वाले श्रावक का नाम और कुछेक में संवत, बस लेख यहीं समाप्त! इस काल की कृतियों पर मैंने अन्यत्र विस्तार से विवेचन किया है अतः यहां पिष्टपेषण व्यर्थ है।

उत्तरवर्ती कालीन जैनप्रतिमाओं की निर्माण शैली में भारी परिवर्तन हुआ। सम्पुर्ण परिकरयुक्त मूर्तियां ११ वीं शती के बाद भी मिलती हैं परन्तु उनमें कला तत्व बहुत ही कम रह गया। परिकर का विकास तो हुआ, पर प्रधान प्रतिमा का गौरव कम हो गया, आकर्षकतत्वविहीन प्रतिमा कलाकारों की वस्तु न रहकर धार्मिक वस्तु तक ही सीमित रह गई। पिछला भाग पूर्वापेक्षया अधिक स्पष्ट और साफ रहने लगा, और विस्तार से लेख लिखे जाने लगे। संवत, आचार्यपरंपरा, ग्रहस्थ,नाम ज्ञाती, नगर, नक्षत्र, बार आदि अनेक ज्ञातव्य बातों का उल्लेख पश्चातवर्ती मूर्तियों में रहने लगा। निर्माण संख्या भी खूब बढ़ी।

पश्चिम भारतीय मूर्तियाँ श्वेताम्बर सम्प्रदाय से सम्बद्ध है, दक्षिण की दिगम्बर। परन्तु कला और लेखन शैली का जहां तक प्रश्न है श्वेताम्बर अधिक सफल रहे।

धातुप्रतिमा के लेखों का महत्व सार्वजनिक इतिहास की दृष्टि से भले ही अधिक न हो, पर श्रमणपरंपरा और समाज विषयक इतिहास की अपेक्षा से महत्वपूर्ण है। जातियों और गच्छों का तथा भारतीय भौगोलिक इतिहास की सामग्री इन्हीं से प्राप्त होती है। सुप्रसिद्ध विद्वान डा० ए० गेरिनाट ने ठीक ही कहा है—

उन शिला लेखों का व जैनों के व्यवहारिक साहित्य का अभ्यास भारतीय इतिहास के ज्ञान प्राप्त करने में सहाय रूप हो सकेगा।

धातु प्रतिमाओं के लेखों से इतना तो कहा ही जा सकता है कि जैन

मुनियों में इतिहास के प्रति शुरू से रुचि रही है। ब्राह्मणों की अपेक्षा जैन मुनियों ने इस दिशा में अधिक कार्य किया है।

डॉ॰ गेरिनॉट ने इस १६०७ तक के प्रकाशित लेखों में से ८५० लेखों का प्रमाणिक विवेचन किया। इसमें २२०० वर्षों का जैन इतिहास सुरक्षित है।

जैन मूर्तियों के लेखों का संकलन करने वाले विद्वानों में *मुनि जिनविजयजी, धर्मसूरिजी, बुद्धिसागरजी,* बाबू *पूर्णचन्दजी* नाहर, *अगरचन्दजी* नाहटा, *भँवरलालजी* नाहटा, बाबू *कामताप्रसाद* जैन और बाबू *छोटेलाल* जैन आदि कुछ प्रमुख है।

प्रस्तुत "जैन धातु प्रतिमा लेख" के पीछे भी छोटा सा इतिहास है। इसे देना उचित समझता हूं।

१६३६ की बात है, उन दिनों मैं परमपूज्य गुरुमहाराज *श्रीउपाध्याय मुनि श्रीसुखसागरजी* एवं ज्येष्ठगुरुबन्धु मुनि *श्रीमंगलसागरजी* महाराज के साथ बम्बई में चातुर्मास व्यतीत कर रहा था। गुजराती जैनसाहित्य के प्रकांड पंडित और अध्यवसायी विद्वान् स्व॰ *मोहनलाल दलीचन्द* देशाई B. A. LL. B. एडवोकेट, मेरे संग्रह की प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों के अवलोकनार्थ अक्सर आया करते थे।

इतिहास और संशोधन की ओर मुझे मोड़ने वाले दो चार व्यक्तियों में देशाई भी थे। एक दिन प्रतिमालेखों की बात चली पड़ी। देशाई ने कहा कि हम लोग गवेषणा के लिये बाहर जाते हैं तो वहां के मूर्तिलेख वगैरह संग्रहीत कर लेते हैं, पर बम्बई में इतने वर्ष रहने के बाद भी यहाँ का कार्य अभी तक प्रारम्भ ही नहीं कर सके है। मुझे यह बात उसी समय चुभ गई और निश्चय किया कि कम से कम बम्बई के समस्त जिनमंदिरस्थित धातु और प्रस्तर मूर्तियों के लेख ले लिये जाँय, यद्यपि उन दिनों लिपि विषयक मेरा ज्ञान अत्यन्त सीमित था, परन्तु *देशाई* और पुरातत्त्वाचार्य *मुनि श्रीजिनविजयजी* का सहयोग न मिलता तो मेरा उत्साह वहीं ठंडा हो जाता। मैं लेखों को एकत्र कर उभय विद्वानों को बताता, वे भूलें निकालते, फर मैं मूल लेखों से मिलता, इस प्रकार छः मास में मैंने बम्बई के लेख तो

एकत्र कर लिये और मन में निश्चय किया कि विहार में आनेवाले जैन अजैन सभी धर्मों के लेखों को निष्पक्षपात पूर्वक एकत्र किया जाय। उसी निश्चय का यह फल है। मैंने जहाँ से भी लेख लिये उन स्थानों का उल्लेख निम्न भाग में कर दिया है। संग्रहीत समस्त लेख श्वेताम्बर सम्प्रदाय के ही हैं। यद्यपि २५० से ऊपर दिगम्बर लेखों का भी मैंने संग्रह किया है पर स्थानाभाववशात उनका उपयोग इस संग्रह में नहीं कर सका। श्वेतांवर लेख भी बहुत से छोड़ देने पड़े।

इस संग्रह के अंत में एक *दैनन्दिनी* (डायरी) को मैंने उद्धृत किया है। ऐसी ही छः दैनन्दिनियें मेरे संग्रह में हैं, जिन में ३०० से ऊपर लेख हैं, पर मैं उनका उपयोग दूसरे भाग में करूंगा। परिशिष्टान्तर्गत लेखों में से बहुतों का प्रकाशन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ के द्वारा हो रहा है। वहाँ पर आज वर्णित या उल्लिखित लेख मिलते हैं या नहीं यह तो मैं नहीं कह सकता। परन्तु हमारे तीर्थ-मन्दिरों में प्राचीन सामग्री न मिलने का सबसे बड़ा कारण तो यह है कि हम आज शुष्क सौंदर्य प्रेमी हो गये हैं। संगमरमर के मोह ने हमारी बहुत सी प्राचीन शिल्प सम्पत्ति नष्ट कर दी। यही हाल पालीताने में भी हो चुका है। आज से १६-२० वर्ष पूर्व की बात है। मेरे ज्येष्ठगुरु बन्धु मुनि *श्रीमंगलसागरजी* ने पहाड़ पर जीर्णोद्धार के समय वहाँ के कार्यकर्ता का ध्यान प्राचीनता की रक्षा की ओर आकृष्ट किया था, पर कुछ परिणाम न निकला। हमारी ही असावधानी से हमने बहुत कुछ खोया है और खोते जा रहे हैं।

धातुप्रतिमाओं के लेख लेते समय मैंने अनुभव किया कि दिगंबर मूर्तियाँ श्वेतांबर मन्दिरों में पायी जाती हैं और श्वेताम्बर मूर्तियाँ दिगम्बर मन्दिरों में। इसे संगठन का एक प्रतीक ही समझना चाहिये। उभय सम्प्रदायों में मूर्तिनिर्माण कला में पार्थक्य नहीं है, पर दिगम्बर प्रतिमाओं में मैंने परिकर के अग्रभाग में "*चरण*" और "*शास्त्र*" का प्रतीक देखा है। कुछेक मूर्तियों में *गोमट्टस्वामी* का आकार भी। लेख लेखन शैली में भी थोड़ा सा अन्तर पड़ता है। धातु की प्राचीन प्रतिमाएँ साम्प्रदायिक भेदों से बिलकुल ऊपर उठी हुई वस्तु है। श्वेतांबर समाज के लेखों के कई संग्रह प्रकाशित हुए पर दिगंबर समाज इतिहास विषयक साधनों पर समुचित रूप से ध्यान नहीं दे रहा है। यदि कोई श्वेतांबर भाई लेख लेने की चेष्टा भी करता है तो वह सन्देहात्मक

दृष्टि से देखा जाता है। मुझे इसका अनुभव है। हमारे में वैचारिक उदारता तो बढ़ती जाती है पर सक्रिय औदार्य पनपने नहीं पाता, यही दुर्भाग्य का विषय है।

इस लेखसंग्रह में बम्बई से लगाकर कलकत्ता के बीच में आने वाले मन्दिरस्थित मूर्तियों के लेख हैं जो अद्यावधि अप्रकाशित थे। पुरातत्व संग्रहालयों की मूर्तियोंके लेख अभी प्रकाशन की प्रतीक्षा में हैं।

इस संग्रह को प्रकाश में लाने का पूरा श्रेय तो मेरे परमपूज्य गुरु महाराज उपाध्याय मुनि *श्रीसुखसागरजी* महाराज को है, जिन्होंने जबलपुर-सदर के गोलेच्छा परिवार को उपदेश देकर, इतिहास जैसे शुष्क विषय के साधन को प्रकाश में लाने के लिये आर्थिक सहायतार्थ उत्प्रेरित किया, अतः इस परिवार के, सज्जनता और सौजन्य की मूर्तिसम श्रावक *श्रीसोहनलालजी* गोलेच्छा आदि सब धन्यवाद के पात्र हैं। इसे मूर्त रूप देने और हर प्रकार से सुन्दर बनाने में श्रावक श्रीयुत *जोरावरमलजी* सांड और चन्द्रकान्ता प्रेस के सुयोग्य और सुशील व्यवस्थापक श्री *"नीरज"* जी जैन ने जिस उत्साह आत्मीयता और सजगता का परिचय दिया है, वह प्रशंसनीय है। उन्हें धन्यवाद कैसे दिये जाय ?

जबलपुर के श्रीसंघ के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना भी अनिवार्य ही है जिनके विशेष आग्रह से हम सब को रुकना पड़ा और उसने सब प्रकार के साधनों की समुचित व्यवस्था की।

जैनश्वेतांवर धर्मशाला,
५ सराफाबाजार,
जबलपुर म० प्र०।

मुनि कान्तिसागर,
ता: २७-१२-५०

प्रकाशकीय-

श्रीजिनदत्तसूरि प्राचीन पुस्तकोद्धार-ग्रन्थमाला के महत्वपूर्ण प्रकाशनों से विद्वत्समाज भलीभांति परिचित है। जैन वाङ्मय की विविध शाखाओं के प्रामाणिक ग्रन्थों का प्रकाशन ही इसका एकमात्र ध्येय रहा है। भारतीय संस्कृति, साहित्य, लोकजीवन, और आध्यात्मिक साधना के पुनीत इतिहास पट पर वेधक प्रकाश डालनेवाले प्राकृत, संस्कृत और देश्यभाषा में गुम्फित दर्जनों ग्रन्थों का प्रकाशन विगत वर्षों में हुआ है! इन मूल्यवान एवं प्रेरक ग्रन्थों की प्रशंसा करनेवाले भारतीयविद्वानों में मुनि श्रीजिनविजयजी (संचालक राजस्थान पुरातत्व विभाग और भारतीय विद्या भवन बम्बई), प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य के परममर्मज्ञ डा० ए० एन० उपाध्ये (प्रो० राजाराम कालेज, कोल्हापुर) डा० बनारसीदास जैन (भूतपूर्व प्रो० ओरियंटल कालेज लाहौर) जैन साहित्य के गंभीर अन्वेषक प्रो० एच० डी० वेलणकर, (प्रो० विल्सन कालेज बम्बई) भारतीय विद्या के तलस्पर्शी विवेचक श्री पी० के० गोडे (क्युरेटर भांडारकर ओरियंटलरिसर्च इंस्टिट्यूट पूना) तथा पुरातत्त्व के प्रकाण्ड पंडित डॉ० हँसमुखलालजी सांकलिया (डेक्कन कालेज रिचर्च इन्स्टिटयूट पूना) आदि आदि प्रमुख हैं।

ग्रन्थमाला के मुख्य संचालक और संपादक परमपूज्य स्वर्गीय आचार्य महाराज १००८श्रीजिनकृपाचंद्र सूरीश्वरजी के शिश्यरत्न उपाध्याय पदविभूषित मुनि श्री सुखसागरजी महराज एवं उनके सुयोग्य अन्तेवासी संशोधन प्रिय मुनि श्री मंगलसागरजी महराज हैं, जो मूक रूप से जैन साहित्य और संस्कृति की ठोस सेवा वर्षों से कर रहे हैं।

जैन धातुप्रतिमालेख उपाध्यायजी महाराज के शिष्य मुनिकांतिसागरजी की दीर्घकालीन साधना का फल है। १४ वर्ष की अवस्था से ही आपने इस कार्य को प्रारम्भ कर दिया था। जैनइतिहास के निर्माण में प्रतिमालेखों की उपयोगिता अपना स्थान रखती है। आशा है विद्वान इस संग्राहत्मक कृति का समादर कर हमें एतद्विषयक अन्य ग्रन्थों के प्रकाशन का अवसर देंगे।

इसके प्रकाशन में प्रतापचंदजी धनराजजी के परिवार में से श्रीसंपतलालजी सोहनलालजी की ओर से ४००) श्री मूलचंदजी २००) तथा श्रीयुत रतनचंदजी लालचंदजी की ओर से २००) सौ रुपयों की सहायता कर ज्ञानवृद्धि के निमित्त बने हैं। मैं आपको हार्दिक धन्यवाद देते हुए अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

हमारे सांस्कृतिक प्रकाशन

१ गणधरसार्धशतकां—
आतरगतप्रकरणम्
२ जयतिहुअणवृत्ति;
३ दिवालीकल्पः
४ प्रश्नोत्तरसार्धशतकम्
५ विशेषशतकः
६ संदेहदोलावलीवृत्तिः
७ पंचलिंगिप्रकरणम्
८ चैत्यवंदनकुलकवृतिः(त्तिः)
९ अनुयोगद्वारसूत्रमूलं
१० कल्पद्रुमकलिकाभाषांतरं
११ संवेगरंगशाला
१२ श्रीपालचरित प्राकृत-भाषांतर
१३ द्वादशपर्वव्याख्यानभाषा
१४ जीवविचारादि प्रकरणभाषा
१५ कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका
१६ भक्तामरस्तोत्रटीका
१७ द्वादशकुलकविवरणं
१८ षट्स्थानप्रकरणम्
१९ धन्यशालिभद्रचरित्रम्
२० धन्यचरित्रम्
२१ सामाचारीशतकम्
२२ कल्पसूत्र-कल्पलताऽव्याख्या
२३ प्राकृतव्याकरणं
२४ विधिमार्गप्रपा
२५ सप्तस्मरणटीका
२६ गाथासहस्री
२७ अतिमुक्तकमुनिचरित्रम्
२८ गणधरसार्धशतकवृत्तिः
२९ कल्पद्रुमकलिकाटीका
३० पुण्यसारकथानकम्
३१ पोषधविधिप्रकरणवृत्तिः
३२ चर्चर्यादि ग्रन्थत्रयी
३३ नगरवर्णनात्मक प्राचीन हिंदी
पद्य-संग्रह
३४ संघपट्टकवृत्ति (प्रेस में)

प्राप्ति स्थानः—

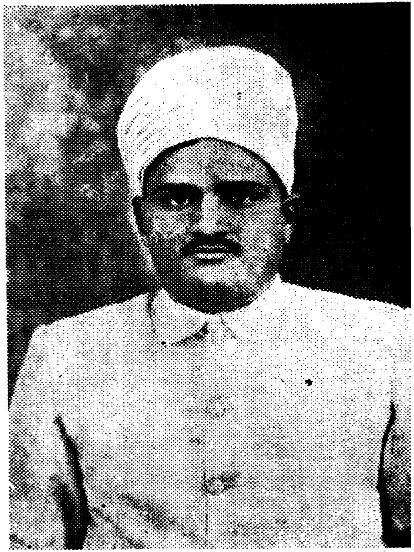
श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार,
शीतलवाड़ी गोपीपुरा, सूरत ।



प्रतापचन्द जी गोलेच्छा



श्री सम्पतलाल जी गोलेच्छा



श्री रतनचन्द जी गोलेच्छा

चित्र परिचय

आपका जन्म जोधपुर राज्य के अंतर्गत फलोदी नगर में सम्वत् १६२६ में हुआ। आपके पिताजी सेठ हंसराजजी ने जबलपुर में करीब १२५ वर्ष पूर्व आकर व्यवसाय की नींव डाली। आज भी सेठ हंसराज बखतावरचंद व सेठ प्रतापचंद धनराज के नाम से फर्म प्रसिद्ध है। सेठ धनराजजी आपके लघुभ्राता थे। आपके श्रीसम्पतलालजी और श्रीमूलचन्दजी, ये दो पुत्र हैं। श्रीसम्पतलालजी ज्येष्ठ पुत्र हैं, जिन्होंने एक कुशल व्यापारी के नाते कटनी में पर्याप्त उन्नति की और यह उन्हीं की व्यवसाय कुशलता है कि 'सम्पतलाल मूलचंद' फर्म कटनी की प्रसिद्ध फर्मों में है। सेठ धनराजजी के दो पुत्र सेठ श्रीरतनचंदजी और श्रीलालचंदजी हैं। बन्धु युगल वक्ता और समाज सेवी है। सदर के सार्वजनिक जीवन में और धार्मिक कार्यों में इनका योग सदैव एकसा रहता है। इस तरह दोनों भ्राताओं का अच्छा बड़ा कुटुम्ब है सबमें पारस्परिक सद्भावना पूर्ण प्रेमभाव अनुकरणीय है। आप में धर्मानुराग तथा वात्सल्य तो कूट कूटकर भरा हुआ था। श्रीसम्पन्न और इतने प्रतिष्ठित होने पर भी आपका जीवन सादगी से भरा था। असहाय लोगों को आप गुप्त रूप से दान देते रहते थे। मारवाड़ व इधर की धार्मिक व सामाजिक संस्थाओं में दान की संख्या आपकी ही ऊंची रहती थी। श्रीजिनेन्द्र का पूजन, साधुभक्ति व स्वधर्मी जनों की सेवामें ही आपका जीवन बीता। आपने सहकुटुम्ब सब जैन तीर्थों की यात्रा की थी।

जिस समय आपने अट्ठाई का व्रत किया, उस समय आप. सदर बाजार में जैन मंदिरजी के न होने से, शहर में जो सदर से २ मील दूर पड़ता है, दर्शन करने के लिये वहाँ जाया करते थे। उसी समय आपके दिल में यह भाव अंकुरित हुआ कि सदर में भी जिन मंदिरजी का होना आवश्यक है। आपकी श्रीगुरुदेव जिनदत्तसूरिजी महाराज पर अटल श्रद्धा थी। आपने उन्हीं का ध्यान किया और इस कार्य में सफल होने की प्रार्थना की। श्रीगुरुदेव का आशीर्वाद उन्हें मिला और सेठसाहब ने उसी समय आगे होकर इस कार्य का सूत्रपात कर दिया। अन्य जैन बन्धुओं की सहायता से सदर में शीघ्र ही

एक बहुत ही सुन्दर और विशाल जिनमंदिर बन गया। जिसमें श्रीशांतिनाथ भगवान की मूर्ति व श्री गुरुदेव जिनदत्तसूरिजी महाराज के चरण पादुका प्रतिष्ठित कराये। आप प्रतिदिन सबेरे सामायिक प्रभु पूजा करते थे तथा शाम को तिथियों के दिन प्रतिक्रमण किया करते थे। प्रभु दर्शन व आरती भी आपका नित्य का कार्य था। व्रत पचखान भी आप रोज करते थे। इस तरह आपका जीवन धर्म मूलक भावनाओं से ओतप्रोत था।

७२ वर्ष की अवस्था में सम्वत् २००१ में आपका स्वर्गवास हुआ। मृत्यु के एक सप्ताह पूर्व आपने सभी कुटुम्बियों आदि से समता पूर्वक क्षमाभाव प्रकट किया एवं धार्मिक ग्रन्थों के श्रवण और अंतिम समय तक पद्मावतीजीवराशि आराधना का भक्ति पूर्वक श्रवण किया। अन्त में काउसग्ग अवस्था में आपने देहत्याग किया।

आपके ज्येष्ठ पुत्र सेठ सम्पतलालजी भी परम धर्मानुरागी हैं। जो सज्जनता और विनम्रता की मूर्ति हैं। कटनी में आपको अच्छी लोकप्रियता प्राप्त है। आपके तीन पुत्र हैं। चि० सोहनलाल, प्रेमचन्द व हेमचन्द। श्री सोहनलाल भीअपने पिता की गुण परंपरा के प्रतीक हैं।

सेठजी के द्वितीय पुत्र सेठ मूलचन्द गोलेच्छा भी बड़े स्वाध्याय प्रेमी व्यक्ति हैं। जबलपुर के सदर बाजार के आप ख्याति प्राप्त व्यापारी हैं। समय समय पर सार्वजनिक कार्यों में आपका सहयोग रहता है तथा आप कई स्थानीय संस्थाओं के पदाधिकारी हैं।

श्रीमूलचन्दजी के दो पुत्र हैं, इन पंक्तियों का लेखक और चि० ज्ञानचन्द।

यहां सेठ साहिब का परिचय कराने का हमारा यही अभिप्राय है कि ऐसे ही आदर्श पुरुष जिनमें सांसारिक संस्कार प्रसंगतः आते हैं और उचित पोषण भी पाते हैं; पर धार्मिक संस्कार जन्मतः साथ हैं तथा उनकी सरल धार्मिक वृत्ति के फलस्वरूप सदा बढ़ते रहते हैं। अपने आसपास का वातावरण शुद्ध सांस्कृतिक बनाकर अपना और दूसरों का कल्याण करने में सफल होते है।

—*जीवनचंद गोलेच्छा बी. ए.*

परमपूज्य ज्येष्ठगुरुबन्धु मुनि श्रीमंगलसागरजी महाराज

—जिन्होंने मेरे जीवन की दिशा स्थिर की—

के करकमलों में सादर

—मुनि कान्तिसागर

॥ श्री स्थंभन-पार्श्वनाथाय नमः ॥

जैन धातु-प्रतिमा लेख

(१)

सम्वत् १०८०......गृह्यप्रतिमा स्थापिता।

(२)

ऋषभनाथप्रतिमाऽयं मूलनायक सम्वत् १०८३ वै० सु० १५ ॥

---

१. गोड़ीजी मंदिर पायधुनि बंबई

२. खरतरगच्छीय जैन मंदिर १३९ कोटन स्ट्रीट कलकत्ता।

(३)

सम्वत् ११६४ माघ शुदि १४ पद्मप्रभ सुत...... ।

(४)

सम्वत् ११९६ जेठ सुदि १३ शुक्रे नामऽदे...चालापि करापितं ।

(५)

सम्वत् ११९६ वैशाख सु० १० *भाडवाचार्यगच्छिय*(गच्छीय) साध..लाडि पुत्र नमिकुमारेण नि० (बिम्बं) कारितः ।

(६)

सम्वत् १२१० आषाढ़ शुद ९ सोमे श्री सोडएक० जेहल राजिमतिम्यां......मित्र प्रतिमा कारिता ।

(७)

सम्वत् १२२४ वैं० वदि ९ ....श्रीपार्श्वनाथमूर्ति-कारितं.........द्र *सूरिभिः* ।

(८)

सम्वत् १२२५ वैषाख शुदि २ बुधे चतंगकीय साहेप सुत प्रान्त (?) श्रावकेण मु० श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा कारिता ।...... *पूर्णभद्रसूरिणां* ।

---

३. निज दैनन्दिनी से

४. खरतरगच्छीय प्राचीन जैन मंदिर अमरावती

५. जैन मंदिर भीवंड़ी

६. शिखरजी के मुख्य मंदिर में मधुवन

७. गोड़ीजी मंदिर पायधुनि बंबई

८. शिखरजी के मुख्य मंदिर में

(९)

सम्वत् १२३३ ठ० श्री० मा० वहा नेमिकुमारेण भार्या रतनी श्रेयसे नमिजिनः (बिम्बं कारितं)।

(१०)

सम्वत् १२३८......सुदि २......।

(११)

सम्वत् १२५९ वैषाख शुदि ३ बुधे से (? श्रे०) जेहई सुत सा० बहुदेव......रभंद्राभ्यां मातृराज श्री (? श्रे)योर्थं श्रीपार्श्वनाथप्रतिमा कारितं प्रतिष्ठितं *देवेंदसूरिभिः*।

(१२)

सम्वत् १०२७९ वैशाख सुदि ३ प्रतिपालवंशीय श्रे० सिंधू सु महं कीलराजेन प्रतिमाकारिता प्रतिष्ठिता *श्रीधर्मघोषसूरिभिः*......।

(१३)

सम्वत् १२८६ (वर्षे) वै० सुद ५ शुक्र श्री *सरपुनवास्तव्यः श्रीमालज्ञातीय* श्रे० लाखू सावकुमार भार्या...दे० सयार्थं (श्रेयार्थं) *संखीसर(शंखेश्वर)*वर्ति श्रीपार्श्वनाथबिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं *श्रीसरवालगच्छे श्रीवर्द्धमानसूरि* शिष्य *श्रीजिनेश्वरसूरिभिः*।

---

९. जैन मंदिर भीवड़ी

१०. आदिनाथ मंदिर पायधुनि, बंबई

११. निज दैनंदनी से

१२. जैन मंदिर लालबाग, बम्बई

१३. जैन मन्दिर, हींगनघाट (म. प्र.)

(१४)

सम्वत् १२६८ वर्षे ज्ये० शुदि १३ सोम *कोरंटगच्छे* श्रे० लिखा ,सु० पांसारणा पुत्र महुदेव सहितेन प्रतिमाकरिता प्रतिष्ठिता *श्रीकक्कसूरिभिः* ।

(१५)

सम्वत् १३००......*कक्कसूरिभिः* ।

(१६)

सम्वत् १३१६ वर्षे वैषाख सु० ६ रवौ *श्रीमालज्ञा०* पाल्हा भा (०) पाल्हणोद वितठल्हदे (?) श्रेयसे सुत........श्रीशांतिनाथबिंब-कारितं चन्द्र*सूरीणामु*पदेशेन प्र० स० ।

(१७)

सम्वत् १३३६ वं..... सोनी जागा पुत्र हंसा......कोल्हण श्रेयसे कारितं ।

(१८)

सम्वत् १३४६ चैत्र सुदि १ भोमे पित्तकुठार (? ठाकुर) सिह श्रेयसे सुत सांगाकेत(न) श्रीशांतिनाथ(बिंब) कारितं प्रतिष्ठितः *यशोभद्रसूरि* शिष्य *बिबुधप्रभसूरिभिः*

१४. शांतिनाथ जैन मन्दिर भींडी बाजार बंबई
१५. आदिनाथ जैन मन्दिर भायखला बम्बई
१६. जैन मन्दिर हींगनघाट म. प्र.
१७. जैन मन्दिर तपागच्छीय) बालापुर (बरार)
१८. जैन मन्दिर (तपागच्छीय) बालापुर (बरार)

(१९)

सम्वत् १३४९ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १४ बुधे *प्राग्वाट जा(ज्ञाति)* महं सादा सुत महं राजा श्रेयसे सुत महं भालदेव कारितं प्रतिष्ठितंच श्री-आदिनाथबिम्बं......। (नाम मिटा दिया है)।

(२०)

सम्वत् १३५३ माघ वदि १ श्री शांतिनाथ प्रति० श्री*जिनचन्द्र-सूरिभिः* प्रतिष्ठिता च सा० हेमचन्द्र भा० रतन सुत श्रावकाभ्यां देव (?) लक्ष्मी श्रेयोर्थं।

(२१)

श्री प्रश्न व० १३६८......तिहूअणपाल भार्या रूपल सहिता... पित्रो श्रेयार्थं श्री *आनन्दसूरि श्रीहेमप्रभसूरिभिः बृहत्गच्छेः*।

(२२)

सम्वत् १३६२ (वर्षे) वै० सु० ६ धणसिंह भार्या डाम्बीकेन पिता महं धणसिंह श्रेयार्थं *श्रीसागरचन्द्रसूरि*रूपदेशान कारितं।

(२३)

सम्वत १३६९ फागुण शुदि ९ सोमे श्रे० भूणपाल भा० सुहिवदे पुत्र श्री आदिनाथबिंबं कारितं प्र० *चित्रगच्छे अजितदेवसूरिभिः*।

---

१९. निजदैनंदिनी से

२०. बड़ा मन्दिर नागपुर

२१. ... ...

२२ अनन्तनाथ जैन मन्दिर काथा बाजार बंबई

२३. प्राचीन जैन मन्दिर लालबाग बंबई

(२४)

श्री प्रश्न वा० १३६६......तिहूअरणपालः भार्या रूपल सहिता ...पित्रोः श्रेयार्थं *श्रीआणंदसूरि श्रीहेमप्रभसूरिभिः* बृहद्गच्छेः।

(२५)

सम्वत् १३६९ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ शुक्रे पितृ महं वयजल मातृ सहजसदे श्रेयार्थं सामतं...ऽ सिंह प्रभृति पुत्रैः ह० साल्हा शांतिनाथबिम्बं कारापितं प्रतिष्ठापितं च ॥ श्री ॥

(२६)

सम्वत् १३७३ वर्षे वैषाख सुदि १२ *श्रीश्रीमालज्ञा०* भ्रातृ देवसी श्रेयसे...श्रीपार्श्व...प्र. *गुणाकरसूरि*...।

(२७)

सम्वत् १३७५ *प्राग्वाटज्ञातीय* श्रे० आमडं...द्र भार्या रत्नादेवि (? वी) पुत्र सहजा देपाल...श्रीशान्तिनाथ...का० *हेमप्रभसूरिभिः* ॥ प्र० भर्दडहिया।

(२८)

सम्वत् १३७६ वर्षे अषाढ़ सुदि...गुरौ श्री नाण......काष्ट कर्मसींह भा० रूपदे पुत्र अभयपाल श्रेयसे भ्रातृ रावरोन श्रीपार्श्व० का० प्र० *सिद्धसेनसूरिभिः*।

२४. जैन श्वे० मंदिर नागपुर (म. प्र)
२५. प्राचीन जैन मन्दिर लालबाग बंबई
२६. जैन मन्दिर आर्वी
२७. गोड़ीजी मन्दिर पायधुनि बंबई
२८.

(२९)

सम्वत् १३८१ माघ वदि १ चन्द्रे श्रावण वीहणसुत जानकेन पितु श्रेयसे श्री शान्तिनाथ (बिंबं कारितं) प्रति श्री *श्रीतिलकसूरिभिः* ।

(३०)

१३६१ . ...चन्द्रसहिते आत्मश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीजिनदेवसूरिः* ।

यह प्रतिमा पुरानी है, मनोहर है। प्रतिष्ठित आचार्य का नाम आधुनिक लिपि में है।

(३१)

सम्वत् १३९४ वर्षे वै० सु० ९ *पल्लीवाल* ज्ञा० धीणा भा० रासल सुत तेजड़ पितृ निमित्तं श्रीपाश्वबिंबं का प्र० कठईया *श्रीहरिभद्रसूरिभिः* ।

(३२)

सम्वत् १३९४ व० वैसाख वदि ६ शनौ *श्रीश्रीमाल*जातीय खूजा भार्या मुहणदे भा० मैइलिक......शांतिनाथ वि० प्र०........ *रत्नाकरसूरीणामुपदेशेन* ।

(३३)

सम्वत् १४०० वर्षे वाय...अर्जुन साभः...पुत्र देडसींहेन पित्रोः श्रेयसे श्रीमहावीर(बिंबं) का *श्रीगुणचंदसरीणामुपदेशेन* प्र० *श्रीसूरिभिः* ।

२९. प्राचीन मन्दिर धनज (अमरावती)

३०. निज दैनन्दिनी से

३१. जैन मन्दिर मुलुद बंबई

३२. जैन मन्दिर (ब्रह्मचर्याश्रम) चांदवड (नासिक)

३३. प्राचीन जैन मन्दिर लालबाग बंबई

(३४)

सम्वत् १४०३ वर्षे वैषाख शुदि पूजकरा (?) *ज्ञातीय साह*...... पूत पालात्मज सा० सदाकेन आत्मश्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रति *श्रीऊकेशगच्छे श्रीकक्कसूरिभिः।*

(३५)

सम्वत् १४०४ वैषाख वदि १३ *श्रीमालज्ञातीय* श्रे० सामा भा० रत्ना श्रेयसे सुत नडलिकेन श्रीचन्द्रप्रभबिंबं कारितं प्र० श्री-*नाणचन्द्रसूरिभिः।*

(३६)

सम्वत् १४०५ वर्षे वषाख सुदि ३ *श्रीउपकेशगच्छे तातहडगोत्रे* सा धरणा...भार्या ब्रह्मादे तहापुत्र संघ सा० चाजूकेन सकुटुम्बेन श्रीऋषभ(नाथ)बिंबं का० प्र० *ककुदाचार्यसंताने* कक्कसूरिभिः।

(३७)

सम्वत् १४१० वर्षे आषाढ़ वदि १३ दिने वपुडाणा गोत्रे कुंडिल सुत देवराज ज्ञानपु०.. पद्मराजयुतेन स्वश्रेयसे श्री......बिम्बं कारितं *श्रीसर्व्वानंदसूरिभिः।*

३४. गोड़ी पार्श्वनाथ मन्दिर पायधुनि बंबई

३५. प्राचीन जैन मन्दिर लालबाग बंबई

३६. नेमिनाथ जैन मन्दिर भींडीबाजार बबई

३७. खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता

(३८)

सम्वत् १४२१ वैषाख वदि ५ महंलू ..रूपा श्रे० प्रकृतिगोत्रे श्रे० महं......सोमलाखण सुत गोहाभ्यां श्रीमहावोरबिम्बं कारितं *श्रीधर्मतिलकसूरीणा* प्र० श्री० ।

(३९)

सम्वत् १४२२ वैषाख वदि ११ *उपकेशज्ञातीय*.... भा० कपूरदे पुत्र ४ जगसिंह......श्रीपार्श्वपंचतीर्थी कारिता *बृहद्गच्छे महिंदसूरिभिः* ।

(४०)

सम्वत् १४२३ वर्षे फाल्गुन शुदि २ *प्राग्वाटज्ञातीय* सा० टाठा भा०...तत्पुत्र आल्हाकेन पितृ मातृश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारापितं ......कीय *विनयचन्द्रसूरि वीरसिंहसूरिभिः* ।

(४१)

सम्वत् १४२३ वर्षे फा० सु० ९ श्री*श्रीमालज्ञातीय* पितृ राणा भा० रानादे पुत्र मेगल-प्रधाभ्यां श्रीवासुपूज्यबिंब (बिंबं कारितं श्री-*रत्नशेखरसूरीणामुप०* प्रतिष्ठितं *श्रीसूरिभिः* ।

(४२)

सम्वत् १४२३ वर्षे फा० सु० ९ सोमे...ज्ञातीय पिता टा हमा ठा० पिता...महा...श्रीशांतिनाथ बि०का० *श्रीहेमरत्नसूरिभिः नागेन्द्रगच्छे* ।

---

३८. प्राचीन जैनमन्दिर लालबाग बंबई
३९. प्राचीन जैनमन्दिर नासिक
४०. शांतिनाथ जैनमन्दिर कोट बंबई
४१. चिंतामणि पार्श्वनाथ मन्दिर गुलालवाड़ी बम्बई
४२. जैनमन्दिर पिपलगांव (नासिक)

(४३)

सम्वत् १४२७ वर्षे ज्ये० शु० १५ गुरौ प्राग्वाटजातीय आगमिव वा० डूगर भार्या किल्हणदे सुत सांगा......श्रीमहावीरपंचतीर्थी (का) प्रतिष्ठितं।

(४४)

सम्वत् १४३२ वर्षे फागुण शुद २ उपकेशज्ञातीय...साह वीरा भार्या लखमादे पुत्र मामाकेन लघुभ्रातृनिमित्त श्रीपार्श्वबिंब का० प्र० बाकड़ा (जा) वालगच्छे धर्मसूरिभिः।

(४५)

सम्वत् १४३१ वर्षे फाल्गुन शुदि २ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय कान्हा भा० माणिकदे...केन मातृपितृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारित प्र० श्रीलक्ष्मीतिलकसूरिभिः।

(४६)

संवत्...१४३४ वर्षे ज्येष्ठ वदि २ गुरौ वरहुडियागोत्र सा० भोजदेव पुत्र.........भार्या सरस्वती श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं। इन्द्र(दे)वाचार्य श्री...सूरिभिः॥

(४७)

सं० १४३५ महावदि १३ श्रीमालज्ञा०..... परास्हो श्रेयसे भ्रात(तृ)जानिकेन श्रीपार्श्वनाथपंचतीर्थी कारि० श्रीनरप्रभसूरिणामुप० प्र० श्रीसूरिभिः।

४४. शांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बंबई
४५. प्राचीन जैनमन्दिर लालबाग बंबई
४३. शांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बंबई
४६. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तूलापट्टी कलकत्ता
४७. गोडीपार्श्वनाथ का मंदिर पायधुनि बंबई

(४८)

संवत् १४३५ वर्षे वैषाख शुदि १३ सा० दोदा सुत महीपाल श्रेयोर्थं पंचतीर्थी बिंबं कारितं सा० पद्माकेन प्रतिष्ठितं *श्रीजिनराजसूरि* (भिः) श्रेयोभवतु ।

(४९)

संवत् १४१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ शनौ श्रीआंजलिषेन काछा पत्नी वील्हणदे पुत्र लखमसिंहश्रावकेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीसूरिभिः* ।

(५०)

संवत् १४४० वर्षे वैषाख शुदि ३ सकालूकेन पितृव्य घेला श्रेयसे शांतिनाथ(बिंबं) कारितं प्रति० *मलधारि श्रीराजशेखरसूरिभिः* ।

(५१)

संवत् १४४१ वर्षे फाल्गुण शुदि १ शनौ *श्रीश्रीमालज्ञातीय* आदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *नागेन्द्र श्रीगुणाकरसूरिभिः* ।

(५२)

संवत् १४४९ आषाढ़ शुदि २ गुरौ श्रीअंचलगच्छे *ऊकेशवंशे* गोखरुगोत्रे सा० शल्हण भार्या तिहुअणसिरी पुत्र सा० नागराजेन स्वपितुः श्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च *श्रीसूरिभिः* ॥

४८. दि. जै. म. सिंदी

४९. दिगम्बर जैनमंदिर नांदगांव (अमरावती)

५०. शांतिनाथ जैनमंदिर कोट बंबई

५१. शांतिनाथ जैन मंदिर कोट बंबई

५२. बड़ा जैनमंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

(५३)

संवत् १४५२ वर्षे वैषाख वदि १ श्रीश्री*माल* ज्ञा० भा० जान्हा भा० जल्हदे सुत वीकम भा० पनर्णी सु० सांडू भा० पूंजी तथा पितृव्य वांगाक वाहणदे भा० भावाकेन श्रीशांतिनाथमुख्यचतुर्वींशति पट्टकारितं श्री पू० *हरिसेणसूरिपट्टे धनप्रभसूरीणामुपदेशेन* का० प्र० श्री*सूरिभिः "पेथड़ समस्त पूर्वज श्रेयसे"*।

(५४)

संवत् १४५३ वैषाख शुदि ५ *गाँधीगोत्रे* मं० नानापुत्र सा०··· भार्या अमरादे श्रे० बिंबं का. प्र. नल······*मतिसागरसूरिभिः*।

(५५)

संवत् १४५४ व. वैषाख वदि ११ रवौ श्रीश्री*मालज्ञातीय* पितृ-म० छाड़ा मातृ आहिवदेवि म० वद्राग सर्वगोत्रिणां श्रे० म. पांचाकेन श्रीचन्द्रप्रभपंचतीर्थी का० *पिपलाचार्य-श्रीगुणसमुद्रसूरीणापट्टे श्रीशांति-सूरिभिः*।

(५६)

संवत् १४५४ वर्षे महाशुद्धि ९ शनौ मा·····गच्छे श्रीश्री*माल-ज्ञातीय*······आदि पंच···का. प्र. *विजयसिंहसूरिभिः*।

५३. जैनमंदिर कारंजा (अकोला)

५४. शांतिनाथ जैनमंदिर कोट बंबई

५५. चिंतामणि पार्श्वनाथ जैनमन्दिर गुलालवाडी बंबई

५६. महावीरस्वामी जैनमंदिर पायधुनि बंबई

(५७)

संवत् १४५४ वर्षे वैशाख वदि १० रवौ महं कडूआ सुत वीठाकेन ीअम्बकागोत्र कारापितं।

(५८)

संवत् १४५८ जे. शु. गोत्र खइरज हूँबडजातीय श्रे० धारणा भा० ाईमल सु० सामनसी भा० साहवा सुत खेतलआत्मश्रेयसे शांतिनाथ बिंबं) प्र. श्रीसूरिभिः।

(५९)

संवत् १४५९ चैत्र वदि १ शनौ प्राग्वाटज्ञातौ श्रे० वीरा० भा० ीहणदे सु० भाडलेन भा० पोमादेसहि (तेन) श्रीसुमति (नाथ) बिम्बं का० ० जीरापल्लीयगच्छे श्रीशालिभद्रसूरिभिः।

(६०)

संवत् १४५९ ज्येष्ठ वदि १२ शनौ सूराणागोत्रे सा० अमर ार्या अहूवहदे सुता सा० तोदासाल्हाभ्यां आत्मश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ-बिंबं का. प्र. धर्मघोषग० भ० मलयचंदसूरिभिः।

(६१)

संवत् १४५९ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ शनौ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे. रवना भार्या लाछलदे पुत्र सांगाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं प्र. श्री······।

५७. लोंकागच्छीय जैनमंदिर बालापुर (अकोला
५८. आदिनाथ जनमंदिर भायखला बंबई
५९. लोंकागच्छीय जैनमंदिर बालापुर (अकोला)
६०. लोंकागच्छीय जैनमंदिर बालापुर (अकोला)
६१. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

(६२)

संवत् १४५९ वर्षे मासे चैत्र वदि १ *उवएसज्ञातीय* व्य० देवराज भार्या जस्मादे पुत्र वूस भा० फूलदेसहितेन पित्रोमातृश्रेयसे श्रीपद्मप्रभबिम्बं कारितं प्र० *ब्रह्माणगच्छे. उदयाणंदसूरिभिः*।

(६३)

संवत् १४५९ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ शनौ *प्राग्वाट*ज्ञातीय श्रे० खना भार्या लाछलदे पुत्र सांगाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं प्र० श्री।

(६४)

संवत् १४६१ ज्येष्ठ शु. १० *उपकेशज्ञातीय* गांधीकशाखायां सुदितित (?) गोत्रे श्रे० सहदेव भा० सहजलदे. पुत्र आंबकिन श्रीशांति-(नाथ)बिम्ब का० प्र० *उकेशगच्छे ककूदाचार्य*संताने भ० श्री *देवगुप्तसूरिभिः*।

(६५)

संवत् १४६३ वर्षे आषाढ़ शु० १० शुक्रे *प्राग्वाट-ज्ञातीय* स० साम (।) सामलादे पुत्र माडलेन भार्या लाखू······दाग महितेन श्रीपार्श्वनाथबिम्बं का० प्र०······रत्नपूरीय श्री*सोमदेवसूरि* पट्टे श्री*धणचन्दसूरिभिः*।

६२. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

६३. निज दैनन्दिनी से

६४. निज दैनन्दिनी से

६५. शांतिनाथ जैनमंदिर कोट बंबई

(६६)

संवत् १४६५ वर्षे का० व० ५ गुरौ स० उदेसिंह भा० उत्तमदे ुत वणा भा० वीभलदे श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथबिम्बं कारितां श्री-ल्लीगच्छे श्रीशांतिसूरिपट्टे श्रीसूरिभिः (मस्तक पीछे "उसवाल ज्ञाति" ।

(६७)

संवत् १४६८ वर्षे वैशाख वदि ३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० .पाल भार्या बोभलदे सुत मांभाकेन भार्या सहमूसहितेन पितृ-मातृ ायसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्र० पूर्णिमापक्षीय श्रीविद्याशेखरसूरिभिः ।

(६८)

संवत् १४६८ वर्षे कार्तिक वदि २ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय भ० ाज भाया बाई गामी तयोः सुत ····· श्रीसुविधिनाथबिंबं कारापितं ातुः श्रेयोर्थम् प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।

(६९)

संवत् १४९३ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ रवौ श्रीप्राग्वाटज्ञातीय सा० ाल्हा बा० गडरदे तयोः सुताः सा० हेमा, देवसी, पूना, हेमाकेन ामातृश्रेयार्थं शांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे ोमसुन्दरसूरिपादे ।

६६. जैनमंदिर भांदक
६७. जैनमंदिर चांदवड (नासिक)
६८. जैनमंदिर मनमाड़ (नासिक)
६९. अनन्तनाथ जैनमंदिर काथा बाजार बम्बई ।

(७०)

सम्वत् १४७३ वर्षे माघ सुदि पांचम (?मी) दिने *थलपूरीयगोत्रे* सा० गाजा पुत्र सा० मोड़ा······देवाम्म श्रे० श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० *धर्मघोषगच्छे श्रीरत्नसागरसूरिभिः* ।

(७१)

सम्वत् १४७८ वर्षे वैशाख सुदि ६ दिने *प्राग्वाटजातीय* प० अता भार्या सरसइ सु० श्रे० लींबा भा० लखमादेउवइ श्रे० वेलायां पागोनराघो (?) देवड़देनामः देव भा० देवड़दे एतैर्विद्यमान निज-मातृ श्रीश्रेयांस (नाथ)बिंबं कारितं *श्रीसोमसुन्दरसूरिभिः* प्रतिष्ठितं ।

(७२)

सम्वत् १४७८ वर्षे वै० शु० ६ दिने *प्राग्वाटजातीय* सा० अता सु० श्रे० माडण भार्या माणिकदे महगलदे सुत डूंगर भा......डूंगरेण श्रेयसे सुविधिनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठित *तपागच्छे हेमसुन्दरसूरिभिः* ।

(७३)

सम्वत् १४७५ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ रवौ दिने श्रे० राणा भार्या मद्य सुत ठ० नगकेन स्वभगिनीश्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीमत्तपागच्छमंडन श्रीसोमसुन्दरसूरिभिः* ।

७०. आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई

७१. महावीरस्वामी जैनमन्दिर पायधुनि बम्बई

७२. गोड़ीजी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बम्बई

७३. खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तूलापट्टी कलकत्ता

(७४)

स्वतिश्रीजयाभ्युदय सम्वत् १४८० वर्षे वैषाख वदि ७ शुक्रे ोमालज्ञातीय स्तम्भतीर्थवास्तव्य संघपति माणिक्य भार्या स० वारूनाया त्र स० सीघाकेन जीवतस्वामि श्रीआदिनाथबिंबं कारापितं प्रति० श्री···।

(७५)

सम्वत् १४८१ वर्षे वैषाख वदि १२ रवौ उप० ज्ञा० श्रे० सोल्हा भा० सीती पुत्र चांपाकेन भा० ल्ह......सहितेन आत्मश्रेयसे पद्मप्रभबिंबं का० प्र० ब्रह्माणीयगच्छे उदयप्रभसूरिभिः।

(७६)

सम्वन् १४८३ (वर्षे) वैषाख सु० २ सोमे श्रीमालज्ञातीय श्रे० डुंगर भा० बा० जइती पुत्र द०......धर्माकेन पिता महपितृ श्र० श्रीशीतलनाथबिम्बं का प्र० त्रिभवीटा श्रीधर्मशेखरसूरिभिः।

(७७)

सम्वत् १४८५ वर्षे वै० सुद ६ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ प्रान्ता मातृ अणपमादेविश्रेयार्थं सुत जेसाग ऋषिताभ्यां श्रीशांति-ाथबिंबं कारापितं श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० धिना ॥६॥

७४. जैनमन्दिर (चांदवाकर गली) नासिक

७५. जैन मन्दिर (गांव का) चांदवड़ (नासिक)

७६. शांतिनाथ जैनमन्दिर कोट बम्बई

७७. महावीर जैनविद्यालय बम्बई

(७८)

सम्वत् १४८७ वर्षे······ ······त्रम··················· ज्ञातीय सा० काश्यपगोत्रे···············भार्या सोभा··············· शीतलनाथबिम्बं प्रति······

(७९)

सम्वत् १४८८ माघ वदि २ शुक्रे *श्रीवायडजातीय* श्रे० लींबा भा० चांपलदे सुत सूराकेन भा० सूहवदेसहितेन माताश्रेयसे अजितनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीबृहत्तपगच्छे श्रीजयशेखरसूरिभिः* ।

(८०)

सम्वत् १४८९ वर्षे माघ वदि २ शुक्रे *श्रीब्रह्माणगच्छे* श्रीअरिवृतेभि गो० श्रीश्रीमा...व गोश्रा भा० वलादे सुत परमा भा० का‍उ सुत जीवण मुहण सोवछाभिः पित्रोश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं *श्रीपजनसूरिभिः* ।

(८१)

सम्वत् १४९२ वर्षे वैषाख सुदि ५ *कडारागोत्रे* सा० सोना पु० वीसल भा० वील्हणदे पु० घणसिंह भा···हेउस० पितृव्य त्रिमूठ पुण्यार्थं श्रीशीतलबिंबं का० प्र० *श्रीसंडेरगच्छे श्रीशांतिसूरिभिः* ।

(८२)

सम्वत् १४९२ वर्षे श्रीआदिनाथबिंबं प्रति० *खरतरगणे श्रीजिनभद्रसूरिभिः* कारितं *कांकरिया* सा सोहड भार्या हीरादेवी श्राविकया

७८. शांतिनाथ जैनमन्दिर दादर बम्बई
७९. महावीरस्वामी जैनमन्दिर पायधुनि बम्बई
८०. प्राचीन जैन मन्दिर अमरावती
८१. जैन मन्दिर (गांवका) चाँदवड (नासिक)
८२. गोडीजी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बंबई

(८३)

सम्वत् १४९३ ज्ये० शुदि १० *प्राग्वाट* प० अभयसी भा० सलखणदे पुत्र हेमा भा० मही पुत्र प० पाताकेन भा० अवू सुत नाथादि कुटुम्बयुतेन स्वमातृपितृश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री*सूरिभिः*

(८४)

सम्वत् १४९५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे ३ ज्ञा० *पूर्णिमापक्षे* काश्यपगोत्रे सा० उदा भा० का ऊ पु० कूपाकेन भा० रूपिणि भ्रातृ प्र० भोजासहितेन मातृपितृस्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिम्बं का० प्र० श्री *सूरिभिः* ।

(८५)

सम्वत् १४९५ वर्षे ज्ये० सुदि १४ बुधे उ० ज्ञा० *पूर्णिमापक्षे* काश्यप गो० सा० उदा भार्या क उ पु० कूपाकेन भा० रूपिणि भ्रातृ-पु० भोजासहितेन मातृपितृस्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं क० प्र० श्रीसर्व*सूरिभिः*

(८६)

सम्वत् १४९६ वर्षे फागुण सुदि २ शुक्रे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* मं० कडूया भार्या गडरी पुत्र श्र पर्वतेन भा० अमरीयुतेन *श्रीअंचलगच्छेश* *श्रीश्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशेन* स्वमातृश्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीरत्नसिंहसूरिभिः* ।

८३ महावीर स्वामी जैनमन्दिर पायधुनि बंबई

८४. जैनमन्दिर कारंजा

८५.

८६. गोडीजी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बंबई

(८७)

॥ॐ॥ सम्वत् १४९६ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० कर्मसी भार्या मटकू सुत गुणीआकेन श्रीसकुलश्रेयसे कुन्थुनाथ-बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीवृद्धतपापक्षे* भ० *श्रीज्ञानकलसमूरिपट्टे श्रीविजयतिलकसूरिभिः* ॥ श्रीः ॥

(८८

सम्वत् १४९८ वर्षे फा० सुदि ५ गुरौ श्रीउकेशवंशे वडालिया (?) वरडिया) गोत्रीय सा भीमसिंह सुतं सयामन .....सोमदत्त सहितन तेन श्रीशांतिनाथबिंबं का० प्र० *श्रीजिन००न्द्रसूरिभि.खरतरगच्छे*।

(८९)

सम्वत् १४९९ व० वै० वदि १ शनौ *ओसवालज्ञातौ* सा० गोइंद भा० राजलदे सुते नभो० उलसन (?) पितो श्रे० श्रीआदिनाथ-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *उकेशगच्छे श्रीदेवगुप्तसूरिभिः*।

(९०)

संवत् १४९९ फागुण वदि ३ गुरौ *उपकेशज्ञातीय* वरहड़ी सा० पितृश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं का० प्र० *रत्नप्रभसूरिभिः*।

(९१)

संवत् १४९९ फागुण वदि ६ *प्राग्वाटवशे कासप* (कश्यप)गोत्रे *सिद्धपुरवास्तव्यः* म० परबत भा० मेठू सुत समधरेण भा० अमूक मातृज मूलराज केशवसहितेनश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबंकारितं प्रतिष्ठितं *बृहत्तपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः*।

८७. सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन
८८. जैनमन्दिर शाहपुर (थाना)
८९. शांतिनाथ जैनमन्दिर कोट बंबई
९०. गोडी पार्श्वनाथ जैनमंदिर पायधुनि बंबई
९१. गोडी पार्श्वनाथ जैनमंदिर पायधुनि बंबई

(९२)

स्वस्ति संवत् १४ गु० १ वर्षे फागुण शुदि १२ बुधे श्रीमान् *महरोल*गोत्रे सा० लष (? ख) मण भाया ईदा सुत सं० षि (? खि) मराजेन सं० महादेवे श्रीअजितनाथबिंबं प्र० श्री*विजयप्रभसूरि* ।

(९३)

संवत् १.०......व० माघ शुदि १० शनौ ऊके*शवंशे* घुल्लगोत्रे सा० सांडा० भा० करणूपुत्र सा० जिनन्द्रतेन सं० जगमाल साधु जीवा सा० जोग प्रमुखपरिवारयुतेन स्वभार्याश्राविकालखमादे पुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं कारापि श्री*खरतरगच्छे* श्री*जिनवर्द्धन सूरिभिः*पट्टे श्री*जिनचन्द्रसूरि*पट्टेशः श्री*जिनसागरसूरिभिः* प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(९४)

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ़ शुदि २ *प्राग्वाट* ज्ञा० व्य० उगम भार्या गुरी सुत धर्माकेन भार्या लींबीयुतेन स्वभ्रातृदेवाश्रेयार्थं श्रीआदिनाथ-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *तपागच्छे* श्री*मुनिसुन्दरसूरिभिः* ॥ श्री*महीगल वास्तव्यः* ।

(९५)

संवत् १५०१ वर्षे कार्तिक शुदि १५ उकेश*वंशे जाणेजा गोत्रे* सा० देवसी पुत्र विसुआ भा० वईजलदे पुत्र मनाकेन माहिम जगल्ला सहितेन आत्मार्थे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री*पल्लिवी* (*वाल*) *गच्छे* श्रीशांतिसूरिपट्टे श्री*यशोदेवसूरिभिः* ।

९२. खरतरगच्छीय बड़ामंदिर तूलापट्टी कलकत्ता ।

३. तपागच्छीय जैनमंदिर बालापुर

९४. चन्द्रप्रभजैनमंदिर सेंडहर्स्ट रोड बंबई

९५. शांतिनाथ जैनमंदिर भींडीबाजार बंबई

(९६)

संवत् १५०१ जे० शु० १०.. देपा भार्या देल्हणदे पुत्री हांसू श्राविकयाश्रेयोर्थं श्रीअभिनन्दनबिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीसोम सुन्दरसूरि (सोमसुन्दरसूरि) मुनिसुन्दरसूरिभिः ।

(९७)

संवत् १५०१ वर्षे माघ शुदि ६ गुरौ ऊ० पालडेचागोत्रे साह नील्हा भा०तारादे पुत्र धमा भार्या नायकदे पुत्र कुन्भ देपाल सहि० आत्म श्रे० श्रीशीतलनाथबिं० का० प्र० बडा श्रीनायकचन्द्रसूरिभिः ।

(९८)

संवत् १५०३ पोषे शु० प्राग्वाटज्ञातीय व्य० वरश्यंग भार्या भरमादे सुत बदरू श्रावकेन भार्या माधू सुत जगा श्रेयार्थं श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्रीजयचन्द्रसूरिभिः । सांडरवास्तव्य ।

(९९)

संवत् १५०३ वर्षे माघ शुदि १४ सोमे कुमारदेव्या सुपुण्याय श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं श्रीजाल्लोधरगच्छे भद्ररत्नसूरि माणिकसूरिभिः शिष्यैः प्रतिष्ठितं ।

(१००)

संवत् १५०४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ९ रवौ श्रीकोरंटगच्छे उपकेशज्ञातीय साह सालिंग भार्या मूलयरि पुत्र चांपाकेन भार्या धर्मिणसहितेन पितृमातृनिमित्तं महावीरबिंबं कारितं प्र० भावदेवसूरिभिः ।

९६. जैनमंदिर इतवारी नागपुर
९७. शांतिनाथ जैनमंदिर दादर बंबई
९८. लोंकागच्छीय जैनमन्दिर बालापुर
९९. अनन्तनाथ जैनमन्दिर काथाबाजार बंबई
१००. लोंकागच्छीय जैनमन्दिर बालापुर

(१०१)

संवत् १५०४ वर्षे मा० व० २ *सिद्धपुरी* श्रे० खेतसी भा० प्रीमी पुत्र श्रे० माईआकेन भार्या जयतो पुत्र कोकादिकुटुम्बयुतेन श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रति० *तपा जयचन्द्रसूरिभिः* ।

(१०२)

संवत् १५०५ वर्षे शुदि ५ रवौ *ऊपकेशवंशे* साधुशाखायां सा० धन्ना भा० धन्नादे पुत्र सा० मंडण सा० पहजाभ्यां स्वपितुः श्रेयसे श्रीश्रेयासनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *खरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनसागरसूरिभि* ।

(१०३)

संवत् १५०६ वर्षे फागुण दि० ११ रवौ उप० माधरण भा० मदनादे पुत्र पूणाभ्यां चाट्ट पुत्रसहितेन स्वभा········ श्रांबा अर्जन श्रीश्रीधमनाथबिंबं का० प्र० *संडेरगच्छे श्रीयशिलप्रभसरिसंताने शांति सूरिभिः* ।

(१०४)

संवत् १५०६ *श्रीश्रीमालज्ञातीय* दोसी डूंगर भार्या भ्यापुरी सुत भूँजाकेन भार्या सोही सुत वीकायुतेन आत्मश्रेयसे श्रीसुविधिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट *आगमगच्छे* श्री*अमरसिंहसूरिपट्टे* श्री*हेमरत्नसूरिगुरुपदेशन* प्रतिष्ठितः *गंधार* वास्तव्यः ।

(१०५)

संवत् १५०६ वर्षे पौष सुदि ९ उसवंशे कांकरिया गोत्रे सं० साइदेव भा० करणू पुत्र सामल भार्या नयणादे पु० श्रीवच्छसहिता आत्मपुण्यार्थं श्रीश्रेयांसबिम्बं का० प्र० *कृष्णर्षिगच्छे श्रीनयचंद्रसूरिभिः* ।

१०१. प्राचीन जैनमन्दिर अमरावती
१०२. गोड़ी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बंबई
१०३. गोड़ी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बंबई
१०४. निजदैनन्दिनी से
१०५. जैनमन्दिर तूलापट्टी कलकत्ता

(११६)

संवत् १५०६ वर्षे आषाढ़ शुदि १० रवौ *श्रीमालज्ञातीय* श्रेष्ठि-राधव भार्या रत्नादे सांपू सुत जेसा सा० परसा लिगदला भार्या परमादे सुत पुना भाईया राजा, तेजा स्वपूर्वजपितृमातृपितृव्यभ्रातृपुत्र श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं कारितं *आगमगच्छे श्रीशीलरत्नसूरीणामुपदेशेन* प्रतिष्ठित *श्रीसूरिभिः । वडालवी वास्तव्यः ।*

(११७)

संवत् १५०६ माघ सुदि ५ गुरौ *दंडाहिदेशे आजउलीग्रामे श्रीश्रीमालज्ञातीय* श्रे० भीला सुत श्रे० कडुया भा० डाही सुत श्रे० वेला श्रे० लाला लघुभ्राता श्रे० पो...केन भार्या तेजूयुतेन...श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ-बिम्बं का० प्र० *वृहत्तपापक्षे रत्नसिंहसूरिभिः ॥*

(११८)

संवत् १५०६ (वर्षे) माघ सुदि ५ *प्राग्वाटज्ञातीय* श्रे० आका भार्या धरणू सुत स० कर्मणेन भा० सं० कर्मदेव्यादिकुटुम्बयुतेन निजश्रेयार्थं श्रीश्रीमुनिसुव्रतबिम्बं का० प्र० *तपागच्छेश श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य रत्नशेखरसूरिभिः ।*

(११९)

संवत् १५०६ माघ उकेश नरपति भा० हेमाई पु० को० पुनरत्न भा० को गना मातृ जाथ सा वीरपाल भा० वाछू पुजे आई नाम्न्या पु० हेमाई युतया श्रीमुनिसुव्रतबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं *तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्यरत्न श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ वेदूर वास्तव्य* ॥ श्री ॥

---

११६. दिगंबर जैनमन्दिर सिन्दी (वर्धा)
११७. महावीरस्वामी जैनमन्दिर पायधुनि बंबई
११८. चिन्तामणि पार्श्वनाथमन्दिर गुलालवाडी बंबई
११९. जैनमन्दिर घोटी (नासिक)

(१२०)

संवत् १५०९ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* श्रे० धरणिग भा० धांधी तत्पुत्र श्रे० आसा भा०सरभ तत्पुत्रम सं माणिकेन मातुःपुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबंकारितं प्रतिष्ठितं *श्रीमलधारिगच्छे श्रीश्रीगुणसुन्दरसूरिभिः*

(१२१)

संवत् १५०९ वर्षे माघ मासे पंचम्यां तिथौ *श्रीकोरंटगच्छे नन्नाचार्य संताने उपकेशज्ञातीय* साह् धन्ना भार्या गोरी तत्पुत्र सा: जावडेन स्वकुटुम्बसहितेन निजमातृपितृश्रेयार्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्रतिष्ठितं *श्रीककसूरिपट्टे सावदेवसूरिभिः*

(१२२)

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे श्री *प्राग्वाटज्ञातीय* साह् भामट सुत सा० धन्धु भार्यारूप सु सूराकेन अमरीकुटुम्बयुतेन श्रीसुपार्श्वनाथबिंबं कारितं *प्रति० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः* ।। धन्धुका वास्तव्यः ।।

(१२३)

संवत् १५१० वर्षे ज्येष्ठ शुदि *मंत्रिदलियवंशे मुडतोड गोत्रे* सा० रत्नसिंह भार्या वाउ सा० देवसीकेन भार्या माणिक्यदेवी लूणादे० भ्रा० सा० सुदासी देवराज पुत्र वाछायुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथबिंबं का० *खरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनसागरसूरि* प्रतिष्ठितं ।।

(१२४)

संवत् १५१० वर्षे मार्गशीर शु १० *प्राग्वाटज्ञातीय* व्य० आंबा भार्या रमादे सुत मेताकेन भार्या भली पुत्र तिला, राणा, गला, पांचादि कुटुम्बयुतेनस्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं का० प्र० तपा *श्रीरत्नशेखर सूरिभिः* ।। बोसण वास्तव्यः ।।

१२०. जैनमंदिर चालीसगांव
१२१. चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैनमंदिर गुलालवाडी बंबई
१२२. आदिनाथ-पार्श्वनाथ जैनमंदिर पायधुनि बंबई
१२३. शांतिनाथ जैनमंदिर भींडीबाजार बंबई
१२४. जैनमंदिर भद्रावती

(१२५)

संवत १५१० वर्षे फागुण वदि ३ शुक्रे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* ठकुर धरण भार्या बाई गांगी त ठकुर मांडण भार्या बाई अरधू ॥ तेन स्वकुटु म्बश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आगमगच्छे श्री श्री (? अमर सूरीणामुपदेशेन श्री स्तुकल्याणं।

नाम जान बूझ किसी ने मिटा दिया है

(१२६)

संवत् १५११ वर्षे माघ वदि ५ बुध दिने श्री *लोढागोत्रे* सा गोल्हा संताने सा० ऊधर भार्या उदयणि पुत्रः सा० खाभाकेन आत्म श्रेयस श्रीचन्द्रप्रभबिंबं का० प्रति० *श्रीरुद्रपल्लीयगच्छे* *श्रीदेवसुन्दरसू* प० *श्रीसोमसुन्दरसूरिभिः* ॥ शुभं भवतु ॥

(१२७)

संवत् १५११ वर्षे माघ शुदि ५ गुरौ *श्रीश्रीमालज्ञातीय* ठ० सां भा० सिरिआदे पुत्र सुमल भा० राणी सुत जमेसिंह भा० धीरु..... पानाकेन आत्म मदन झाड मातृ जाया ....सहकुटुम्ब परिवृत्तो सुविधिनाथबिंबं का० प्र० तपा० *श्रीसोमसुन्दरसूर भूमि (? मुनि) सुन्द सूरि श्रं जयचन्द्रसूरि विशालराजसूरिशिष्य* सम्प्रतिविद्यमानगच्छ नायक श्रीश्र *रत्नशेखरसूरिभिः* ॥

(१२८)

सं० १५११ वर्षे पौष वदि ६ मंत्रीश्वरगोत्रे हरिया भा० सुजू सा मन भार्या श्रीहुंबड़ज्ञातीय सहन *सिंहसेनसूरिभिः*।

१२५. जैनमंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

१२६. तपागच्छ जैनमंदिर बालापुर

१२७. जैनमंदिर भायखला बंबई

१२८. सम्मेदशिखर मंदिर मधुवन

(१२९)

संवत् १५११ आषाढ़ सुदि ४ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि देव-राज भार्या सीनू सुत कीकवजू समधर अजा भार्या रंगी अजाकेन स्वपितृमातृकलत्र श्रेयोर्थं चन्द्रप्रभस्वामिबिंबंकारितं प्रतिष्ठितं आगम-गच्छे श्र शीलरत्नसूरिभिः ॥ रणोला वास्तव्य ॥ ६ ॥

(१३०)

संवत १५११ वर्षे आषाढ़ वदि ९ श्रीउकेशवंशे शाहशाखायां सा० सोभ्रम श्रावकेन भार्या वसती पुत्र हरिपाल कंरपालयुतेन श्री शांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिगुरुभिः ॥ श्र. खरतरगच्छे ॥

(१३१)

संवत् १५१२ वर्षे पोष वदि ५ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्यव० ठाकुरसी भार्या पाल्हणदे. सुत वीरम वीकम रतना भुवा एते मातृपितृ-भ्रातृनिमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंबं कारितं श्रीपूर्णिमा-पक्षे श्र.कमलप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ विधिना टीभा ग्रामवास्तव्यः ॥ श्री ॥

(१३२)

५०॥ सं० १५१२ वर्षे आषाढ़ व० १ श्री उकेशवंशे दरडागोत्रे सा० हरिपाल सुत सा० आसा सांघू तत्पुत्र सं० मंडलिक सुश्रावकेन भार्या सं० रोहिणि पुत्र सं० साजण प्रमुखपरिवारसहितेन निजश्रेयसे विमलनाथबिंबंकारितं प्रतिष्ठितं च० खरतरगच्छे श्रीजिन-राजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

१२९. जैनमन्दिर पींपलगांव नासिक

१३०. नया जैनमन्दिर नागपुर

१३१. जैनमन्दिर वर्धा

१३२. चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनी बम्बई

(१३३)

संवत १५१२ वर्षे फागुण शुदि बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय वापच उंध भा० वां (चां) पलादे सुत राजा भार्या राजलदे सुत लखा; बना; राघव; बीरा सहितेन पितृमातृचांपा—निमित्तं आत्मश्रेयसे श्रीचतु-र्विंशतिपट्ट का० मुख्य (? मुख्य) श्रीसुमतिनाथबिंबं प्र० पिप्फलगच्छे (पिपलगच्छे) भ० उदयदेवसूरिभिः ॥ कोतरवाड़ा वास्तव्यः ॥

(१३४)

संवत १५१२ वर्षे माघ वदि ८ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे०खेता भा० राजलदे सुत साह दासहदेभ्यां स्वपित्रो (?) श्रेयसे कुंथ (थु नाथ-बिंबं कारितां (?तं) प्र अ (?) आगम गच्छे श्रीसाध (? धु) सुन्दरसूरीणा-मुपदेशेन कारितं ।

(१३५)

संवत १५१२ वर्षे माघ (? महा) शु० ५ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० माइआ भार्या महिगल सुत गोइया भा० दूवड़ी सुत हीराकन भार्या माणिकि भ्रातृभटापरबतस्वश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० तपा श्र रत्नसागरसूरिभिः ॥

(१३६)

संवत् १५१२ वर्षे चै० सु० ५ उसवाल वं० थुणागोत्रे सा० महणा भा० महणादे सुत सा० सीपाकेन भा० सूलेसरिप्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रीआदिनाथबिंबं कारितं प्रति० श्री ककसूरिभिः ॥

१३३. महावीरस्वामी जैनमन्दिर पायधुनी बम्बई
१३४. शान्तिनाथ जैनमन्दिर भींडी बाजार बम्बई
१३५. नेमिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बम्बई
१३६. नेमिनाथ जैनमंदिर भींडी बाजार बंबई

(१३७)

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ स० भूलू मातृ तेजलदेश्रेयोर्थं सुत श्रीआसाकेन श्रीश्रीअभिनंदनमुख्य-पंचतीर्थी कारितां *महुकरगच्छे* प्रतिष्ठितं *श्री.धनप्रभसूरिभिः* ॥ *चूल्हा वास्तव्यः* ॥

(१३८)

संवत् १५१३ वर्षे का० व० ११ रवौ *त्रिपुरपाटकवासि* प्राग्वाट (ज्ञातीय) श्रेष्ठि हीरा भार्या श्रीराजोनाम्न्या स्वमातृकामलदेश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रति० *तपा* श्रीसा (सोम) सुन्दरसूरि शिष्य *श्रीरत्नशेखरसूरिभिः* ।

(१३९)

संवत् १५१३ वर्ष माघ सुदि......श्रीश्री*मालज्ञातीय गंधारवास्तव्य* श्रे० देवधर भार्या भांजू नाम्न्या पु० रूपा, वस्ता, पुत्री समतिप्रभृति कुटुम्बयुतयास्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारितं प्रति० *तपापक्षे श्रीसोम-सुन्दरसूरिशिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिभिः* ॥ *श्री रस्तु* ॥

(१४०)

संवत् १५१३ वैषाख वदि ५ *अहम्मदाबादवासी* श्रीश्री*मालज्ञातीय* सा० लूणसी चमकू पु० आम......श्रीविमलनाथबिंबं का० प्रति० *मुनिसुन्दरसूरिपट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः* ॥

(१४१)

संवत् १५१३ वर्ष माघ शुदि ५ रवौ श्रीश्री*मालज्ञातीय* म० महिपा द्वि० भार्या देवलदे सु० लाडणकेन भा० ललनादे पितृमातृ-श्रेयोर्थं आत्मश्रेयसे श्री.शांतिनाथबिम्बं कारितं श्री*नागेन्द्रगच्छे गुणसमुद्र-सूरिभिः* ॥ *घोघराज ग्रामे* ॥ श्री ॥

१३७. शांतिनाथ जैनमंदिर कोट बंबई
१३८. गोडी पार्श्वनाथ जैनमंदिर पायधुनि बंबई
१३९. शांतिनाथ जैनमंदिर कोट बंबई
१४०. निज दैनन्दिनी से
१४१. " " "

(१४२)

संवत् १५१३ वर्षे वैषाख शुदि ३ गुरौ श्री*उपकेशज्ञातौ* कर्णाट गोत्रे सा० हरिपाल भा० गूजरी पु० सा० साहणकेन भा० सूहवदे पुत्र श्रीपतिराजयुतेन स्वश्रेयसे श्रीअभिनन्दननाथबिंबं कारितं श्रीउपकेश· गच्छीय श्रीकुकुदाचार्यसंताने प्रतिष्ठितं भ० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

(१४३)

संवत् १५१३ वर्षे फा० व० ११ *प्राग्वाट* ज्ञा० नउला भा० जासू सुत छना भार्यया श्रा० धर्मिणिनाम्न्या पुत्री लाडिकिश्रेयार्थं श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रति० *तपा सोमसुन्दरशिष्य रत्नशेखरसूरिभिः* ॥

(१४४)

संवत् १५१३ वर्षे वैषाख मासे सु० ४.... ज्ञा० *हाथउंडीयागोत्रे* सा० कालू भार्या कामलदे सु० पोपाकेन भार्या पाल्हणदे म० श्र अंचल गच्छे (यहां पर सुन्दर चित्र उत्कीर्णित है) श० श्र *जयकेशरिसूरि* वाचा पितृश्रेयसे श्रीसुविधिबिंबं का० प्र० श्रीसंघेना ॥ श्री ॥

(१४५)

संवत् १५१३ वर्षे वैषाख वदि २ बुधे श्री श्री *मालज्ञातीय* गांधी नरपाल भार्या नामलदे तयोः सुतः गांधी जेसा भार्या रांभू गांधी संघा भा० शाणी स्वपितृश्रेयोर्थं चन्द्रप्रभस्वामीबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री *आगमगच्छे आणंदप्रभसूरिभिः सलखणपुर वास्तव्यः* ॥

(१४६)

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ़ सु० ५ सोमे श्र.श्री*मालज्ञातीय* सा० सहिदे भा० सांतू सु० सा० राणाभिधेन स्वश्रेयसे श्रयांसबिंब कारित प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे *श्र.वीरप्रभसूरिभिः* ॥

१४२. पार्श्वनाथ जैनमंदिर भद्रावती
१४३. जैनमंदिर घाटकोपर बंबई
१४४. पुराना जैनमंदिर अमरावती बरार
१४५. जैनगृहमंदिर नादगांव (मनमाड़)
१४६. लौंकागच्छीय जैमंदिर बालापुर

(१४७)

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ़ सुदि १० बुधे प्राग्वाटज्ञातीय व्य० गांगा भा०कमली सुत व्य० समधर भा०राहि (यहां पर सुन्दर चित्र उत्कीर्णित है जिसका भाव इस प्रकार है कि १ मानव छत्र चामर लेकर खड़ा हुआ है शायद इन्द्र ही हो) प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रीअंचलगच्छेश श्री-जयकेसरिसूरीणामुपदेशेन का० श्रीकुंथुनाथबिंबं का० प्र० श्री संघेन ।श्री।

(१४८)

संवत् १५१३ वर्षे आषाढ़ सुद २ श्रीउकेशवंशे भावकगोत्रे सा० जगमाल पुत्र सा० जेठा सा० ... स्वपुण्यार्थं श्रीवासुपूज्यबिंबं कारितं प्रति० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

(१४९)

संवत् १५१४ अलवाहग्रामवासि सा० लीला भा० अमरी पुत्र सा० नाथू नाम्ना भा० चनू पु० डुंगरादियुतेन भ्रातृउगमश्रेयसे मुनि-सुव्रतबिंबं का० प्र० श्रीतपागच्छेश श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ पुरंदारे (?)

(१५०)

संवत् १५१५ वर्षे फागुण शुद ८ शनौ श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ मणोरसी भ्रातृ मेघू श्रेयोर्थं सुतवेला लखु सुमधुर भोजा बा.......... विमलनाथ (बिंब) का० श्रीपूर्णिमा श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधुसुन्दर-सूरीणामुपदेशेन कारितं

(१५१)

संवत् १५१५ वर्षे आषाढ़ सुद २ प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० शेखा भार्या मोना सुत धर्मा केन भार्या मटकू भ्रातृ पुत्र सुत पोपटठकुर भार्या मगा दिकुटुम्बयुतेनस्वश्रेयसे श्रीविमलनाथबिंब का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ नारंगपुर ॥

१४७. प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर बालापुर
१४८. जैन मन्दिर धनज बाजार (अमरावती)
१४९. जैनमन्दिर ब्रह्मचर्याश्रम चांदवड़ नासिक
१५०. चिन्तामणि पार्श्वनाथमन्दिर गुलालवाड़ी बम्बई
१५१. पार्श्वनाथ जैनमन्दिर भद्रावती

(१५२)

संवत् १५१५ वर्षे वैशाख सु० १३ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय दो० हला० भा० उभादे सुत गेला न......देपाल नामा पुत्रसहितेन श्रीविमलनाथबिंबं का० प्र० पिप्पलगच्छे भ०विजयदेवसूरिउपदेशेन श्री-सालिभद्रसूरिभिः ॥ जीवडीग्रामे ॥

(१५३)

सम्वत् १५१५ वर्षे वैशाख शु० ३ श्रीश्रीमालीयज्ञा० व्य० देऊआ भार्या नोडी द्वि० काऊ सुत हाथाकेन भार्या हर्षू सुत हरपाल भूभवसहितेन पितृमातृस्वश्रेयार्थं श्रीसम्भवनाथबिम्बं का० प्र० श्रीपूर्णिमापक्षे राजतिलकसूरीणामुपदेशेन प्र० ॥

(१५४)

संवत् १५१५ वर्षे माघ सुदि शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय म० काला भा० मकतू सु० आंबा भीमा रामा एतैः पितृमातृश्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्य-बिंबं कारितं श्रीबृहद्भाणगच्छे श्री मुणिचन्द्रसूरिभि:। दहीडाग्राम वास्तव्य।

(१५५)

सम्वत् १५१५ वर्षे माघ शुदि १ शुक्रे श्री ब्रह्माणगच्छे श्री माल-ज्ञातीय श्रे० खीमा भा० शाणी सुत चांपुनाम्न्या स्वश्रेयसे जीवत्यादि नि० संभनाथबिम्बं कारितं प्र० श्रीविमलसूरिभिः सीहज वास्तव्य।

(१५६)

सम्वत् १५१५ वर्षे फागण शुदि ८ शनौ श्रीश्रीमालज्ञातीय पितृ-भणरिसी भ्रातृ मेघू श्रेयोर्थं सुत वेला लखु समुधर भोजा वा'' 'विमलनाथ बिम्बं का श्रीपूर्णिमा श्र. साधुरत्नसुरीणामुपदेशेन कारितं ॥

---

१५२. पार्श्वनाथ जैनमन्दिर भद्रावती
१५३. जैनमन्दिर पाचोरा
१५४. श्रीशांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बंबई
१५५. चिन्तामणि पार्श्वनाथमन्दिर गुलालबाड़ी बंबई
१५६. श्वे० जैन मन्दिर घोटी (नासिक)

(१५७)

सम्वत् १५१६ वर्षे कातिक वदि २ शनौ श्रीमालवंशे सा० अर्जुन भा० आल्हणदे पुत्र संहाटा सुश्रावकेण भार्या दिवलदे (यहां पर अतीव सुन्दर चित्र अंकित है) पुत्र माला, वाला, सहितेन श्रीअंचल-गच्छगुरु श्र.जयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

(१५८)

संवत् १५१६ वर्षे आषाढ़ सुदि ३ रवौ महतीयाणज्ञातीय आंधा गोत्रे सा० फूंग भार्या अरधू पुत्र सा० भाखुकेन भार्या अमकू पुत्र सा० कुंअरपाल युतेन श्रीमुनिसुव्रतस्वामिबिम्बं का० प्र० श्रं खरतर-गच्छे श्रीजिनसुन्दरसूरिभिः ॥

(१५९)

संवत् १५१६ वर्षे वैसाख सुदि १३ कस्तार्कदिने गोबर चो० गोत्र महतीआण कलाल भार्या धर्मसी सुत श्री आसधर भा० चांपल दे. सुत नेमदासेन भा० गारवदेवी पुत्र उधरण तेजपाल, वस्तुपाल कुंअरपाल प्रमुखकुटम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीश्रीश्रीनेमिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनसागरसूरिभिःपट्टालंकार श्री जिनचन्द्रसूरिभिः।

(१६०)

संवत् १५१६ वर्ष माग (? घ) सुदि उकेशवंशे रांकागोत्र श्र०गुरा० पु० आमाकेन भार्या भांभण चमठूं पुत्र हरपाल, थिरपाल, वधु रंगाई प्रमुखपरिवारसहितेनश्रेयोर्थं अभिनन्दनबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥

१५७. जैन मन्दिर धमतरी म. प्र.

१५८. जैनमन्दिर बालाघाट " "

१५९. चिन्तामणि पार्श्वनाथ मन्दिर गुलालवाड़ी बंबई

१६०. जैन मन्दिर भायखला बंबई

१६१. " " "

(१६१)

संवत् १५१७ वर्षे फागुण सुदि ३ शुक्रे श्रीश्री मालज्ञातीय श्रे० मूधा भा० माणिकदे सु० झांझण बरेण भार्या नीणू प्रभृतिकुटुम्ब(युतेन) श्रीमुनिसुव्रतस्वामीपंचतीर्थी आगमगच्छे श्री हेमरत्नसूरि—गुरुपदेशेन कारितां प्रतिष्ठितान् अथवामणवाडिया वतलपुर वास्तव्य ॥

(१६२)

संवत् १५१७ वर्षे माघ सुदि ६ गुरौ श्रीश्रीवंशे श्रे० भला भार्या रतन पु. श्रे० कवा सुश्रावकेण (सुन्दर चित्र उल्लिखित है) श्री अंचल-गच्छेश्वर श्रीजयकेसरीसूरीश्वराणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

(१६३)

संवत् १५१७ वर्षे माघ सुदि ४ शुक्रे असाउलि वास्तव्या श्रीश्री-मालज्ञातीय सा० धना भार्या धनादे पुत्र सा महिराज भार्या चंगाई पुत्र नरपाल जेजपाल स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथबिम्बं कारितं प्रति० श्रीबृहत् तपापक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥

(१६४)

संवत् १५१७ वर्षे पौष वदि ५ गुरु श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रेष्ठि वारणा भार्या धांधलदे सुत महिराज भार्या हीरकेन जीवितस्वामी श्रीशांतिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।६। वीरमग्राम वास्तव्यः ॥

१६१. नया जैन मन्दिर अमरावती

१६२. जैन मन्दिर चांदवड

१६३. दिगम्बर जैन मन्दिर कोंडाली सी. पी.

१६४. जैनमन्दिर चांदवड

(१६५)

संवत् १५१७ वर्षे फाल्गुण सुदि ३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० गोबल सुत श्रे० नागसी भा० बमकू श्रे० रत्नाकेन भार्या गुरी सु० श्रे० सिंघरादिकुटुम्बयुतेन मातृपितृश्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिम्बं श्रं पूर्णिमापक्षे श्रीगुणसमुद्रसूरीणापट्टे गुणधीरसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ।

(१६६)

संवत् १५१८ आषाढ़ गुण श्री भादा भा० भरभादे पुत्र श्रे० जेला भार्या भरणादि नाम्नाकुटुम्ब (यु) तया नत्यास्त श्रेयोर्थं श्री श्रीवासुपूज्यबिम्बं का० प्र० तपागच्छे लक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

(१६७)

संवत् १५१८ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमालज्ञातीय श्रे० गांगा भा० शाणी सु० पितूबन भा० मचकू सुत मछवेन श्रीसुविधिनाथबिंबं कारित पूर्णिमापक्षीय श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधुसुन्दरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं विधिन, जहना वास्तव्यः ॥

(१६८)

संवत् १५१६ वर्षे वि (वै) शाख बदि ११ शुक्रे उपकेशज्ञातौ मा० देवा भातृ लहका पु० परबतेन भा० डाको (? ही) पहितेन स्वश्रेयसे संत (भ) वनाथबिंबं कारितं प्र० उपकेशग० ककुदाचार्यसंता (ने) श्रीकक्कसूरिभिः ॥

(१६६)

संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १३ सोमे उपकेशज्ञातीय भंडारीगोत्रे सं० देवराज भार्या बल्हादे पुत्र ३ रत्नसिंह कान्हा जसराज पितरपूर्व जननि निमित्तं श्री नमिनाथबिंबं का० श्री संडेरगच्छे भ०सालिसूरिभिः।

---

१६५. श्री पार्श्वनाथ जैन मन्दिर भद्रावती म. प्र.
१६६. ,, ,, ,, ,,
१६७. गोड़ी पार्श्वनाथ जैनमंदिर पायधुनि बंबई
१६८. महावीरस्वामी जैनमंदिर पायधुनि बंबई
१६६. महावीरस्वामी जैनमंदिर पायधुनि बंबई

(१७०)

संवत् १५१६ वर्ष वैषाख वदि ११ भृगुरेवत्यां *प्राग्वाटज्ञातीय* श्रे० सारंग भार्या सिरीयादे सुत नानाकेन भार्या जोगी कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० तपा *श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः* ॥ श्री *वीसलनगरवासि* ॥

(१७१)

संवत् १५१६ वर्ष वैषाख सुदि ११ शुक्रे *श्रीमालज्ञातीय* पिता मुहता हरासी पितामही खेती पितृ परबर मातृ रुडी सुत खेता राउलाभ्यां श्रीसुमतिनाथपंचतीर्थीबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *पिपलगच्छे* श्र *गुणरत्नसूरिभिः* ॥ *चूडाग्रामे* ॥

(१७२)

संवत् १५१६ वर्षे कार्तिक वदि ४ गुरु *श्रीमालज्ञातीय* मंत्री देवा भार्या सहिजू सुत वरजांगकेन भ्रातृ जेसा नरबद हाथा सहितेन पितृ मातृश्रेयसे श्रीअजितनाथादि चतुर्विंशतिपट्ट कारित प्रतिष्ठितं श्री*ब्रह्माण गच्छे मुनिचंद्रसूरिपट्टे* श्री *वीरप्रभसूरिभिः* ॥ *मेश्रा वास्तव्यः* ॥ श्रीशुभंभवतु ॥ श्री ॥

(१७३)

सं० १५१६ वर्षे आषाढ़ वदि १ मंत्रीदलीय श्रीकाणा गोत्रे ठ० भाधू भा० धर्मिणि पु० अचलदासेन पु० उग्रसेन लक्ष्मीसेन सूर्यसेन बुद्धिसेन देवपाल वीरसेन पहिराजादियुतेन श्रीशान्तिनाथदेव का० *श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः* प्रतिष्ठित ॥

---

१७०. शांतिनाथ जैनमंदिर कोट बंबई

१७१. चिन्तामणि पार्श्वनाथमंदिर गुलालबाड़ी बंबई

१७२. खरतरगच्छ्री बड़ा मन्दिर तूलापट्टी कलकत्ता

१७३. ,, ,, ,,

(१७४)

संवत् १५१६ ज्ये० ब० ११ *बडलिवासि* प्रा० महा० भा० मेघादे पुत्र स०......भारमल भा० पूंजी पुत्री नीलूनाम्न्या पुत्र हेमादियुतेन श्री श्रेयांसनाथबिंबं कारितं प्र० साधु..... ।

(१७५)

संवत् १५१९ वर्षे वैशाख वदि ११ भृगुरेवत्यां *भटोडाग्रामवासिक* प्राग्वाटज्ञातीय को० कोका भा० भूनू सुत को० भीला भा० टूसी सुत कडुआकेन भा० भोली द्वितीय भा० कामलदे सुत लांपा वृद्धभ्रातृ लुंभा राजादिबहुकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिचतुर्विंशतिपट्ट का० प्र० *तपा० श्रीश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः पं० पुण्यनन्दनगणि उपदेशेन* ।। श्री ।।

(१७६)

संवत् १५२० वर्षे मार्गशिर शु० ६ शनौ *उपकेशज्ञातीय सुराणागोत्रे* सं० जिणदेव भा० जयतलदे तत्पुत्र सं० वच्छराज भा० सं० पाल्हलदे कारितं तत्पुत्र सा० जगधर सरवण उदयराज हंसराज श्रीचन्द्रप्रभस्वामीबिंबं (का) प्र० श्री*धर्मघो(? षो) षगच्छे पद्मशेखर-सूरिशिष्य पद्मानंदसूरिभिः* ।।

(१७७)

संवत् १५२० वर्षे वैषाख सुदि १२ बुधे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* श्रे० हीरा भा० जीविणि सुत कान्हाकेन भा० पदमाई सुत रत्नसहितेन स्वश्रेयसे श्रीकुंथुनाथबिंबं कारापित (प्र) श्रीरत्नसूरिभिः ।। अहमदाबाद ।।

---

१७४. जैनमंदिर चांदवड (नासिक)

१७५. प्राचीनजैनमंदिर अमरावती

१७६. शांतिनाथ जैनमंदिर भींडीबाजार बंबई

१७७. तपागच्छ जैनमंदिर बालापुर

(१७८)

संवत् १५२० वर्षे वैशाख मासे श्रीप्राग्वाटज्ञातीय परि मूला भार्या माल्हणदे पुत्राः प० वीरा राजा वद्भा एतैः स्वमातुः श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्रति० श्रीवृध्धतपापक्षे श्रीउदयवल्लभसूरिभिः ॥

(१७९)

संवत् १५२१ वर्षे माघ शु० १३ प्राग्वाटज्ञा० पर्वत भार्या खेपु पुत्र म० आपाकेन भा० आसलदे पुत्री वाछ पुत्रस्वकुटुम्बयुतेन श्रीयुगादिदेवबिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा रत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मी सागरसूरिभिः ॥ श्र सोमदेवसूरियुतेः अहमदाबादनगरे ॥

(१८०)

संवत् १५२१ वर्ष वैशाख सु० ३ प्राग्वाटज्ञातीय स्व (?) कडूआ भा० हीमादे पु० स्व० भटाकेन भा० बाछ सुपत्र खेता, जयता, पाता वधू धनो व झिणि हनुपाउ तोला कका कुटुम्बयु नस्वश्रेयसे श्रीवासु-पूज्यचतुर्विंशतिपट्ट कारितः प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मी-सागरसूरिभिः ॥ डोडाणा ग्रामे ॥

(१८१)

सं० १५२१ ज्येष्ठ शु० ४ मंडुपदुर्गे पाग्वाट(ज्ञा) स० अर्जुन भा० टबकू सु० सा० वस्ता भार्या राजी सुत स० चांदा भा० जीविणि नाम्न्या पुत्र स० लींबा आकाहि (दि) युतया मातुः श्रेयसे श्रीधर्मनाथ चतुर्विंशतिपट्टः का० प्र० तपापक्षे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

---

१७८. जैनमंदिर लालबाग बंबई

१७९. गणेशमल सौभाग्यमल जैनमंदिर बंबई

१८०. जैनमंदिर चालीसगांव (खानदेश)

१८१. जैनमंदिर पांचोरा (खानदेश)

(१८२)

संवत् १५२१ ज्ये० शु० ४ प्राग्वाटज्ञाति सं० अर्जुन भार्या टबकू सुत सं० रूपा भा० रामी सुत सं० चांदाकेन भार्या जीविणि सुत सं० लींबा आंकादिकुटुम्बयुतेन चतुर्विंशतिपट्टान कारापितो स्वश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ च० पंका प्र० श्री तपागच्छेश श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मी-सागरसूरिभिः

(१८३)

संवत् १५२१ वर्षे माघ शुदि १३ प्राग्वाट ज्ञा० केल्हा भा० कील्हणदे पुत्र कोलाकेन भा० कुतिगादे...त्रादे पु० राजा ज्येष्ठ भ्राता सूरा, पेथा, नाल्हा मातादियुतेन श्रीपार्श्वनाथबिंबं का० प्र० तपा० श्रीसूरिभिः

(१८४)

संवत् १५२१ वर्ष माघ शु० १३ प्राग्वाट १० पर्वत भार्या खेपू पुत्र मं० आपाकेन भार्या आसलदे पुत्र वाकू पुत्र इकुटुम्बयुतेन युगादि-देवबिंबं स्वश्रेयसे का० प्र० तपा रत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः श्रीसोमदेवसूरियुतैः । अहमदाबादनगरे

(१८५)

संवत् १५२२ वर्ष वैशाख सुदि १० गु० उप० ज्ञा० शां जहाणेचा गोत्रे सं० जसदा भा० नाइ पुत्र धूधल नीसा गोकल सा० धूधल भार्या मनी पुएसगध (?) मरत्रग भ्राता म० आत्मश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत-बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंडेरकगच्छे श्रीयशोभद्रसूरिसंताने श्रीसालिभद्र सूरिभिः ॥

१८२. जैनमन्दिर अमरावती

१८३. दिगंबर जैनमंदिर नांदगांव (अमरावती)

१८४. जैनमंदिर, गणेशमल सौभाग्यमल का बंबई

१८५. पार्श्वनाथ जैनमंदिर भद्रावती

(१८६)

संवत् १५२२ वर्षे माघ शु० ११ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० देवराज भा० वयजू पुत्र श्रे० पचदासेण (न) भार्या मातृभ्रातृ सूरदास सारंग विमातृ श्रीप्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिंबं का० प्र० तपा० श्री रत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीश्रीश्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

(१८७)

संवत् १५२३ वर्षे वैषाख सुदि ६ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० मंडलिक सुत .... श्रीअनन्तनाथबिम्बं कारितं पूनिमगच्छे श्रीसाधुरत्नसूरिपट्टे श्रीसाधुसुन्दरसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं मंडुपदुर्गे ॥

(१८८)

संवत् १५८३ वर्षे वैषाख सुदि ६ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० कुंथ सुत पदमसी सु० पित मोखा.. मा...मोखलदे श्रेयसे सुत अर्जुन भजनाम्यां (?) श्रीवासुपूज्यबिम्बं कारितं पूनिमगच्छे श्रीसाधुसुन्दर-सूरीणामुप० प्रति० । वलस वास्तव्यः ॥

(१८९)

संवत् १५२३ वर्षे माघ सुदि १ बुधे प्राग्वाटज्ञातीय सा० सारंग भार्या शांणी पुत्र मेघाकेन भार्या मंदोदरी पु० द० देह भा० सांई वच्छादियुतेनआत्मपुण्यार्थं श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेशरीसूरिभिः ॥ खुरसदकला ॥

(१९०)

संवत् १५२३ वर्षे माघ वदि ११ बृहस्पति उपकेशवंशीय नाहरगोत्रे मा० सूरा पु. रतन तद्भार्या गूजरी पु. सं. हेमा भा. सं. हमीरादे पुत्र छाजू कोकायुतेन श्रीपार्श्वनाथबिम्ब का० प्र० श्रीधर्मघोषगच्छे श्री पद्मशेखरसूरिपट्टे भट्टारक श्री.पद्मानन्दसूरि श्रीआल्हादनयः ॥

---

१८६. चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैनमंदिर गुलालवाड़ी बंबई
१८७. श्री शांतिनाथ जैन मन्दिर भींडी बाजार बंबई
१८८. आदिनाथ भगवान जैनमन्दिर पायधुनि बंबई
१८९. आदिनाथ भगवान जैनमन्दिर नागपुर म. प्र.
१९०. जैनमन्दिर शाहपुर जि. ठाणा

(१९१)

संवत् १५२३ वर्षे मा० सुदि ६ रवौ *उसवालजातीय बहुरागोत्रे* सा० पिमा पुत्र वरसा वालहदे स्वभ्रातृ रूल्ला श्रीविमलनाथबिम्बं कारितं प्रति० *श्रीविमलगच्छे गुणाकरसूरिभिः*

(१९२)

संवत् १५२३ वर्षे वैसाख सुदि ६ श्रीश्रीप्राग्वाट् ज्ञा० ॥ जेसंघ भार्या गांगी सुत सहिदेकेन :मातृपितृभ्रात्मश्र० श्रीकुंथुनाथबिंबं का० श्रीपिप्प० *श्रीधर्मसागरसूरिणा* प्रतिष्ठितं

(१९३)

संवत् १५२४ वर्षे वैसाख वदि ६ सोमे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* दोसी अजा भार्या धरमिणि सुत खेता सिवा रत्नाभ्यां पितृमातृश्रेयसे नमिनाथबिम्बं पंचतीर्थी कारापितं (तं) *श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीराजतिलक-सूरीणामुपदेशेन* प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः । *वीरमग्राम वास्तव्यः* ॥

(१९४)

संवत् १५२४ वैसाख सुदि १० उकेश वेदरवासि म० महिराज भा० चंपाई सुत पद्मसिंहेन भगिनी पद्माई प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रीशीतलनाथ बिम्बं का० प्र० *तपा सोमसुन्दरसूरि सन्ताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः* ॥

(१९५)

संवत् १५२४ वै० शुदि प्रा० श्रे० पाता भा० वाछू पुत्र जोगाकेन भा० जावडि यु० रामदास भ्रातृ अर्जुन भा० सोनाई प्र० कुटुम्बयुतेन श्रीशीतलनाथबिम्बं का० प्र० *श्रीसोमसुन्दरसूरिसन्ताने श्रीलक्ष्मीसागर-सूरिभिः* ।

---

१९१. खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता
१९२. आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बंबई
१९३. आदिनाथ जैनमन्दिर पायधूनि बंबई
१९४. खरतरगच्छीय बड़ा जैनमन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता
१९५. खरतरगच्छीय बड़ा जैनमंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

(१९६)

संवत् १५२५ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ श्री ब्रह्माणगच्छे श्रीश्रीमाल-ज्ञातीय मह° गाला भार्या करणं पुत्र शिवा भा० हरखू पुत्र जावड़ भावड़ आदैः पितृगा (मा?) तु श्रेयार्थं चन्द्रप्रभस्वामिबिम्बं का° प्रतिष्ठितं श्रीवीरसूरिभिः। मडाआणा वास्तव्यः।

(१९७)

संवत् १५२५ वर्ष मार्गशिर सुदि १० दिने प्राग्वाट्ज्ञातीय श्रे० गांगी भार्या हरखू पुत्र श्रे० जाकेन भार्या लीलाई पुत्र हरपतियुतेन स्वश्रेयार्थं श्रीशांतिनाथबिम्बं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहर्ष-सूरिभिः॥

(१९८)

संवत् १५२५ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे श्रीमाल ...... पुत्र शिवराज भा० मांडू माधव श्रीपालाभ्यांयुतेन पितृनिमित्तं आत्म-श्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमापक्षे सोमसुन्दर-सूरिभिः॥ अहम्मदाबादे हर्षपरवाट्।

(१९९)

संवत् १५२६ वै. शु० ६ सोमे गंधारवासि प्राग्वाटज्ञातीय वि० डूंगर भार्या हर्षू पुत्र वि० पाताकेन भार्या वीलाई सुत कर्मसी वीरम कीकादियुतेन निजजननिश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिं० का० प्र० तपागच्छ-राज लक्ष्मीसागरसूरिभिः।

(२००)

संवत् १५२७ वर्षे ज्येष्ठ शुदि ४ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० डूंगर भा० देवलदे सुत पाताकेन भा. काई पुत्र गोई आदि युतेन लघु पुत्र मूला विघ्नो...शान्तये श्रीसंभवनाथबिंबं कारितं श्री पूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय भ. जयचन्द्रसुरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं॥

---

१९६. श्री अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर, सिरपुर (अकोला)
१९७. जैनमंदिर घाटकोपर बंबई
१९८. आदिनाथ जैनमंदिर पायधुनि बंबई
१९९. शांतिनाथ जैनमंदिर भीड़ीबजार बंबई
२००. शांतिनाथ जैनमंदिर भीड़ीबजार बंबई

(२०१)

संवत् १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय व्य० पांना भा० साधी सा० हीरा भा० कमाई सुत रीमाकेन भार्या वीरीयुतेन आ० रमाश्रे-श्रेयसे श्रीशीतलनाथबिंबं श्री. पू. श्रीसद्गुरुणामुपदेशेन का. प्र. विधिना स्तंभतीर्थनगरे ॥

(२०२)

संवत् १५२७ वर्षे श्रीमालज्ञातीय म० भांभण भा० मांडू सुतभाटा भा० सुहिविदे सुत श्रीपालेण धणपाल मह मातृपितृश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ-बिम्बं का० प्रति० तपा लक्ष्मीसागरसूरिभिः।

(२०३)

संवत् १५२८ वर्षे फा० शु० पू० घारवासि प्राग्वाट सा० मारंग भा० नानी सुत सा० धामाकेन भा० पदमाई प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रयसे सुमतिबिंबं का० प्रति० तपा लक्ष्मीसागरसूरिभिः॥

(२०४)

संवत् १५२८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ बुधे श्रीश्रीमालज्ञातीय श्रे० उत्यमी भा० वइजलदे सुत मेघा भा० गुरादे सुत वेलाकेन पितृमातृ श्रयसे श्रीसंभ(व)नाथबिम्बं पूर्णिमापक्षे श्रीगुणरत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना भागलपुरे ॥

(२०५)

संवत् १५२८ व. (च.) त्र ते. १० गुरौ श्रीउसवंशे भीठि आसो वोषड भार्या जसमाई सो. गुणराजे सु० आपकेन भार्या मेघाइ पु० पूजा महिपाल (यहां सुन्दर चिन्ह है) भ्रातृ हरखा श्री राजसिंह राज सोमपाल सहितेन श्रीअञ्चलगच्छे श्रीजयकेशरसूरि उप० आत्मपुण्यार्थं कुन्थुनाथबिम्बंकारितं प्र० श्रीसंघेन चिरनंदतु।

२०१. श्री पार्श्वनाथ जैनमंदिर भद्रावती
२०२. जैनमन्दिर महावीरस्वामि चांदवड (नासिक)
२०३. पार्श्वनाथ जैनमन्दिर भद्रावती
२०४. जैनमन्दिर भीवंडी
२०५. लोंकागच्छीय जैनमन्दिर बालापुर

(२०६)

संवत् १५२८ वर्षे चैत्र वदि ५ रवौ उसवालज्ञा सा० महिपा भार्या मालूणदे पु० वीकम देवाकेन भातृ सामल पांचा भा० माल्ही पु. खेता······आलोआदि कुटुम्बयु० विमलनाथबिम्बं का० प्र० उकेश-गच्छे सिद्धाचार्य सन्ताने खरातपा सिद्धिसूरिभिः ॥

(२०७)

संवत् १५२८ वर्षे वैसाख सुदि १० दिन भंडारागोत्रे साह पोचा पुत्र सोजपाल श्रेयार्थं श्रीशांतिनाथबिम्बं कारापितं प्र० धर्मघोषगच्छे साधुरत्नसूरिभिः ॥

(२०८)

संवत् १५२८ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ रवौ प्राग्वाटज्ञा० श्रे० भीणा भार्या जीविणि पु० श्रे० वचा भार्या धालू पुत्र माणिकसहितेन श्रीधर्मनाथबिम्बं कारितं अंचलगच्छे प्रतिष्ठितं श्रीजयकेसरसूरिभिः ॥

(२०९)

संवत् १५२९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ बुधे भावसार गोसल भा० तेजू तयो (:) सत्पुत्रं भदिरेण भार्यापुत्र कान्हा हरपाल केसव सहितेन स्वकुटुम्बश्रेयोर्थं श्रीसीतलनाथचतुर्विंशतिपट्टः कारापितं श्रीवृद्धतपापक्षे।

(२१०)

संवत् १५२९ जे० वि० (? व) १ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय मधु श्रे. वयरा भा० मकी पुत्र सिंहाकेन भा० धर्म्मिणि पुत्र गहिला वेलासहितेन स्वश्रेयसे कुंथुबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीचैत्रगच्छे भ० श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ श्री लीलापुर ग्राम वास्तव्यः ॥

---

२०६. शांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बंबई
२०७. चिन्तामणि पार्श्वनाथ मन्दिर गुलालवाड़ी बंबई
२०८. गोडी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बंबई
२०९. गोडी पार्श्वनाथ जैनमंदिर पायधुनि बम्बई
२१०. महावीर स्वामी जैनमंदिर पायधुनि बम्बई

(२११)

संवत् १५३० वर्षे चैत्र वदि ४ बुधे *प्राग्वाटज्ञातीय* श्रे० जयता भा० भूरी पुत्र सिवा० कदुआ वरुआ भार्या कीको पुत्र कता माधवयुतेन स्वपितृमातृस्वश्रेयसे श्रीअजितनाथबिंबं कारितं *भीमपल्लीय भ० जयचन्द्रसूरितत्पट्टे भावचन्द्रसूरि* बिंबं प्रतिष्ठितं श्री ॥

(२१२)

संवत् १५३० वर्षे माघ शुदि ३ रवौ श्रीश्रीवंशे *लघुसन्ताने भ०* भूंजा भा० महिगलदे सुत जांसा द्वया भा० हीरू पुत्र मे गोपा सुश्रावकेण भार्या गुरदे सहितेन श्री*अंचलगच्छे* श्री*जयकेसरसूरीणामुपदेशेन* वृद्ध भ्रातृ गोविंद भार्या जीजीपुण्यार्थं श्रीधर्मनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन (। चिरनंदतु ।)

(२१३)

संवत् १५३० वर्षे चैत्र व. ५ गुरु श्री*मंत्रीश्वर* गोत्रे हुंबडज्ञातीय स० हाथा भा०पातू सुत संघ०वीरा भार्या लाडुनाम्न्या स० वीरा श्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं कारितं श्री हुंबडगच्छे श्री*सिंघदत्तसूरि* उपा० श्री*शीलकुंजरगणिभिः* श्रेयो भवतु ॥ श्री ॥

(२१४)

संवत् १५३० वर्षे माघ व. २ शुक्रे *अजाउलि* वास्तव्य श्रीश्री*माल ज्ञातीय* दो० शिवा भा० शिंगारदे पुत्र धणसी भार्या रवी सहितेन शिंगारदे आत्मपुण्यार्थं श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्री*पूर्णिमापक्षे धर्मशेखरसूरिपट्टे* श्री*विशालराजसूरीणामुपदेशेन* विधिना ॥

---

२११. नेमिनाथ स्वामी जैनमंदिर भींडीबाजार बम्बई

२१२. पार्श्वनाथ जैनमंदिर भद्रावती

२१३. पार्श्वनाथ जैनमंदिर भद्रावती

२१४. आदिनाथ जैनमंदिर भायखला बम्बई

(२१५)

संवत १५३० वर्षे फागुण सुदि ७ भूम (भौम) दिने उसवाल ज्ञाति गोठीवंशे सा० जयता भार्या वोरसि पुत्र सा० सूपा० भा० नयणु पु० सरवण भ्रा० सा० सांधारण समस्तपुण्यार्थं श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं प्र० श्रीसं (?षं) डेरगच्छे श्री सालिभद्रसूरिभिः।

(२१६)

संवत १५३१ वर्ष माघ वदि प्रतिपदा सोमे सोवाडिया प्राग्वाट-ज्ञातीय ठ० नरपाल भार्या बापू सुत समरथ सूरा [illegible] श्रेयोर्थं श्री आदि-नाथबिंबं श्रीसौराष्ट्रगच्छे भट्टारिक (भट्टारक) श्रीवि (वि) भाव (भ ?) द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं च।

(२१७)

सं० १५३१ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्री ऊकेशवंशे [illegible] सन्ताने [illegible] भोजा पुत्र नरसिंहादूत भ० कोल्हा नारदाभ्यां श्रीअभिनन्दन जिनबिंबं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचन्दसूरिभि

(२१८)

सम्वत् १५३१ ज्येष्ठ सुदि २ रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय प० हाथी भा० हीमादे सुत दूमणीना भा० रंगी सुत अदादिकुटुम्बयुतेन भ्रात घोधर खीमा श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिंबं का० पू० गुणधीरसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना [illegible] ॥

---

२१५. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर सिरपुर

२१६. श्री महावीर मंदिर [illegible]

२१७. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

२१८.

(२१६)

सम्वत् १५३१ वर्षे वैषाख वदि ११ सोमे श्रीश्री*मालज्ञातीय* सा० गोआ भार्या कुसु सा० लाजण भा नंदोआरि सुत सा. लटकण भा० सागू श्रीराजेन भार्या हीराई प्रभृति समस्त कुटुम्बसहितेन श्रीअभिनन्दनादिचतुर्विंशतिपट्टः *पूर्णिमापक्षे श्रीश्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन* कारिता प्रतिष्ठिता स्वविधिना।

(२२०)

सम्वत् १५३१ वर्षे वैसाख सुदि ५ सोमे *उसवालज्ञातौ* सा० तेला भा० करणू पु० धरणी भा० झवकू पु० सा० प्राणदेन भा० रंगादे भातृ धणपाल देपालपुत्रेन सुश्रेयसे श्रीआदिनाथबिंबं का० प्र० *उपकेशगच्छे कक्कुदाचार्यसंताने श्रीदेवगुप्तसरिभिः। वेलाकूलं।*

(२२१)

सम्वत् १५३१ वर्षे वैसाख मासे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* श्रे० भाइआ भा० सइभ सुत तेजाकेन भार्या देमति सुत हरदास नरपाल वीरपाल··· लकरम्पण धरमणादियुतेन स्वपितृश्रेयसे *श्रीवासुपूज्यादिपंचतीर्थी श्रीआगमगच्छेश श्रीअमररत्नसूरिगुरुपदेशेन* कारिता प्रतिष्ठिता च।

(२२२)

सम्वत् १५३३ वर्षे वैषाखे *गोधणवासी* प्रा० व्य० सहजा भा० अजू पुत्र मनांकेन भ्रातृ दूला भीला भा० रुकमणि हान्ह प्रमुख कुटुम्बयुतेन शीतलनाथबिं० का० *तपाश्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसरिभिः*

(२२३)

सम्वत् १५३३ माघ सुद ७

२१९. जैनमंदिर ब्रह्मचर्याश्रम चांदवड नासिक
२२०. दीपचंद निहालचन्द बंगलो जैनमंदिर नासिक
२२१. जैनमंदिर पायधुनि बंबई
२२२. लोंकागच्छ जैनमन्दिर बालापुर
२२३. जैनमन्दिर करंगी (बालाघाट)

(२२४)

सम्वत् १५३३ वर्षे पोष वदि १० गु० प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० मोकल भा० माल्हणदे सुत श्रे० नासिंग भा० पद्मी भा० लाला श्रे० अमरसिंग सुत डूंगरनाथ प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रीशीतलनाथबिंबं का० प्र० श्रीतपा भट्टारक श्रीम......सागरसूरिभिः।

(२२५)

सम्वत् १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरु उपमन्यगोत्रे सा० ब्रह्म सजने भ० हीर० भा० तिलू पु० कीताकेन भा० तादू श्रेयसे पु० अम-राजी वासुहासिणि प्रकू युतेन स्वमातृश्रेयोर्थे श्रीवासुपूज्यबिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः। डालिभाम।

(२२७)

सम्वत् १५३४ वर्षे वैशाख वदि १३ सोमे ऊ० रासनीगोत्रे सा० रतना भार्या षठी पुत्र भाला भा० लीलू पु० थिरपाल आत्मश्रेयसे सुमतिनाथबिंबं का० प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीसोमकीर्तिसूरि स्व०वारचैन्द्र सूरिभिः।

(२२७)

सम्वत् १५३४ वर्षे माघ सुदि १० बुधौ श्रीश्रीवंशे दो० आसा भार्या मांकू सुत दोसी भावल भा० रामति सुत दो० गणपति सुश्राव-केण भा० कपूरी पुत्र मणोर (यहां पर अतीयसुन्दर चित्र अङ्कित है) देवरत्न द्वितीय भा० कनडगदे पुत्रशिवा पितृव्य० दो० अजा भा० गोमतिपुत्र वहिराज सहितेन श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकेसरसुरीणामुप-देशेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। चिरनंदतु श्री।

---

२२४. जैनमन्दिर भायखला बम्बई
२२५. गोडी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बम्बई
२२६. जैनमन्दिर हींगनघाट
२२७ पार्श्वनाथ जैनमन्दिर भद्रावती

(२२८)

सम्वत् १५३४ वर्षे पोष व० ६ रवौ प्राग्वाट् ज्ञा० सा० चांपू भा० चांपलदे पु. २ महिराज धना भार्या डाहाका पु० अंबा श्रे० श्रीधर्मनाथ-बिंबं का० प्रा० लहुतपापक्षे श्रीलक्ष्मीसागरेण।

(२२९)

सम्वत् १५३४ वर्षे वैषाख सुदि ३ सोमे प्राग्वाट्ज्ञातीय दीपा भा० हांसलदे पुत्र जयादेन भा० रोहिणि पु० डामर डुगरादि कुटुम्ब-युतेनस्वश्रेयोर्थं श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीश्रीसोमसुन्दरसूरि सन्ताने तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः। मादड़ग्रामे।

(२३०)

सवत् १५३४ वर्षे महा सुदि १३ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय दो० वीसल भार्या वील्हणदे सुत दो० झींकाकेन भार्या सोही कुटुम्बस्वपितृ श्रयसे नमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिपलगच्छे शांतिसूरिभिः

(२३१)

संवत् १५३४ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १० दिने चोपडागोत्रे सा० करमा पुत्र देल्हाकेन भार्या देल्हणदे पुत्र देवादिपरिवारसहितेनस्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतबिंबं कारितं प्र० खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः।

(२३२)

संवत् १५१६ वर्षे शुदि १ दिने गुरौ तातहड़गोत्रे स० लध्धा पुत्र साहा भार्या नगराज पुत्र नाखू युतेन स्वपुण्यार्थे श्रीशीतलनाथबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं ककुदाचार्यसन्ताने श्रीककसूरिपट्टे श्रीदेवगुप्तसूरिभिः।

---

२२८. आदिनाथ जैनमंदिर भायखला बंबई
२२९. पुराना जैनमंदिर नासिक
२३०. शांतिनाथ जैनमंदिर भींडी बाजार बम्बई
२३१. ... ...
२३२. ... ...

(२३३)

संवत् १५३५ पोष वदि १३ बुधे *उपकेशज्ञातीय ठाकुरगोत्रे* साह सामंत भार्या हरखू सुत साह सालिग भार्या धरणू भातृ साह सारंगु भार्या धारु साह सालिग सुतरू डूंगु सिंधु मांडण श्रीआदिनाथबिंबं कारापितं *श्रीज्ञानकीयगच्छे* भट्टारक *श्रीधनेश्वरसूरिभिः* ।

(२३४)

संवत् १५३५ वर्षे पोष वदि ६ *उकेश ज्ञा०* सा···ध भार्या राजू सुत राजा भरणादे पु० सवा श्रीचन्द्र भाडण भ्रा० सिंगया-सालि गणेशादि कु० पितृश्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथबिंबं कारापित प्र० *श्रीलक्ष्मी-सागरसूरिभिः* ।

(२३५)

संवत् १५३६ वर्षे मार्ग शुदि ६ शुक्रे श्री*श्रीमालज्ञातीय* श्रे० तेजा भा० तेजलदे पुत्र खोनाकेन भा० जीविणि पु० नगा अमरमी प्र० कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिंबं कारित प्र०*ब्रह्माणगच्छे श्र.वीरप्रभ-सूरिभिः* ॥ *तिमिरपुरे* ॥

(२३६)

सं० १५३६ वर्षे वैशाष(ख) शुदि ८ शनौ उपकेशज्ञातीय व० धरणीधर भा० भला सुत देवा भा० कुटीकेन स्वभर्तृ–आत्मश्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथबिंबं का० प्रति० *श्रीनाणावालगच्छे श्रीधनेश्वरसूरिभिः* ॥ *कोरडा* वास्तव्यः ॥

(२३७)

सं० १५३६ व० वैशाष व० ११ शुक्रे माईआकेन श्रीगौतम स्वामी का० प्र० ।

---

२३३. पार्श्वनाथ जैनमंदिर बालापुर
२३४. श्रीआदिनाथ जैनमंदिर भायखला बंबई
२३५. जैनमंदिर गांव वाला चांदवड
२३६. खरतरगच्छीय बड़ा जैनमंदिर तुलापट्टी कलकत्ता
२३७. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

(२३८)

संवत् १५३६ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ श्रीउसवालज्ञातीय सा०इ०श्रा० भा० कुमादे सुत सा टीला भा० अछबादे नाम्न्या सुत जेसा सहितया आत्मश्रेयसे श्रीअभिनन्दनबिंबं कारित प्र० सर्वसूरिभिः ।

(२३६)

संवत् १५३७ वर्षे वैषाख सुदि ३ सोमे श्रीश्रीमालज्ञातीय म० भांईआ भा० माणिक्यदे सुत सहमा भा० वड़धी आत्मश्रेयोर्थं जीवितस्वामि श्रीआदिनाथबिंबं का०प्र० पिप्पलग० त्रिभविआ श्रीधर्मसागरसूरिभिः ॥

(२४०)

संवत् १५४२ वर्षे शु० १० गुरौ श्रीश्रीमाली गंधारवासि श्रे०हीरा भा० मेलू सु० नगराज भा० वाल्ही सु० श्रे० वीरपालेन भा० गोई प्रमुखकुटुम्बयुतेन श्रीसंभवनाथबिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिपट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

(२४१)

संवत् १५४२ वर्षे माघ सुदि १० रवौ श्रीउसवाल ज्ञा० लपेथऽवंशे स० रत्न भार्या मेघाई पुत्र सं० भोजराजेन भार्या हरखाई पुत्र पूनजी सं० देवजी सं० वाउजी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथादि चतुर्विंशतिपट्ट का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ शुभं भवतु श्री ॥

(२४२)

सं० १५४२ वर्षे माघ शुदि २ शनौ उकेशज्ञातीय सोनी षटवडगोत्र सा० डूंगर पुत्र सा० तेजा भार्या तेजलदे पुत्र सा० नरपालेन भार्या देमी पु० मारंग भ्रातृ वरदेयुतेन श्रीसुविधिनाथबिं०प्र० रुद्रपल्लीय गच्छे श्रीजिनोदयसूरि प० श्रीदेवसुन्दरसूरिभिः ।

२३८. श्रीआदिनाथ जैनमंदिर भायखला बंबई
२३६. नया जैनमंदिर नासिक
२४०. श्रीआदिनाथ जैनमंदिर भायखला बंबई
२४१. श्रीआदिनाथ जैनमंदिर नागपुर
२४२. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टि कलकत्ता

(२४३)

संवत् १५४२ वर्षे जिष्ट (? ज्येष्ठ) वदि ४ सोमे श्रीश्री*मालज्ञातीय* श्रे० धना भा० रागू नाम्ना स्वभ्राता जासुश्रेयोर्थं वासुपूज्यपंचतीर्थीबिंबं कारितं *आगमगच्छेश* श्री*अमरसूरिभिः* । प्रतिष्ठितं । *उदयपुर* वास्तव्यः ।।

(२४४)

सं० १५४२ वर्षे फागुण शुदि ५ गुरौ श्री *भावडारगच्छे* ड०ज्ञा० प्राम्हेडागोत्रे सा० देपा भा० हीरादे पु० जगपाल नाथा अगपाल भा० जसमादे पु० षीदा पितृमातृपुण्यार्थं श्रीधर्म्मनाथबिं० का० प्र० श्री*भावदेवसूरिभिः* ।

(२४५)

संवत् १५४३ वर्षे वैषाख वदि १० शुक्रे श्री*मालज्ञातीय*...वामांकी नाम्ना मनसु कुटुम्बयुतेन...श्रीशांतिनाथबिंब कारि० प्र० *बृहत्तपागच्छे उदयसागरसूरिभिः* । *गंधार बंदिर* ॥

(२४६)

संवत् १५४३ फा. वदि ८ शनौ *देवासनगरवासी प्राग्वाटज्ञातीय* सा० साजण भार्या सूहवदेवी पु० मह लापा भा० करमी पुत्र रत्नासाह देवसिंहेन भार्या नाथा भगिनी श्रीमाल्ह तद् भागिनेय सा० रामा श्रावक भा० धनी रगपुत्र हरबाई प्रमुखकुटुम्बयुतेन २४ जिनपट्टसकारापित्रां (तं) स्वश्रेयसे श्रीयांसबिंबं का० प्र० *तपागच्छे* श्रीश्रीश्री*लक्ष्मीसागर-सूरिभिः* ।

(२४७)

संवत् १५४४ वर्षे फागण वदि २ गुरु श्रे० मोखा भा० रुडांल मणिक श्री*कोरंटगच्छे* श्री*सावदेवसू(रि)* ॥

२४३. महावीर स्वामी जैनमंदिर पायधुनि बंबई
२४४. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टी कलकत्ता
२४५. शांतिनाथ जैनमंदिर दादर
२४६. जैनमंदिर शाहपुर बंबई
२४७. जैनमंदिर गांवधाला चांदवड

(२४८)

सम्वत् १५४४ वर्षे वैशाख सुदि ६ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय भ० सांगा भा० हकू सुत आसराज भा० मल्कू सुत तेजपालेन भार्या हताई प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे वासुपूज्यबिंबं कारितं बृहत् तपागच्छे उदयसागर सूरिभिः ।

(२४९)

सम्वत् १५४६ वर्षे आषाढ़ वदि १२ रवौ शहलडागोत्रे सा० बाहठ भा० दोल्हू पु० समदा भा० सुगणादे पुत्री हीरा जुगयुतेन सा० हेला कमणिपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथबिंबं कारितं प्र० मलधारगच्छे गुणसागरसूरिभिः ।

(२५०)

सम्वत् १५४६ वर्षे माघ सु० दशमी रवौ ऊ० ज्ञातीय व्य० कीकाकेनश्रेयांर्थं श्रीगौतमस्वामी

(२५१)

संवत् १५४७ वर्षे माघ सुदि १३ रवौ श्रीमंडपे श्रीमालज्ञातीय ऊदा भा० हषू पुत्र होमा भा० पूजी पुत्र जगसी भा० माऊ पु० सगोला भा० सांभा सं मेघा पुत्री शाणी लघुभ्राता सं० राजा भा० मागू पु० सं० जावड़ भार्या धनाइू जीवादि संलालादि कुटुम्बयुतेन १०४ बिम्बंकारापितं स्वश्रेयसे श्री······दर्नाबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीसोमसुन्दरसूरिशिष्य श्रीलक्ष्मीसागरसूरि तत्पट्टे श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः ।

२४८. शांतिनाथ जैनमंदिर भींडीबाजार बंबई

२४९. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथमंदिर शिरपुर

२५०. खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टी कलकत्ता

२५१. आदिनाथ मन्दिर (नया) नागपुर

(२५२)

सम्वत् १५४७ वर्षे माघ सुदि १३ रवौ *श्रीमालज्ञातीय* पु० माल भा०पुरी सु०हांसाकेन भा० रुपाई भ्रातृ प० मामू भा०कबाई सुतपुत्रादि-कुटुम्बयुतेन श्रीकुन्थुनाथबिम्बं का प्र० *तपापक्षे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिपट्टे श्रीसुमतिसाधुसूरिभिः* ।

(२५३)

सम्वत् १५४६ वर्षे वैषाख सुदि २ दिने श्रीश्रीमालज्ञा० म० कान्हा भा० मानू सु० वरसिंग दूढा मांडग लाडण पितृमातृश्रेयार्थं श्रीसम्भवनाथबिम्बं का० *श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसाधुसुन्दरसूरिपट्टे श्रीदेव-सुन्दरसूरिभिः* प्रति० *नगुदा वास्तव्य* ।

(२५४)

सम्वत् १५४६ वर्षे फागुण सुदि २ दिने *श्रीमंडपदुर्गवास्तव्य* श्रा० वहुआ नासा श्रीपालश्रावकेन श्रीकुन्थुनाथबिम्बं कर्मक्षयनिमित्तं कारित शुभंभवतु श्री ॥

(२५५)

सम्वत् १५५० वर्षे आषाढ़ वदि ८ शुक्रे *उपकेशज्ञातौ* श्रेष्ठिगोत्रे म० मनवीर पुत्र म० सुरकरण आहडदेव्या पूर्वजश्रेयसे श्रीअजित-नाथबिम्बं कारितं *उपकेशगच्छे ककुदाचार्यसन्तान श्रीदेवगुप्तसूरिभिः* ।

(२५६)

सम्वत् १५५१ वर्षे महासुदि २ रवौ *उपकेशज्ञातीय नवलागोत्रे* सा० देल्हा भार्या भरमादे पुत्र सा० गोपा गिमलदे पुत्र जिणदत्तश्रेयसे श्रीकुन्थुनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं *उपकेशगच्छे देवगुप्त सूरिभिः*प्रतिष्ठितं ।

---

२५२. गोड़ी पार्श्वनाथमन्दिर पायधुनि बम्बई
२५३. आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई
२५४. आदिनाथ जैनमन्दिर भद्रावती म० प्र०
२५५. जैन मन्दिर कटंगी म० प्र०
२५६. जैन मन्दिर कटंगी म० प्र०

(२५७)

संवत् १५५१ वर्षे पोष सुदि १३ शुक्रे श्रीश्री.मालज्ञातीय श्रे० होका भा० कुंअरि सुत दो० मेहाजल भा० २ पूतलिदे भाई सुत २ अरपाल भा० कमलादे नाम्न्या पुत्र धर्मदासादि सहितया स्वश्रेयोर्थं श्र श्र.श्रीविमलनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः।

(२५८)

संवत् १५५१ वर्षे वैशाख वदि २ सोमे *उकेशवंशे करमदीयागोत्रे* मं० गणोया भार्या लाली पुत्र मं० सहिजा भा० सहिजलदे पुत्र मं० मणोरादिसहितेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखर-*तरगच्छे श्रीजिनहरिखसूरिपट्टे श्रीजिन प(?भ)द्र सूरिभिः।*

(२५९)

संवत् १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरौ *प्राग्वाटज्ञातौ* पडआ डुंगर भा० देहमणि पु० हेमाकेन भा० लाडकी पुत्र रना मांगा मातृ··· पादि युतेन स्वश्रेयसे अजितनाथबिंबं कारित प्र० *तपा० सुमतिसाधुसूरि पट्टे श्रीहेमविमलसूरिभिः।*

(२६०)

संवत् १५५१ वर्षे विशाख (? वैशाख) वदि १० गुरौ श्र *उसवाल ज्ञातीय* सोनी अम्ना भा० सहिजू सुत सानी समरसी भा० मनाई अपरा भार्या जसमाई तेन स्वश्रेयसे श्रीसम्भवनाथमुख्यचतुर्विंशतिपट्ट कारापितः प्रतिष्ठितः *वृद्धतपापक्षे श्रीजिनरत्नसूरिभिः॥ मंगलपुर वास्तव्यः॥*

(२६१)

सम्वत् १५५१ वर्षे वै. व. ५ गुरौ *प्राग्वाट* ज्ञा. कीका भा. (भ ?) ति श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं आगमगच्छे *श्रीरत्नसूरिभिः स्तंभतीर्थे।*

---

२५७. पुरातन जैन मंदिर नागपुर
२५८. आदिनाथ जैनमंदिर भायखला बम्बई
२५९. जैन मंदिर पुराना नासिक
२६०. श्रीआदिनाथ जैनमंदिर पायधुनि बम्बई
२६१. महावीर स्वामी जैनमंदिर पायधुनि बम्बई

(२६२)

सम्वत् १५५२ वर्षे माघ शुदि ३ दिने उकेशवंशे परिच (? ख) सं० परबत भा० मणकी पु० सु० तेजसिंहेन भार्या डाही भ्रातृ प० इत्यादिपरिवार युतेन श्रीविमलनाथबिंबं कारितं खरतरगच्छे श्रीजिनसमुद्र-सूरिभिः प्रतिष्ठित।

(२६३)

संवत् १५५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शुक्रे श्रीमालज्ञातीय माघल-पुरागोत्रे म० हंसराज भा० हांसलदे प्र० सा० षेढ़ा भार्या षीमादे आत्म-श्रेज(य) से श्रीचन्द्रप्रभबिम्बं करापितं श्रीधर्मघोषगच्छे भ० कमलप्रभ-सूरि तत्पट्टे भ० पुण्यवर्द्धनसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥छ॥

(२६४)

संवत् १५५२ वर्षे माघ शुदि १३ श्रीउकेशवंशे बहुरागोत्रे सा० कुरा भा० लहडू पुत्र सा० वछा सा० पामाकेन भार्या रुपाइयुतेन पितृव्य सा० सदापुण्यार्थं श्रीसंभवनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरिभिः ॥ गुरुपुष्ययोगे ॥

(२६५)

संवत् १५५३ वर्षे वै० व० ३ शुक्रे उसवालज्ञातीय प० वारणा भार्या रमाइ सुत सा० वस्ता भार्या भटकू नाम्ना स्व० पु० श्रेयोर्थ श्रीवासुपूज्यबिम्बं कारितं श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीज्ञानसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीस्तंभतीर्थे।

(२६६)

संवत् १५५३ वर्षे माघ शुदि ६ सोमे उसवालज्ञा० सा० लाया भा० लालादे पुत्र सा० मेघा सा० धना गणपतिभ्यां स्वभ्रातृ नरपाल श्रेयसे श्रीसुमतिनाथबिम्बं कारितं श्री बि (: द्वि) वंदणीकगच्छे सिद्धा-चार्यसंताने प्र० श्रीककसूरिभिः ॥ थलग्रामे ॥

---

२६२. शांतिनाथ जैनमंदिर कोट बम्बई
२६३. खरतरगच्छीय बड़ा जैनमन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता
२६४. पुरातन जैनमन्दिर अमरावती
२६५. महावीर स्वामी जैनमन्दिर पायधुनि बम्बई
२६६. आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई

(२६७)

संवत् १५५५ वर्षे वैसाख शु० ३ शनौ प्रा० श्रे० सामल भार्या गोरीस (? सु) त लालाकेन भार्या ललनू भ्रा० साजण सुत हर्षादि कुटुम्बयुतेनश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथबिम्बं का० प्र० *तपागच्छे* श्रीस(? सु) *मतिसूरिपट्टे श्रीहेमविमलसूरिभिः । मालसणावास्तव्यः ॥*

(२६८)

संवत् १५५५ वर्षे फागुण वदि २ सोमे *लाटापल्ली* वास्तव्यः *उकेशज्ञातीय* मं० भोजा० भा० सारू पुत्र महं पोपट भार्या प्रीमलदे पुत्र कुरा खीमा भ्रातृ मकाना माकादि समस्तकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री*तपागच्छाधिराज* श्री*हेमविलास-सूरिभिः* ।

(२६९)

संवत् १५५६ वर्षे वैसाख सुदि १३ रवौ *उसवालज्ञातीय* श्रे० खेता भा० संपुरी सु० श्रे० खोना भा० वीरु सुत लखा भा० लखमा-देभ्यां सहितेन स्वश्रेयोर्थ श्रीशांतिनाथबिम्बं कारितं वडगच्छे प्र० देवचन्द्र *सूरिभिः । शेरपुरग्रामे ॥*

(२७०)

सम्वत् १५५८ वर्षे भाद्रु (? द्र) शुदि ५ गुरौ श्री*मडाणगच्छे* श्री*मालज्ञातीय* श्रेष्ठी (? ष्ठि) खोता भार्या धाऊं पुत्र भीणा भार्या हांसी सुत हादा भार्या सुहिवदे भातृरूपासहितेनभ्रातृपितृ निमित्तं आत्म श्रेयोर्थं श्रीपारिश्वनाथ (? पार्श्वनाथ)बिंबं प्रतिष्ठितं श्री*विमलसूरिपट्टे* बुध (? द्धि) *सागरसूरिभिः* ।

(२७१)

सम्वत् १५५६ भंवडी में

२६७. नया जैनमन्दिर अमरावती (बरार)
२६८. अंतरिक्ष पार्श्वनाथमन्दिर सिरपुर (बरार)
२६९. गणेशमल सौभाग्यमल का मन्दिर बम्बई
२७०. श्री महावीर स्वामी जैनमंदिर पायधुनि बम्बई
२७१.

(२७२)

सम्वत् १५६० वर्ष वैशाख वदि ३ रवौ श्रीहुं *बडज्ञातीय* वृद्धशाखायां व्य० महिराज भा० हेमादे सु० श्रे मांगा देवदास भा० हेमादे कबाई प्रमुखस्वकुटुम्बश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभस्वामिबिंब कारितं प्र० श्री *वृद्धतपापक्षे* भ० श्रीधनरत्नसूरिभिः ।

(२७३)

सम्वत् १५६० वर्षे वैशाख शुदि ३ दिने *उसवालज्ञातीय* मंडवा भा० संपूरि सुत भागचन्द्र भार्या गंगादे सहितेन श्रीकुंथुनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीद्विवंदणीकगच्छे भ० कक्कसूरिभिः* ॥ *खेडाग्राम वास्तव्यः* ॥

(२७४)

सम्वत् १५६० वर्षे माघ सुदि १३ सोमे श्री*श्रीवंशे* सा० जगडू भार्या शांति सुत सा० लटकण भार्या ललादे *श्री अंचलगच्छे सिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन* श्रीसम्भवनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन *स्तंभतीर्थे* ।

(२७५)

सम्वत् १५६० वै० व० ३ प्र सा० तुला भा सलखू पुत्र नीरूलेन भा० नारिंगदे प्र०भोला डुंगर, भाऊ जलादि कुटुम्बयुतेन श्रीश्रेयांसबिंबं का० प्र० तपा श्री*हेमविमलसूरिभिः* ।

(२७६)

सम्वत् १५६३ वर्षे वैषाख सुदि ३ दिने श्रीमालज्ञातीय *भांडीया गोत्री* (त्रे) सा० अजिता पुत्र सा० लाखा भा० अटी सुश्राविकया श्रीचन्द्रप्रभबिंबं कारितं स्वपुण्यार्थं प्रतिष्ठितं *खरतरगच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरि* पट्टालंकार श्री*जिनहंससूरिभिः* । कल्याणं भूयात् महासुदि १५ दिने ।

---

२७२. श्रीअन्तरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर सिरपुर
२७३. शांतिनाथ जैनमंदिर भींडीबाजार बम्बई
२७४. श्रीगोडी पार्श्वनाथ जैनमंदिर पायधुनि बम्बई
२७५. जैनमंदिर पांचोरा
२७६. गोडी पार्श्वनाथ मंदिर पायधुनि बम्बई

(२७७)

सम्वत् १५६३ वर्षे वैषाख सुदि ११ शुक्रे श्रीश्रीवंशे म० महिराज सु० म० बाला भार्या रमाई पुत्री कपू (यहां पर सुन्दर चित्र अंकित है) सुश्राविकया स्वश्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छेश भावसागरसूरीणामुपदेशेन श्रीनमिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन। श्रीजानू ग्रामे।

(२७८)

सम्वत् १५६४ वर्षे वैषाख सुदि ८ श्रीश्रीमालज्ञातौ घेडवियागोत्रे सा० देपा पुत्र सा० महिया पुत्र सा० करणा भा० श्राविका कस्तूरी पुत्र सा जीजा भार्या सा० मेघा पुत्रीकया देवगुरुभक्तिकया रत्नाई सुश्रावकिया स्वभर्तृ श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठित खरतर-गच्छे जिनहंससूरिभिः।

(२७९)

सम्वत् १५६५ वष माघ शुदि ५ गुरौ श्रीश्रीमालज्ञातीय सा० नाथा भा० वंगी नाम्न्या सा० जागा भा० अधिकू सुत ठाकुर प्रमुख समस्तकुटुम्बयुतया स्वश्रेयोर्थं श्रीचन्द्रप्रभबिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च श्रीपूर्णिमापक्षे श्रीसुमतिरत्नसूरिभिः विधिना।

(२८०)

सम्वत् १५६५ वर्षे वैषाख वदि १० रवौ श्रीउसवाल ज्ञातीय सा० अगसी भा० जिबो ''सूहवदे स्व भर्त्तार निमित्त श्रीकुंथुनाथबिंबं कारा-पितं प्रतिष्ठितं पूनमीया उदयचन्द्रसूरिभिः।

---

२७७. जैनमंदिर घाटकोपर बम्बई

२७८. पुरातन जैनमंदिर अमरावती

२७९. पार्श्वनाथ जैनमन्दिर भद्रावती

२८०. पुरातन जैनमन्दिर अमरावती

(२८१)

सम्वत् १५६५ वर्षे विषाख सुदि ९ बुधे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* श्रे० चोटा भा० वीरी सुत श्रे० लखमण श्रे० नाथा श्रे० साजण श्रे० पासड़ जगडू लखमण भार्या लखमादे सुत जागाकेन भार्या अधकू सुत ठाकुर प्रमुखकुटुम्बयुतेन आत्मश्रेयसे श्री धर्मनाथयुतश्चतुर्विंशति पट्टः *श्रीपूर्णिमापक्षे श्र पुण्यरत्नसूरिपट्टे भ० सुमतिरत्नसूरीणामुपदेशेन* कारितं प्रतिष्ठित वधिना *मंडपदुर्गे* ।

(२८२)

संवत् १५६६ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ लघुशाखायां सा० विरम भा० कली पुत्र सा० आसा भार्या कुंअरी नाम्न्या मुनिसुव्रतबिम्बं कारितं स्वश्रेयसे प्र० *तपागच्छे देवांवमलसूरिभिः* ॥ *नलकछे* ॥

(२८३)

संवत् १५६६ वर्षे माघ सुदि पंचम्यां सोमे *उसवंशे अंबिकागोत्रे* सा० सिधा भा० वती पु० सा० राजा । सा सीया भा० सिकतादे पुत्र हीरजी पदमसी सकतादे स्वपुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथबिम्बं कारित *भावड़ हरागच्छे* भट्टारिक *श्रीविजयसिंघसूरिभिः* प्रतिष्ठितं ॥

(२८४)

संवत् १५७० वर्षे कातिक वदि २ सोमे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* श्र० श्री राजा भा० हकू नाम्न्या आत्मश्रेयसे श्री अभिनन्दनस्वामीबिम्बं कारितं *आगमगच्छे श्रीसोमरत्नसूरिभिः* गुरुपदेशेन प्रतिष्ठितं च विधिना *चापानेरदुर्गे* ।॥

२८१. गोडी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बम्बई
२८२. गोडी पार्श्वनाथ जैनमन्दिर पायधुनि बम्बई
२८३. आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई
२८४. चन्द्रप्रभु जैनमन्दिर सेन्डहर्स्ट रोड बम्बई

(२८५)

संवत् १५७० वर्षे माघ वदि ६ शनौ श्रीमालज्ञातीय मं० सहद भा० सहजलदे पु० मंत्रिवर हाथी (अन्य वर्णों से) सुश्रावकेण भार्या नार्थी सा० हांसा काका मुख्य कुटुम्बयुतेन श्रीअंचलगच्छेश श्रीभाव-सागरसूरिणामुपदेशेन श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं प्र० श्री चंपकपुरे श्री ॥

(२८६)

संवत् १५७३ वर्षे वै० शुदि १० शुक्रे पत्तनवास्तव्य: श्रीआठरी (?) श्रे० लखमसा सु० श्रे० मीभा सु० मेघा श्रे० सोभा श्रे० समरा मेघा भार्या नाथी नयाश्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंब (? बिम्बं) कारापितं, प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि: ।

(२८७)

संवत् १५७५ वर्षे माघ वदि २ सौमे श्रीओसवंशे लघुसंताने भ० कदा भा० जीभलदे पुत्र मह अम भा० पूरि पुत्र आटोल पटोल लटकण सुमे श्रीवासुपूज्यबिम्बं का० द्विवंदण(?क)गच्छे सिद्धाचार्य-संताने श्रीदेवगुप्तसूरिभि: ॥ ऊंझाग्रामवास्तव्यः

(२८८)

संवत् १५७५ वर्षे माघ सुदि ६ शुक्रे श्रीश्रीमालज्ञातीय स० हर्षा भा० लाडकि सुत० सवछा स० नीया भा० रूपा मं पांचा सं कीका प्रमुख कुटुम्बयुतेन बाई लाडिकि नाम्न्या आत्मश्रेयसे श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकरयुतचतुर्विंशतिपट्ट: कारितं श्रीआगमगच्छे श्रीअमररत्नसूरि तत्पट्टे श्रीसोमरत्नसूरिगुरुपदेशेन प्रतिष्ठिताच विधिना विजापुरे ॥

---

२८५. आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई

२८६. शांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बम्बई

२८७. शांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बम्बई

२८८. जैनमन्दिर आरवी म. प्र.

(२८९)

संवत् १५७६ वर्षे वैशाख मासे सुद पक्षे षष्ठितिथौ सोमवासरे पुष्यनक्षत्रे श्रीश्रीउकेशवंशे श्री षट्वड (?) गोत्रे सा० सहज भा० सहजलदे तयो(?)पुत्र सा० हेतरसिंघ भार्या श्रीगांगी पुत्र सा० सीधा भार्या हांसाइ पुत्र साहण जपाल भा० सुश्राविका अहवदे तयो(:) पुत्रा(:) साह सोहनपाल साह पूना साह भोजा, साह भीमा, साह भजवल साह भरत प्रमुखपरिवाराणां सु० श्रीहांसाई श्रेयसे मूलनाइ (य) कं श्रीसंभवनाथप्रमुखचतुर्विंशतिजिनापट्टकं कारितं प(?प्र) श्रीकमलप्रभसूरिपट्टे भट्टारिक श्रीउदयप्रभसूरिभिः ॥

(२९०)

संवत् १५७६ वर्षे वै० सु० ६ सोमे श्रीकर्करपाटके नागरज्ञातीय श्रे० होसा भार्या हांसलदे सुत श्रे० रामदासकेन भार्या रूपो सुत सहदेयाल प्रमुख युतेन श्रीशांतिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धतपापक्षे श्रीधनरत्नसूरिभिः ।

(२९१)

संवत् १५७६ वर्षे वैशाख सुदि ५ रवौ प्राग्वाट्ज्ञातीय सा० जगमल्ल भा० अमरी सुत सोभा भार्या सोभागिणि आत्मश्रेयोर्थं आदिनाथबिम्बं कारितं श्रीवृद्धतपापक्षे भ० श्र श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं । सूद्रोसण व.स्त यः ।

(२९२)

संवत् १५७६ वर्षे वैशा० सु० ६ सोमे पं अभयसागरगणि प्रमुखादि शिष्य पंडित अभयमन्दिरगणिअभय (भय) रत्नमुनि प्रताभ्यां श्रीशांतिनाथबिंब कारितं प्रतिष्ठितं बृहत् तपा पक्षे) श्रीसौभाग्यसूरिभिः ।

२८९. श्रीशांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बंबई
२९०. श्रीशांतिनाथ जैनमन्दिर भींडीबाजार बंबई
२९१. जैनमन्दिर पाचोरा
२९२. गोडी पार्श्वनाथ मंदिर पायधुनि बंबई

२९३

सम्वत १५७७ वर्षे वैसाख (श्व) शुदि ८ श्रीश्रीमाल श्रे० वइजा भार्या वइजलदे पु० सा० करनसी भा० जीवादे पुत्र कान्हा सहितेन श्रीशान्तिनाथबिम्बं का०....तं प्रति० पूर्णिमापक्षे भ० मुनिचन्द्रसूरिभिः ।

२९४

सम्वत १५७८ माघसुदि ४ गुरु उसवंशे आमड़गोत्रे सा० धरणा भा० ठायकू सु० आणंद भा० रंगादे पु. अरदे निजकुटुम्ब श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं प्रति उ०गच्छे श्रीसिद्धसूरिभिः । "वलाअर ।

२९५

सम्वत १५७८ वर्षे माघवदि ८ सोमे श्रीभावडारगच्छे प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० आसधर सुह श्रे सालिग भा० पातलि पुत्र मेना हँसा सीवा मेघा भा० मल्ही पु० वीरपाल सोना, पूना अगरा श्रे० मेघा निमित्तं श्रीकुन्थुनाथबिम्बं कारितं प्र. श्रीविजयसिंहसूरिभिः । पत्तनवास्तव्य कल्याणमस्तु ।

२९६

संवत १५७८ वर्षे फागुण सुदि ६ बुधे राजाधिराज श्रीनाभिनरेस्व (! श्व) र तत्भार्या श्रीमरुदेव्या तत्पुत्र श्री श्री श्री श्री श्री आदिनाथस्यबिम्बं कारितं । इन्द्राणी अभिधानेन कर्मक्षयार्थं श्रेयेस्तु शुभंभवतु ॥

---

२९३ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।

२९४ आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई ।

२९५ आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई ।

२९६ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।

२९७

संवत १५८० वर्षे वैषाख वदि ४ गुरौ श्रीउसवालज्ञाती सा० साहुशाखायां पारिखि (! पारिख) गोत्रे पा. शिवकर भार्या वाल्ही पु० परिखि जागमालेन झब्बू पुत्र धीगा सोमासिंहादि कुटुम्बयुतेन स्व श्रेयसे श्रीश्रीपार्श्वनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीबृहत्खरगच्छे श्रीजिन-हँससुरिभिः* ॥ *मंगलपुरवास्तव्यः* ॥

२९८

सम्वत १५८० वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे श्री *श्रीमालज्ञातीय* श्रे० गोरा भा. प्रेमी सुतेन श्री वीकाकेन भा. वईजलदे पुत्र भोजा प्रमुख कुटुम्बयुतेन श्रीचन्द्रप्रभुस्वामिबिम्बं कारितं प्र० *पिंप्पलगच्छे श्रीधर्म-बिमलसुरिभिः* ।

२९९

संवत १५८१ स० मु० पदतसे.......दीपाक........ ।

३००

संवत १५९१ वर्षे वैषाख वदि २ सोमे *श्रीश्रीमालज्ञातीय* मं० रत्ना भा० वानू भा० बनी जवा जागना कुटुम्बयुतेनस्वश्रेयार्थं श्रीअजितनाथबिम्बं कारितं *वृद्धतपागच्छे श्रीधनरत्नसुरिभिः* । *भगडंवाल-वास्तव्यः* ॥

---

२९७ गणेशमल सौभाग्यमल मन्दिर, झवेरी बाजार बम्बई ।

२९८ गोडी पार्श्वनाथ मन्दिर पायधुनि बम्बई ।

२९९ आदिनाथ मन्दिर नया, भाजीमण्डी नागपुर म० प्र०

३०० आदि जिनमन्दिर भायखला बम्बई ।

३०१

संवत् १५६७ वर्षे माघशुदि १३ रवौ *उकेशवंशज्ञातीय* बरहडीयागोत्रे सा० भीमसी भा० केल्ह पुत्र सा० गांपूकेन परा देपादि कुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं *तपागच्छे* श्री *लक्ष्मीसागरसूरिपट्टे सुमतिसाधुसूरिभिः* चंदेरानगरे ॥

३०२

संवत् १५० (?) माघ शुद १० शनौ *उकेशवंशे* घुल्लगोत्रे सा० सांडा भार्या करणू पुत्र सा० जिनदत्तेन स० जगमाल साधु जीवा सा० जोग प्रमुखपरिवारयुतेन स्वभार्याश्रविकालखभादेपुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथबिम्बं कारापितं *श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनवर्द्धनसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टेशः श्रीजिनसागरसूरिभिः* ॥ श्री ॥

३०३

संवत् १६०० वरष व इ स ष (वैसाख) सुदि २ गौहै (गुरौ) श्री *चांपानेरवास्तव्यः* उसवालन्यात सा० मेरा पुत्र गागा तासुपुत्र थावर तास भारज्या (भार्या) रपिता पुत्र आणंद। ऋषभदास लषा धर्मदास श्री *वज्य द णमूसुरि* (विजयानन्द सूरि ?) *तपागच्छे* श्रीपार्श्वनाथबिंब रिषभदास ६००।

३०४

संवत् १६०० वर्षे ज्येष्ठ शुदि ३ शनौ *श्रीश्रीमालज्ञातीय* लघुशाखायां सा० सहिसकरण भा० ममनादे पुत्र साह सकल भार्या चंद सुश्राविका स्वश्रेयसे *अंचलगच्छे श्रीगुणनिधानसूरीणामुपदेशेन* श्रीधर्मनाथबिम्बं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

---

३०१ जैन मंदिर गणेशमल सौभाग्यमल, झवेरी बाजार
३०२ जैन मंदिर तपागच्छ बालापुर
३०३ खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तूलापट्टी कलकत्ता
३०४ चिन्तामणि पार्श्वनाथ मंदिर गुलालवाडी बंबई

३०५

संवत् १६०१ वर्षे श्रीमाली वृद्धशाखायां दो० भाणा भार्या गट्ठ पुत्र दो० नाकर ठाकर नाकर भार्या रजई नारकेन स्वमातृपितृ पुण्यार्थं श्रीश्रेयांसनाथबिम्बं कारापितं प्रतिष्टि (ष्ठि) तं बोरसिद्धीय पूर्णिमापक्षे श्रीगुणाकारित (?) तत्पट्टे श्रीउदयसुन्दरसूरितत्पट्टे ज्ञानसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीबोरसिद्धीय ग्राम वास्तव्यः ।

३०६

संवत् १६०४ वर्षे वैसाख वदि ७ सोमे स्तंभतीर्थे उसवाल (? उसवाल) ज्ञातीयवृद्धशाखायां श्री कमा भा० करमादे श्रीमुनिसुव्रत स्वामि (बिम्बं कारितं) प्रतिष्ठितं श्री वृद्धतपापक्षे श्रीअमररत्नसूरि (भिः) ।

३०७

संवत् १६०७ वर्षे श्रावण सुदि ८ दिने ऊकेशवंशे नवल-खा गोत्रे सा० तानिग पुत्र सा० जगा हरिचंद वरजागवीरा केन निजभ्राता पुतांकर श्रेयसे श्रीशांतिाथबिंबं कारितं श्रीजिनमाणि-सूरिभिः ॥ (प्रतिष्ठितम्)

३०८

संवत् १६०४ वर्षे श्रीसत धारवास्तव्य श्रीमालज्ञातीयः पा० सहिजपाल प्र. सा. सध श्री पार्श्वनाथबिम्ब कारापितं

३०९

सम्वत १६१५ वर्षे पोस (ष) वदि ६ शुक्ले श्रीगधारवास्तव्य प्राग्वाट्ज्ञातीय तेजपाल भा लाडक सुत दोन श्रीकर्णभार्या सिंगारदे सुत देवराज नाम्ना श्रीविमलनाथबिम्ब कारापितं तपागच्छे श्रीविजय-दान सुरिभिः प्रतिष्ठितं स्वश्रेयोर्थं ॥

---

३०५ गोडी पार्श्वनाथ मंदिर पायधुनि बम्बई

३०६ निज देवन्दिली से

३०७ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।

३०८

३०९ गोडी पार्श्वनाथ जैन मन्दिर पायधुनि बम्बई

३१०

सम्वत १६१६ वर्षे विशाख (? वैशाख) सुदि १० रवौ *श्रीस्तम्भतीर्थवास्तव्य श्रीमोढ़ज्ञातीय* वृद्धशाखायां कासव: (? काश्यप) गोत्रे ठा गांगा सुत ठां त्रंबमा बाई अताई पुत्री बाई चांदला नाम्न्या श्री आदीश्वरचतुर्विंशतिजिनबिम्ब प्रतिष्ठितं *श्रीतपागच्छे सूरीन्द्र श्रीश्रीश्री विजयदानसूरिभि:* श्री ॥ श्री ॥ श्री शुभं भवतु ॥

३११

सम्वत १६१८ वर्षे फागुण शुदि ११ शनौ राजा श्रीसंवर माता श्री राराणा तत्पुत्र श्री संभवनाथ बिंबं कारितं। श्री खंभाव वास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीय……कर्म क्षयार्थं कारितं ॥

३१२

सम्वत १६२० वर्षे फागण वदि १२ बुधे *सीरोहीनगरे* उपकेश *ज्ञातीय* गे....तीनिदा भा० वील्हणदे प्र० सद्गारगच्छेम....पार्श्वनाथ कारापितं *श्रीजीराउलागच्छे श्रीसालभद्रसुरभि:* ॥

३१३

सम्वत १६२६ वर्षे फागुण सुदि ८ दिने *तपागच्छे* भट्टारक *श्रीहीरविजयसूरि* स्वहस्तप्रतिष्ठितं *श्री* शांतिनाथ बिम्ब गां लखमसी भा० वरबाई सुत नकरा पदमसी *वडलीग्रामे* ॥

३१४

संवत् १६२७ वर्षे शाके १४९२ प्रवर्त्तमाने पोसमासे शुक्लपक्षे *पूर्णिमातिथौ* गुरुवासरे श्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखायां सं. राणा भार्या बा. राजलदे सुत सु चांपा अमीपाल श्रीनेमिनाथबिम्बम् कारितं प्रतिष्ठितं *श्रीतपागच्छे श्रीरविजयदानसूरि* तत्पट्टे श्रीहरी-*विजयसूरिभि:* । *श्रीस्तंभतीर्थे* नगरे ॥ शुभम् भूयात् ॥

---

३१० शांतिनाथ जैन मन्दिर कोट बम्बई ।
३११ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।
३१२ जैन मन्दिर (गांव का) चांदवड ।
३१३ पार्श्वनाथ जैन मन्दिर भद्रावती ।
३१४ आदिनाथ जैन मन्दिर भायखला बम्बई ।

३१५

संवत् १६४० वर्षे पोस वदि २ सोमवार दिने *श्रीतपागच्छ* नायक श्री *हीरविजयसूरिभिः* श्रीआदिनाथबिम्बं प्रतिष्ठितं सा.... श्राविका सा. भगिणि सुत सा. मेघजीकेन कारितं

३१६

संवत् १६४० वरषे (वर्षे) वैशाष (ख) वदि सोम श्रीओस-वालज्ञातीय सा० देवदास भारया (भार्या) देवलदे तत्पुत्र सा० रतनपाल भारया बा० रतनादे त० सम्यत्रे (?) सा जावड भारया बा० जासलदे तरापत्री (? तस्यपुत्री) बा० जी.......धरमनाथ.... विजिदानसूरि (विजयदानसूरि) प्रतिष्ठितं ॥

३१७

संवत् १६४३ वर्षे फा० सु० ११ *श्रीश्रीमाल* जाता....साह-मेघा भार्या जीवी सनाम्नी स्वहितुः पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथबिम्बं कारितं प्र० *तपागच्छीय* दिनमणि श्री *हीरविजयसूरि*राज्ये *विजयसेन सूरिभिः*। "*पत्तने श्री*"।

३१८

संवत् १६५६ वर्षे आषाढ़ वदि ५ दिने गुरौ नत्तराषाढायां उसवाल ज्ञातीय *लोढ़ागोत्रे जिनचन्द्रसूरिभिः*। श्री *खरतरगच्छे*।

३१६

संवत् १६५८ वर्षे माघ सितपंचमी सोमे वृद्ध सा (? २॥) *अहम्मदाबादवास्तव्य उसवाल*ज्ञातीय। सा। घोघा भार्या कान्हा सुत श्री राजा भार्या अदकू सुत सा० जयतमल भार्या जीवादे सुत सा०

---

३१५ शांतिनाथ जैन मन्दिर भींडीबाजार बम्बई।

३१६ श्रीदिगम्बर जैनमन्दिर नांदगांव अमरावती।

३१७

३१८ आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई।

३१६ पार्श्वनाथ मन्दिर भद्रावती म० प्र०।

ठाकर नामना भ्रातृ शा० पुण्यपाल मां नाकर स्वभार्या गमतादे सुत लालजी वीरजी प्रमुखकुटुम्बयुतेन स्वश्रेयसे श्री शं (? सं) भवनाथ बिम्बम् कारितम् प्र० श्री *तपागच्छै* महानृपप्रतिबोधक भ० श्री *हीरविजयसूरि* तत्पट्टे प्रभावक सुविहित भ० श्री *विजय-सेनसूरिभिः* आचार्य श्री *विजयदेवसूरि* उपाध्याय श्री *कल्याणविजय गणि* प्रमुख परिवृत्तैः ॥

परिकर बड़ा सुन्दर और सापेक्षतः शताब्दी की दृष्टि से सर्वथा भिन्न है।

३२०

संवत् १६६० व वै शु १३ दि० *श्रीश्रीमालज्ञातीय* स वछा तद भा० श्री रतनबाई श्री कुंथुनाथ बि० का० प्रति तपा भ० *श्रीविजयसेन सूरि* प्रे *नयविजय "भादक* ।

३२१

संवत् १६६२ वर्षे फागुण वदि २ शुक्रे *श्री अहिम्मदाबाद मध्ये* उसवंशज्ञातीय वृद्धशाखायां सोना भार्या बा० मूली तत्पुत्र भ। कमलसी भा० बा० कमलादे तत्पुत्र भ० खंपी भा० बा० पु० भागिणी पु० कीकाकेन भा० अष्ट पुत्रादि सहितेन श्री ७ धर्मनाथ बिम्बं कारितं कर्मक्षयार्थं साह श्री कडूआ निसमबाई श्रीविकेन, प्रतिष्ठितं शुभंभवतु। चीरं जीयात्। कल्याण मस्तु ॥

३२२

सं० १६७८ वर्षे फगुण शुदि ६ शनव (शनौ) *श्रीपत्तन वास्तव्य श्रीउसवालज्ञातीय वृद्धशापे* (खे) सोनी वधाधर भा० बा० मनी सुत सो०-रामजी का।पितं भ० बा० अजाई श्री *तपागच्छे* भट्टारक श्री *विजयसेनसू*[illegible] पट्टालंकार श्री *विजयदेवसूरिभिः*। *ईडर नगरे* प्रतिष्ठितं ॥

---

३२० पार्श्वनाथ जैन मंदिर भद्रावती म० प्र०
३२१ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता
३२२ खतरगच्छीय बड़ा जैनमन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता

३२३

सं० १३७८ वर्षे फागण शुदि ६ शनउ श्री पत्तनवास्तव्य श्री ऊसवाल ज्ञातीय वृद्धशाष (खे) रामजी भा० बा० अजाई सुत सो० वमलदास करापिन भा० बा फुला *श्रीतपागच्छे* भट्टारक श्री *विजयसेन सूरि* पट्टारक श्री *विजय देवसूरिभिः*। प्रतिष्ठितं विमलनाथ बिम्बं इडरनगरे प्र० ॥

३२४

संवत् १६६० वर्षे माघ सुदि ११ रवौ श्री *बर्हानपुर* पार्श्वनाथ बिम्बं कारापितं भट्टारक विजयतिलकसूरि तत्पट्टे श्री विजयाणंद सूरिभिः।

३२५

संवत् १६६१ व० सा० नगडु भा० बीराबाई श्री संभनाथ बिम्बं का० प्र० श्री *विजयाणंद* सूरिभिः

३२६

संवत् १६६३ वर्षे फागुण शुदि ३ दिने *प्राग्वाट ज्ञातीय* सा० हयत भार्या तत्पुत्र देवकरणेन श्री जिनकुंथुनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री *तपागच्छे* भ० *विजयदेव सुरि* आचार्य श्री*विजयसिंघ सूरिभिः*।

३२७

संवत् १६६३ वैशाख सु० ६ गुरौ पत्तन वास्तव्यः *उकेश* ज्ञा० प्र० कुंअरसी भा कोडिमदे सु० प्र० विमलसी केन श्री शांतिनाथ बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं श्री *तपागच्छे* श्री *विजयदेव सूरिभिः*

---

३२३ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता

३२४ शांतिनाथ जैनमन्दिर दादर बम्बई

३२५ पुराना जैन मन्दिर अमरावती

३२६ जैन मन्दिर मानिकचन्द्रजी भद्रावती म० प्र०

३२७ चन्द्रप्रभ जैनमन्दिर सेंडहर्स्ट रोड बम्बई

३२८

संवत १६९४ वर्षे माघ शुदि ६ गुरौ रेवतीनक्षत्रे श्रीद्वीपबंदिर वास्तव्य *उकेशज्ञातीय* वृद्धशाखीय सा० श्रीकरण भार्या श्रीसिरोदे सुत सा० मोणसी भार्या श्रीसम्पूराई पुत्र रत्न सा० शिवराज नामना श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं स्व प्रतिष्ठि....च। प्रतिष्ठापितम्......
तपागच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिभिः।

३२९

सम्वत १६९६ माघमासे कृष्ण प्रतिपक्षे....बाटया श्री*मंडपदुर्गे* श्री*नागपुरीयतपागच्छे* श्री*पासचन्दसूरिभिः* गुरुभ्यो नमः श्री*जयचन्दसूरि* विजयराज्ये मोह खेताश्रा सोवी सुहन देवा।
(स्फटिक रत्नकी प्रतिमा पर से)—

३३०

सम्वत १६९६ फागुण सुद ३ *वटपद्र* (बडोदा) वासि सा० खीमजी सुपुत्र माणिकजीकेन श्रीअंतरिक्ष पार्श्वनाथबिम्बं का० प्र० तपा श्रीविजयदेवसूरिभिः॥

इसी मूर्ति के रजत परिकर में निम्नलिखित लेख उत्कीर्णित है—

सम्वत १६९७ व० वै० वदि २ दिने *नडीआदिनगरवासी* उस-वाल वृद्धज्ञातीय राघण गोत्रीय सा० खीमजी भा. भाई तुलजाकुक्षि संभूत पुत्र सा० माणिकजी मेघजीनामाभ्यां श्रीअन्तरिक्षपार्श्वनाथ परिकर कारितः प्रतिष्ठित श्री*तपागच्छेश* भट्टारक श्री*विजयदेवसूरि* पादे महम्न *प्रदत्ताचार्य* पदप्रतिष्ठि श्री*विजयसिंहसूरिभिः*॥

३२८

३२९ जैन मन्दिर पार्श्वनाथ भद्रावती।

३३० जैन मन्दिर नासिक।

३३१

सम्वत १६६७ वर्षे फाल्गुन सित पंचमी गुरुवासरे *श्रीस्तम्भतीर्थ*-वास्तव्यः वृद्धशाखायां *उकेशज्ञातीय* सा० लक्ष्मीधर भार्या बाईलखमादे पुत्री बा० कान्हाबाईनाम्ना स्वमातृ सा० धनजी सा० रतनजी सा० पंचारण प्रमुखपतया श्रीनमिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं च स्व प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठि० श्री *तपागच्छाधिराज* भट्टारक *श्रीविजयसेनसूरीश्वर* पट्टालंकार *श्रीविजयदेवसूरीश्वर* पट्ट प्रभाकराचार्य *श्रीश्रीविजय-सिंहसूरिर्भिः* ।

३३२

सम्वत १७०१ वर्षे चैत्रासित अष्टम्यां बुधवासरे *नंदरबार* वास्तव्यः चक्रर प्राग्वाटज्ञातौ वृद्धशाखायां मां कृष्णाजी भार्यागौरी पुत्र रत्नसाह माणिकजी नाम्ना स्वभार्या रतनबाई प्रमुख परिवार श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ चतुर्विंशतिपट्टःकारिता प्रतिष्ठितः तपागच्छाधि-राज *भट्टारक विजयदेवसूरि (भिः) श्रीदक्षिणदेशे स्याहपुरे* ।

३३३

सम्वत १७०२ वर्षे श्री फागुण सुदि २ रवौ *श्रीदेवगीरी (दौलतावाद)* वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय श्री० भाइजी भा० गडतादे नाम्न्या स्वकुटुंब श्रेयसे स्वकारित प्रतिष्ठिता ॥ मुनिसुव्रतस्वामि बिम्बं का प्र० *तपागच्छाधिराज विजयसेनसूरि* पट्टालंकार भ० *विजयदेव-सूरिभिः महातीर्थ अंतरिक्षप्रतिमा श्रीसिरपुरे* ।

३३४

संवत् १७२७ जं जु० खरतरगच्छीय महोपाध्याय सत्यविजय गणिना प्र० पार्श्व बिंबं ॥

---

३३१ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।

३३२ श्रीशांतिनाथ मन्दिर भींडीबाजार बम्बई ।

३३३ गोडी पार्श्वनाथ मन्दिर पायधुनि बम्बई ।

३३४ खरतरगच्छीय बड़ा जैन मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।

३३५

संवत् १७६६ वर्षे वैषाख वदि १ गुरौ श्री *सूरतिबिंदर*वास्तव्यः श्री*श्रीमालीज्ञातीय* वृद्धशाखीय पं० सुन्दरदास तत्पुत्र सा० नागरदास भार्या उभय कु० कुलानन्ददायिनी बाई अमृतबाई केन स्वद्रव्येण पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथबिम्बं कारापितम् प्रतिष्ठितम् च श्रीतपागच्छे जिनशासनोन्नतिकारक सकल भट्टारक पुरंदर श्रीआणंदविमलसूरि पट्टे श्रीविजययानसूरिपटटे जगतगुरु भ० श्री विजयदेवसूरि पट्टे आचार्य *श्रीविजयसिंहसूरि भ०* श्री*विजयप्रभसूरि* पट्टे *संविग्न* पक्षे *भट्टारक* श्री *ज्ञानविमलसूरिभिः*

३३६

सम्वत् १७८४ वर्षे फागुण सुदि ५ रवौ *स्तंभतीर्थ*वास्तव्यः अकेशवंशे संघवी जवराजीसुतासंघवी मंगल जी भा संघ बहुतयो श्री स्वयंप्रभ जिनबिम्बं कारितम् मोक्षमानाय *तपागच्छ*⋯⋯भ⋯⋯ *सौभाग्यसागरसूरिभिः* ॥ श्रीरस्तु ॥

३३७

सम्वत् १७८५ वर्षे माह वदि ५ शुक्रे श्रीअंचलगच्छे पूज्य श्रीविद्यासागरसूरीणामुपदेशेन श्रीश्रीमाल ज्ञातीय परिख प्रतापसी सुत पाता गवाळदासेन श्रीधर्मनाथबिम्बं प्रतिष्ठापितं श्रीयभवतु।

३३८

संवत १७८८ पोष वदि १ रवौ *सूर्यपुरेवा* स्य⋯⋯रायसी चम्पा बाई⋯उकारितं प्र⋯⋯*ल्याण सागरसूरिभिः*

---

३३५ महावीर जैनविद्यालय देरासर बम्बई !

३३६ जैन मन्दिर घोटी नासिक।

३३७ खरतरगच्छीय बड़ा जैन मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता।

३३८ शांतिनाथ जैन मन्दिर दादर बम्बई।

३३९

संवत १८१० वैसाख शुदि १२ *विजयनन्दसूरिगच्छे* शाह देवश्र बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं *खरतरगच्छे जिनलाभसूरि* ।

३४०

संवत १८२२ वर्षे वैसाख सुदि १३ गुरो *उसवंशज्ञातीय* सा० साकरचन्द सुत सा० भाइचन्द स्वकुटुम्ब श्रेयोर्थं सुपार्श्वबिम्बं कारापितं *श्रीसूर्यपुरे खरतरगच्छे* ।

३४१

संवत १८२७ वैषाख शुदि १२ शुक्रे दादा श्रीजिनकुशलसूरीणा पादुका सा० भाईदासेनकारिता प्रतिष्ठिता च भट्टारक श्री *जिनलाभसूरिभिः* ।

३४२

सम्वत् १८२७ वैषाख सुदि द्वादशी तिथौ शुक्रे दादा *श्रीजिनचन्द्रसूरिणां* पादुका सा० *भाईदासेन*कारिता प्रतिष्ठिता च *श्रीजिनलाभसूरिभिः* ॥

३४३

सम्वत १८२७ प्रवर्तमाने वैशाख शुदि १२ तिथौ शुक्रे अकब्बर प्रतिबोधक दादाश्रीजिनचन्द्रसूरि पादुका सा *नेमिदास* कारितादास सुत भाईदासेन प्रतिष्ठिता *बृहत्खरतरगच्छे भट्टारक श्री जिनलाभसूरिभिः* ॥

---

३३९ गोडी पार्श्वनाथ मन्दिर पायधुनि बम्बई ।

३४० शांतिनाथ जैन मन्दिर कोट बम्बई ।

३४१

३४२ आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई ।

३४३ आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई ।

३४४

सम्वत १८३४ शाके १८६६ मासोत्तममासे ज्येष्ठमासे शुक्ल पक्षे ३ रवौ दिने *श्रीमालीज्ञातीय* श्राविका सुकद्वहु श्रीसिद्धचक्र कारापितः श्री*बर्द्धानपुरे* ॥

३४५

सम्बत १८४३ ई रै वे (? वै) *षाख* सुदि ६ बुधे *उसवाल* ज्ञातीय वृद्धशाखायां प्र० श्रीफतेलालजी तत्पुत्र साह श्रीसाकरलाल जी बिम्बंधर्मनाथबिम्बं (कारितं) श्री *बृहत्खरतरआचार्यगच्छे* श्री रूप*चन्दजी* अस्थायी *भट्टारक* ज० *श्रीजिनचन्द्रसूरिराज्ये* ।

३४६

॥ पंडित *क्षमाकल्याणगणि* प्रणमंति ॥

सम्वत १८४८ मिति माघ वदी ३ तिथौ श्री संघेन *सम्मेतशिखर* पार्श्ववर्ति*मधुवन*मंडनविहार श्रीअजितादिविशंतिजिनचरण न्यासाः कारिताः प्रतिष्ठिताश्च *श्रीसूरिभिः* ॥

३४७

सम्वत १८५२ का मासोत्तममासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अवैरतिया दिने गुरुवारे *उसवाल*ज्ञातिय सिद्धचक्रयन्त्रं कारापितं पं० *तिलोकसागर गणि* उपदेशात् प्र० पानकरै ॥

३४८

सम्वत १८७५ मि० मार्गशीर्ष ६ तिथौ रविवासरे श्रीजिन-दत्तसूरिणाचरणपंकजादि ख० ग० जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

---

३४४ पार्श्वनाथ मन्दिर बालापुर ।

३४५ तपागच्छ जैनमन्दिर बालापुर ।

३४६ सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३४७ जैनमंदिर शाहपुर ।

३४८ सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३४६

सम्वत १८७६ वर्षे शाके १७४२ प्र० वैशाख शुक्ल अक्षयतृतीयां भौमे *श्रीबृहत्खरतरभट्टारकगच्छे* दादाजी *श्रीजिनकुशलसूरिजी* चरण न्यासेयं *श्रीनागपुर* समीपस्थ *करमणा* ग्रामे भट्टारक *श्रीजिनहर्षसूरिजी* विजयराजे प्रतिष्ठितं ।

३५०

सम्वत १८७६ वर्षे शाके १७४२ प्र० आषाढ़मासे शुक्लपक्षे नवम्यां तिथौ भृगुवासरे *खरतरगच्छे* भट्टारक दादाजी श्रीमत *जिनदत्त-सूरिजी* चरणोन्यास्सेऽयं *श्रीअहिपुर समीपस्थ करमणाग्रामे* स्थापितं समस्त श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं शुभं भवतु ।

३५१

सम्वत १८८५ मिती फाल्गुन सुदि ३ रवौ श्री पार्श्वनाथस्य श्रीशुभस्वामिगणधरबिम्बं प्रतिष्ठितं भ० । श्रीजिनहर्षसूरिभिः ॥ बृहत्खरतरगच्छे कारितं बालूचरवास्तव्य श्रीसंघेन ॥

३५२

सम्वत १८८५ फाल्गुन सुदि ३ रवौ शिखरगिरौ श्रीसिद्धचक्र-मिदं प्रतिष्ठितां भा० श्रीजिनहर्षसूरिभिः । श्रीबृहत्खरतरगच्छे कारितां । ५·······पूरनचन्द्रे न ।

३५३

सम्वत १८८६ मिते माघ शुक्ल दशम्यां १० तिथौ श्री *गौडीपार्श्वनाथस्यद्विभूमियुक्तचैत्यं* श्री*बालूचरपुर*वास्तव्य *दूगड़गोत्रीय* श्री*प्रतापसिंघेन* कारितं प्रतिष्ठितं च श्री *खरतरगच्छेशः* जं० यु० भ० श्री*जिनहर्षसूरीणामुपदेशात्* । उ । *क्षमाकल्याणगणीनां* शिष्येणेति

---

३४९ दादावाड़ी करमणा नागपुर ।

३५० आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई ।

३५१ सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३५२ सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३५३ सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३५४

सम्वत १८९३ माघ सुदि १० वार बुध *राजनगरवास्तव्य* उसवाल ज्ञातीय वृद्धशाखायां शेठ भगुभाई पुण्यार्थं श्रीसिद्धचक्रपट्टः कारापित भट्टारक *श्रीशांतिसागरसूरिभिः* प्रतिष्ठितं *श्रीसागरगच्छे* पण्डित *प्रमोदविजयगणि*

३५५

संवत १८९७ फा० शु० ५ काश्यां श्रीऋषभदेवबिम्बं प्र० । श्री-जिनमहेन्द्रसूरिभिः । बुधोत्तम श्रीकुशलचन्द्रगण्युपदेशेनकारितं श्रीमाल गेडरियागोत्रीयबहादुरसिंहात्मज चुन्नीदासेन ।

३५६

श्री सागरांक वसुचन्द्र वर्ष के १८९७ नेत्रषण्णगधरायुते शाके १७६२ फाल्गुन त्रिमदसे सुतागते मार्गे वै० सितपयैधयालंके ॥ १ ॥ वाराणस्यां श्रीमद्‌भगवत् सहस्रफणालंकृत श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्रमूर्तिं का० । से उदयचन्द्र धर्मपत्नि महाकुमराख्यया मूलचन्द्र सुतया बृहत्ख-रतरगणेश श्रीजिनहर्षसूरि पट्टालंकृत श्रीजिनमहेन्द्रसूरिणा प्रतिष्ठिता श्री हीरधर्मगणि विनेय............।

३५७

सम्वत १९०२ आश्विन शुक्ल पूर्णिमास्यां १५ सिद्धचक्रमिदं श्रीश्रीमालज्ञातौ भींडीयागोत्रीय मु । देवीदासजी तत्पुत्र मुनीलाल तत् भगिनी सुतोभिधानतया बृहत्खरतरगच्छीय ज० यु० प्रा० भट्टार्क (भट्टारक) *श्रीजिननन्दीवर्द्धनसूरिभिः* *मुनियोधराजाभिधानोपदेशात्*

---

३५४ आदिनाथ जैनमन्दिर भायखला बम्बई ।

३५५ सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३५६ सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३५७ खरतरगच्छीय बड़ा मन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।

३५८

सम्वत १६०० मिती आषाढ़ शुदि ६ गुरौ श्री अजिमगंजे श्री-सुपार्श्वनाथ बिम्बं....प्रतिष्ठितं बृहत्खरतरगच्छेश भ *श्रीजिनहर्षसूरि* पट्टालंकार *श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः* कारितं च *श्रीवीकानेरवास्तव्य* समस्तसंघेन श्रेयोर्थं ॥ श्री ॥

३५६

सम्वत् १६०३ माघवदि पांचम अहमदाबाद वास्तव्य: उ०ज्ञा० व० अनूपचन्द हरखचन्द भारया (भार्या) दिपालीबाई श्रीसूपारसनाथ जिनबिम्बं कारापितं खरतरगच्छे भ०श्रीजिनमहेन्द्रसूरिभिः प्र० ।

३६०

संवत १६१० आसो सित ६ सा चन्द्रप्रभुबिम्बं कारितं च नाहटा संतोषचन्द्र भार्या वसंता व्य० पुत्र निहालचन्द्र पौत्र ठल्लुयुतेन बृहत्खरतरगच्छेश भ० श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

३६१

संवत १६२१ मिति आश्विन शुक्ल १५ शनिवासरे इदं जंत्रे कारापितं श्रीमालज्ञातौ टांकगोत्रे ज्वालानाथ तत्भार्या मुनीबीबी प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री जिननन्दीबर्द्धनसूरि तत्शिष्य मुनि पद्मजस उपदेशात् ॥ कल्याण मस्तु ॥ (सिद्धचक्रयंत्र)

३६२

संवत १६२१ वर्षे माघशुदि ६ गुरौ श्रीअंचलगच्छे पूज्य भट्टारक रत्नसागरसूरीश्वराणामुपदेशात् श्रीकुंकणदेशे मुंबेबिंदर वास्तव्यः उसवंशेलघुशाखायां नरसी नाथा संघ समस्तेन आदिनाथबिम्बं करापितं ।

---

३५८ सम्मेद शिखर मन्दिर मधुवन ।

३५६ महावीर स्वामी जैन मन्दिर पायधुनी बम्बई ।

३६० सम्मेदशिखर मन्दिर मधुवन ।

३६१ (निजदैनन्दिनी से) खरतरगच्छीय बड़ामँदिर तुलापट्टी कलकत्ता

३६२ अनन्तनाथ मन्दिर काथा बाजार बम्बई ।

३६३

संवत १६२१ वर्षे माघ सुदि ७ गुरौ श्री अँचलगच्छे पूज्य भट्टारक श्रीरत्नसागरसूरीश्वराणामुपदेशात श्रीकच्छदेशे भचाउ नगरवास्तव्यः उसवंशे लघुशाखायां नागड़ा गोत्रे सा० नेणव्देवजी पुण्यार्थं श्रीशांतिनाथबिम्बम् (कारितं)

३६४

सम्वत् १६२१ वर्षे माघसुदि ७ गुरौ श्रीअँचलगच्छे भट्टारक रत्नसागरसूरीश्वराणुपदेशेने श्रीकच्छदेशे नागनपुर वास्तव्यः उसवंशे लघुशाखायां खोना गोत्रे शा० वीरसी जशवन्त तत् भार्या वालबाई तत्पुत्र देभर पुण्यार्थं विमलनाथजीबिम्बं करापितं.

३६५

संवत १६२६ मी० फागुन शुक्ल ७ बुधवासरे, इदम् धर्म-जिन (बिम्बं) कारापितम् उसवालज्ञातौ धाडेवागोत्रे कालूराम तत्भार्या छुनोबीबी प्रतिष्ठितम् श्रीजिनहंससूरिभिः ।

३६६

सं० १६२६ मिती फागुण शुक्ल ७ बुधवासरे इदम् विमलजिन (बिम्बं) कारापितं उसवालज्ञातौ महता भार्या मयनाबीबी प्रतिष्ठतं भ० श्री जिनहंससूरिभिः ॥

३६७

"उगणिस सै अरु तीस को ॥ संवत् अति श्रीकार ॥
शिखर गिरि की तलहटी ॥ मन्दर जीर्णोद्धार ॥
जीरणधार बनावयो ॥ अति मन रंग से ॥
अति उत्तंग उदार ॥ सहर मकसूदाबाद में ॥

---

३६३ अनन्तनाथ जैन मन्दिर काथा बाजार बम्बई ।
३६४ पुरातन जैन मन्दिर अमरावती ।
३६५ खरतरगच्छीय जैनमन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता ।
३६६ खरतरगच्छीय जैनमन्दिरतुलापट्टी कलकत्ता ।
७ सम्मेद शिखर मन्दिर मधुबन ।

बालुचर शुभ स्थान ॥ दूगडगोत्र प्रधान ॥
है ओसवंश शिरदार
पुरववंश जगजश भयो ॥ प्रतापसिंह सुखकार ॥
तिणके पुत्र सदा सुखी ॥ श्री ल(?ल)छमीपतिसिंह ॥
रायबहादुर यह धनी ॥ श्री श्री-पुत्र धनपतिसिंह ॥
चिरंजीव इण के सदा ॥ छत्रसिंह सुरतार ॥
गनपत नरपतसिंह युत ॥ वरते जय जयकार ॥
श्रावण शुद शुभ दिवसमें ॥ कीनो उत्तम काम ॥
ज (?ल) छमीपतिछत्रसिंहणे ॥ तीरथ अद्भुतधाम ॥
म श्री श्रीसुखकार दर प्रगट्या…नगर बालूचर

गौडीपार्श्वनाथमन्दिर मूलनायक की वेदी में इस प्रकार लेख खुदा है।

॥ श्री गोडीपार्श्वजिनबिम्बम् ॥ संवत् १९३२ वर्षे ज्येष्ठ शुक्ल ११ चन्द्रे श्रीर्णोद्धारकम। विजयगच्छे श्रीपूज्य श्रीजिन शान्तिसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितम् स्थापितं च ॥

३६८

सं० १९३८ आ० कृ० १३ इदम् श्री जिनकुशलसूरि चरणम् लूणिया गो० मुन्नालाल पुत्र हीरालाल प्रतिष्ठितम् श्रीजिनचन्द्र-सूरिणां ॥

३६९

शुभ सम्वत् १९५२ का मिति माघ शुक्ल नवमी उपरान्त दशम्यां तिथौ सौम्यवासरे श्रीसम्मेतशिखर श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र चरण पादुकासमस्त श्रीसंघेन कारिता प्रतिष्ठिता हितवल्लभगणि भिः श्रीखरतरगच्छे श्रीमुर्शिदाबाद बालोचरनगरे राय धनपतसिंह स्य चे (चैत्ये) प्रतिष्ठिता ॥

---

३६८ खरतरगच्छीय बड़ामन्दिर तुलापट्टी कलकत्ता।

३६९ संमेद शिखर मधुवन

परिशिष्ट १

पुरातन दैनन्दिनी से—

सन १९४० में नागपुर (मध्यप्रदेश) के प्राचीन जैन ज्ञानभंडार-स्थित हस्तलिखित ग्रन्थों के अन्वेषण करते समय एक बड़े आकार का गुटका मेरे हाथ लगा। उसमें सिद्धाचलजी की नव टूंकों के कुछ प्रतिमा लेखों की प्रतिलिपि थी। थोड़ा सा परिचय भी उल्लिखित था। उसी की अविकल प्रतिलिपि भाषा में बिना कुछ परिवर्तन किए ही—यहां पर दी जा रही है। ११ पत्र की यह प्रति असावधानी से कीड़ों का भोजन बन गई एवं शीत के कारण कुछ भाग ऐसा चिपक गया कि दूर करने से कुछ वर्णन-नष्ट भी हो गया है। इस प्रति में न केवल प्रतिमा लेखों का ही संग्रह है अपितु विक्रम संवत १८९२ में बीकानेर और जयपुर की खरतरगच्छ की गद्दियों में विभाजन हुआ उसकी पक्षपात वाली चिठ्ठियां भी उल्लिखित हैं। उन दिनों जैन समाज के एक ही गच्छ में कितना भीषण वैमनस्य और मन मुटाव था इसका ज्वलन्त उदाहरण इस कृति में सुरक्षित है।

बीकानेर नरेश को लिखे गये पत्र में श्रीपूज्यजी का दैन्य परिलक्षित होता है। उदयपुर से पालीताना जो पत्र लिखा गया है वह सुप्रसिद्ध बाफना परिवार (उदयपुर) का जान पड़ता है। कहीं-कहीं संग्रहीत लेखों में जहां श्रीजिनमहेन्द्रसूरिजी का नाम था वहां संग्राहक ने तीक्ष्ण द्वेषवश मंडोरीयेका उल्लेखकर छोड़ दिया है। इससे इतना तो निश्चित है कि इन लेखों का संग्राहक बीकानेर की गद्दी का कोई यति रहा होगा। नागपूर में उनकी गद्दी के यति हरदम रहा करते थे, जैसा कि वहां पर पाए गए आदेश-पत्रों से स्पष्ट है। इनका संकलन कब हुआ होगा, संवत प्रति में निर्दिष्ट नहीं है; परन्तु सम्पूर्ण दैनंदिनी के पढ़ने से स्पष्ट हो जाता है कि १८९२ और १९१० के

भीतर ही इनका संग्रह हुआ होगा। कारण कि ईर्ष्याग्नि के कण कुछ लेखों के संग्रह में परिलक्षित होते हैं।

यतिका इतिहास-प्रेम अवश्य ही प्रशंसनीय है। इस प्रकार तीर्थ यात्रा विषयक दैनंदिनी लिखने की प्रथा यति समाज में रही है। ऐसी ही छह दैनंदिनी और भी मुझे प्राप्त हुई हैं। एक में बीकानेर एवं तत्समीपवर्ती मन्दिरों के लेख एवं तन्निर्माताओं का उल्लेख है, एवं दूसरी गतवर्ष बनारस में राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद के घर से कुछ पुराने पत्र मिले थे। उनमें राजगृह, पावापुरी, लछवाड़, बिहार सरीफ और बनारस के लेख एवं विशिष्ट ज्ञातव्य उल्लिखित हैं। संभव है अन्वेषण करने पर इस प्रकार की और भी ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त हो। ऐतिहासिक एवं विशिष्ट कुछ ऐसी भी घटमाएं होती हैं जिनका उल्लेख ग्रन्थों में न मिलकर ऐसे फुटकर पत्रों में मिल जाता है।

सिद्धाचलजी की नवटूंकों में भिन्न-भिन्न स्थानों की प्रतिमाओं की संख्या देने की संग्राहक ने चेष्टा की है। ऐसी ही चेष्टा उन्नीसवीं सदी में मुनि रत्नपरीक्ष ने भी की थी। सापेक्षतः रत्नपरीक्ष अधिक सफल हुए।

मध्यप्रदेश के कामठी, हींगनघाट, अमरावती, कारंजा, नागपुर आदि के जैन ज्ञान भण्डारों में एतद्देशीय सामाजिक और ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश डालने वाली फुटकर सामग्री प्रचुर पारमाण में उपलब्ध होती है परन्तु जैनों की इस ओर रुचि न होने के कारण प्रतिवर्ष दीमकों के उदर में प्रविष्ट हो रही है। प्रांत का दुर्भाग्य है कि सरकार भी सांस्कृतिक ठोस कार्य की ओर दुर्लक्ष्य किए हुए हैं। स्वतन्त्र भारत की शासन संस्था अपने इतिहास के प्रति इतनी बेदरकार रहे यह आश्चर्य ही नहीं अपितु खेद का विषय है।

—मुनि कांतिसागर,

श्री सिद्धाचलजी में नामेरी नकल है

॥ ५० ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ संवत १६७५ मिति (ते)
सुरताणनूरदीनजहांगीरसवाईविजयराज्येसाहिजादा .... १।

---

१ यह लेख "एपिग्राफिया इण्डिका" और प्राचीन जैन लेखसंग्रह पृष्ठ २४-५ में प्रकाशित हो चुका है अतः यहां देना उचित नहीं समझा।

सम्पादक,

"चौमुखजी रो तिण मांहे भीतर पासे माहिलो भमती चौमुखजी ने पासे प्रतिमा.........१ जंत्र २ दादेजीरा चरण रूपेरा १ पंचतीर्थीरी सिवासोमजी नी मूरत"

बाहिर मण्डप तिनरी विगत

प्रतिमा ३ पाषाणनी काठ के मन्दिर में है। १ यंत्र तांबेरो "ॐकार" "ह्रींकार" प्रतिमा २६, २ गट्टा। नवपदरा चांदिरा, एक मूरति हाथी पर चांदिनी, १ पंचतीर्थी, ३ प्रतिमा सर्वधातरी देहर रै बारणे गोमुखयक्ष चकेसरी है ।

ऊपर तिणरी विगत—

संवत् १८६३ शाके १७५८ प्रवर्तमाने माघसित १० बुधवासरे *श्रीपादलिप्तनगरे* गोहल श्रीकांधाजी कुँअरनोंघणजी तत् कुँअर परतापसिंघजी विजयराज्ये सुमतिनाथबिम्बं कारितं *श्री वृहत्खर-तरगच्छे भ० श्रीजिनहर्षसूरिजी" आगे मंडोरीयेरो नामौ है।*

एनामो भगवानजीरेनीचै उर भगवानजीरेनीचे पटड़ी है तिनरी विगत

संवत् १८६८ नामि वैषाख वदि ५ गुरुवासरे श्री विक्रमपुर वास्तव्यः उसवालजातीय वृद्धशाखायां निरखोशाखा धाड़ीवाल गोत्रे श्रे० भीखणदासजी तत् भार्या कुंदनाबाई तत्पुत्र श्रे० दीपराज-जी, आधुनिक दक्षिण (? बरार) देशे श्रीएलचपुरवास्तव्य, तस्यमाजी कुँदनाबाई श्रीसिद्धाचलजी यात्रा करणेकुँ आए, उदार चित्त से सप्तक्षेत्रे धनव्याप्त श्रीचौमुखऊपर दक्षिणदिशि गवाक्ष कारितं श्रीआदिजिनबिम्बं स्थापितं च वृहत्खरतर गच्छे भ० श्रीजिनहर्षसूरिजीविजयराज्ये श्रीजिनसौभाग्यसूरिजीविजयराज्ये वा० कल्लीजी शि० पं० जयवन्तजी शि० पं० देवचंदजी शि० पं० प्रेमचन्दजी तत् भ्राता पं० हीराचन्द्र प्रतिष्ठितं.......मत स्वामी श्री श्रीसुपार्श्वनाथजी ।

सामने पुण्डरीकजी

संवत् १६७५ वे शित १३ शुक्रे *श्रीबृहत्खरतरगच्छे* सं० सोमजी कारितं श्रीनमिबिम्बं *श्रीजिनराजसूरि* पुरंदर प्रतिष्ठितं श्रेयसे। बिम्ब १२ तिणमें ३ बाहिरे मंडोरीया (*श्रीजिनमहेन्द्र-सूरिजी*) प्रतिष्ठि। १५ बिम्ब इण उरीये में ७ अगला ८ मंडोरिये धरा है।

नीचे में,

संवत् १६७५ वैषाख शुदि १३ शुक्रे प्राग्वाटज्ञातीय सं० साइया भार्या नाकू पुत्र सं० नाथा भार्या नारिंगदे पुत्र सूरजीकेन श्रीश्रेयांस बिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं च *खरतरगच्छाधिराज* युगप्रधान श्री जिनसिंहसूरिपट्टाहर्यक्ष प्रत्यक्ष वा० सुविहितपक्ष लब्धश्री अम्बिकावर भट्टारक प्रवर *श्रीजिनराजसूरिजी* श्रेयसे परिकर है ॥छ॥

२१ बिम्ब उण ओरिये में। मंडोरीये १, और २ चरण-पट्टपाषाणना है।

संवत १६७५ बैषाख सित १३ शुक्रे श्री प्राग्वाट जातीयं सं० साइया भार्या नाकू पुत्र सं० नाथा भार्या श्री नारंगदे पुत्ररत्न सं० सूरजीकेन श्रीमुनिसुव्रतबिम्बं कारितं.........बृहत्खरतरगच्छे श्री *जिनराजसूरि राज्ये*...........।

स्वस्ति श्रीपालीताणा शुभस्थाने सर्व उपमालायक गुरांजी श्री १०८ श्री *हीराचंदजी मोतीचंदजी माणकचंदजी* सपरिकरान श्री *उदयपुर* थी लि० साह *जोरावरमल्ल चांदणमल्ल* की वंदना १०८ वार बांचज्यो तथा समाचार बांचज्यो *बीकानेर* वाला पूरब के संघ साथे जात्रा करण आवे है सो इणाँरो विध बिवहार समेलो इत्यादि न करावणो। श्रीजिनहर्षसूरिजी से वचन आज्ञा याद राखने काम कारजो। थे साधर्मी हो तिणसे लिख्यो है, और मिन्दरजी की प्रतिष्ठा थे करजो, पिण इणरे हाथे काम होवे सो मतां करजो, थे

सारी बात जाणो छो काम करो सो विचारने करजो जे कदास भोले भावे कीनो तो आगे थांने सारी बात सुं विचार करणो पड़े सो आविचार्यो काम न करज्यो। इण बात सुं थांह्रो सदा मरजादीकपणो रेहसी तो जाणज्यो। सं० १६०२ वैशाष वदि १। तथा जूनेगढ़ वाला ने थे सारी वातरी जतावणकर देज्यो, लिख देज्यो। जैपुर, अजमेर, *पाली* प्रमुख कोई सामेलो हुवो नही ते विवहार सर्व ने जतावणी कर देज्यो। नकल है।

पता—)

२४ गुरांजी श्री १०८ श्री हीराचंदजी मोतीचन्दजी माणिकचंद जी सपरिकरान्

हजूररे परवानेरी नकल छै (छाप) श्रीलक्ष्मीनारायणजी

स्वस्ति श्रीमहाराजाधिराज, राजेश्वर नरेन्द्रशिरोमणि *श्री रतनसिंहजी* महाराज कुंवर *श्रीसरदारसिंघजी* वचनात् श्रीवीकानेर रा साहुकारां परदेस में छै तिका समतो दिसी सुप्रसादवंचै। अप्रंच भट्टारक श्रीपूज्यजी *श्रीजिनसौभाग्यसूरिजीनै* म० श्री पू० श्री जिनमहेन्द्रसूररी सरावकां मन्या हुवे तो थेई ईयांनै मानज्यौ, नहीं तो कुही माननणरो मुदो नहीं। संवत् १६ (०) मिति श्रावण सुदि ८ मुकाम पायतषत *श्रीवीकानेर* कोट दाषल।

स्वस्ति श्री *वीकानेररा* साहुकारां परदेस मे छै तिकां समता (दे) जो श्रीवीकानेर सुं लिषतु मुहता महाराव *हींदुमलरा* जुहार बांचज्यो अठारा समाचार श्रीजीरी निजरसुँ भला छै। थांहरा सदा भला चाहिजै। अप्रंच श्रीपूजजी *श्रीजिनसूसौभग्यसूरिजीनै* श्री पू० *जिनमहेन्द्रसूरिजीरे* सरावकां मन्यां हूवै थे भी यानूं मानज्यो। न माना हूवै तो न मानज्यो। संवत १९०२ मिती श्रावण सुदि ८।

ओ काम मुँहता *हींदुमलजी* लिष दियो छै तिनरी नकल है।

संवत १६०० मिति आषाढ़ सुदि ६ गुरौ संभवनाथस्वामि-बिम्बं प्रतिष्ठितं च *वृहत्खरतरगच्छे* भट्टारक *श्रीजिनहर्षसूरि* पट्टालंकृत भट्टा०.........कारितं कोठारी श्री केशरीदास जी तत्भार्या .... आसकरण पौत्र...राज सहितया स्व श्रेयोर्थम् सार्वधात।

सेसफणापार्श्वनाथजी ||........................संवत १८६७ नेत्रषणग धरांयुते शाके १६......फाल्गुनात्......नाग के भार्या वे सितपटोव पालके ||१|| *वाणारस्यां* श्री........पार्श्वनाथ जिनेन्द्र मूर्ति का० से० उ० युतयुतया *वृहत्खरतरगच्छेश* श्री...........गणि ....उ० *हरीधर्म* गणि...........कुलाल कृत........रित्र........जिन धर्मोन्नत्ति क्त्सल श्री सूरि सम्मतेयम्............श्रेयसे: ||

संवत् १८८६ मिती माघ कृष्ण पंचम्यां...........................श्री संघेन द्वादशसहस्रप्रमितेनद्रविणेन कारित, महाराजाधिराज श्री *श्रीरतनसिंघजी* विजयराज्ये *वृहत्खरतरगच्छाधीश्वर* जं० यु० भट्टारक *श्रीजिनहर्षसूरीश्वराणामुपदेशात्* ||

नकल है विक्रमपुरे।

स्वस्ति श्रीराजराजेश्वर, महाराजा नरेन्द्र शिरोमणि महा‥श्री श्री श्री श्री श्रीजीसाहिबारो धर्मलाभ आशीर्वाद मालूम हुवै‥श्रीइष्ट देवजी की कृपा से श्रीहजूररे तेजप्रताप से सदा आनन्द है,। श्रीहजूर कै आरोग्य, अखण्ड प्रताप नितप्रति चाहते हैं तथा श्रीहजूरसें अरजी मालूम रहे श्रीहजूर से पं० प्र० *जीतरंगणि* ने *जैशलमेर* जाणे की षातर शीष वगसावणी सै श्रीहजूर को वडौ देशो परदेशी सुयश फेल रह्यौ है। श्र‥चितककै ममत्ती समस्त साधु श्रावकांरै‥फिकर.........................आप ईश्वर हो आप ही जो अपणै वचन को निर्वाह न करस्यो तो और कौण करसी, उत्तम पुरुषी रो प्रतिज्ञा निर्वाह कर‥धर्म तो उत्तम-पुरुष ही पावणै कुं समर्थ होय हरेक मानवी की सामर्थ्य नहीं होय............हजूर मैं पटुवा[1]

---

१ जैसलमेर में पटुवे ही उन दिनों प्रधान श्रावक थे। थे तो वे बाफणा ार किसी युग में पटुवे का काम करते रहे होंगे अतः पटवे कहलाये। सर हेरमलजी बाफना के ये पूर्वज हैं।

सेठांरी अरजी की चिठी आई सुणी जै है सो श्रीहजूर सुविद्वांन है अपणी वणाई हुई वात है, तिणमे कसर न पडै—तिण मुजब दिल मैं यादगिरि रखाइवसी ओर अपणी वणाई हुई वात कै निर्वाह करणै.......................नकुंव छानही ल पासै अर राज्यनी मार्ग कै.................................धिराजा को। पुण्य प्रतापदिनदिन चौगुणो चढ़तो रहे वो धारसी..........................चतुरंग राज्य लक्ष्मी कै भोक्तामणने धारण करे हैं। अर जिण पुरसांरै बोलवचन को ठिकाणी नही...................कोउ··हेमी, सो वहता वाहैं बोल निहचै निर्वाहै नहो तिणमाणसरो मोल, कवडी कापडी येक ही है।

१ ओर श्री हजूर सै समस्त साधू समुदाय पर सुनिजर रखाई जैसी। ओर इण कलियुग कैं भेषधारी है सो चूकतकसीर तो भरे ही पिण श्री हजूर षट्दर्शन प्रतिपालकविरुद के धारी हो तिण से सब भूलचूक माफ़ करायजसी अर कारण मुलाइजो सदानुल रषाई जैहै तिणसु···रषायां जाई जसोजी, इण वडै उपाश्रेकी रीत मर्यादा हमेश की या.......जी.......हजूर न करस्यो तो ओर कुंण करसी श्रीहजूर क्षमा कहै, श्रीहजूर की सुनिजर रहणै सै सबको निर्वाह अच्छी तरैरो हुवौ जावसी ओर आप ईश्वर हो, मोटा हो, पंचम लोक पाल उपमा धारी हो! प्रतिज्ञा निर्वाहजाहै श्रीहजूर सैं अपणे शुभ-चिंतक..............पाईजैहे तिणसें यादा रखाई जसीजी, सदैव से साहिबांरै उदैरी माला फेरणैंवाला अपणा शुभचिंतक जाणसीजी, उर उपासर मै रहणे वाला समस्तसाधांनै श्रीहजूर सैं अपणा शुभचिंतक माणसीजी श्रीहजूर के वणाये हुवै स्वरूप कौ निर्वाह पिण करणौ श्रीहजूर रै हाथ है। बहुत क्या लिखैं, ओर शुभचिंतक दिसी पास रुक्को अनायत कीयांनै बहूत दिन हुय गया है सो शुभ-चिंतक जाण यादगिरि करसै वगसीस कराइजसी अठै लायक कायीजी लिख फुरमाई जसी वलमानपत्र आरोग्यां कुशलखेम श्री हजूररै सपरिवार सै धर्मलाभ आशीर्वाद मालूम रहै, दंत पूर्वक वगसीईजसी मिती प्रथम आसोज वदि ३ सं० १६०२।

नकल है।

नकल लिषी। इद चूपसूं, प्रेमधरि मन माहि।
बुद्धवंत ए वाचज्यो, प्रेमसदा चित लाय॥ १

प्रेमप्रीत दोनुं मिल्या, वाधे अधिक सनेह।
प्रेम सदा सुषे रहो, कहो बुध गुण गेह॥ २

पोथी पढ़ ज्यो प्रेम सुं, चूप धरि मन माही।
बाधवपने चित लायकै, प्रेम सदा चितलाय॥ ३

कीरत चाहे लोक मैं, कीरत नाम उदार।
अविचल कीरत जगत में, रहो सदा चिरकाल॥ ४

सासु·····चंद के पुत्र, अविचल कीरत लोक में।
राखो सदा··········, ··················॥ ५

॥ इति आसीस वंचना॥

............विगत देहरा जिन बिम्बनी

सं० १६०२ रा मि० कार्तिक शुदि २ दिने श्री मत्तपागच्छांवर दिनमणि जं० पु० प्र० भ श्री विजयदेवेन्द्रसूरिभिः॥ प्रतिष्ठितं तपागच्छे।

स्वस्ति विक्रमार्क सं०.........शाके १७५८ प्रवर्त्तमाने माघमासे शुक्ल पक्षे दशमीतिथौ..........गुर्जरदेशे श्रीअहम्मदाबाद नगरे श्री श्रीमालज्ञातौ लघुशाखायां भाण....दामोदरदास तत्पुत्र सा० श्री प्रेमचन्द तत्पुत्र सा० साकरचन्द्र तत्पुत्र........मर तत् भार्या प्रथमाबाई ....बुद्वितीया मानुकुंअर ताभ्यां........या स्वपुण्यार्थं श्रीपार्श्वनाथ बिम्बं कारापितंच संविज्ञ तपागच्छे श्री विजयसिंहसूरि संतानीय संविज्ञमानी श्री पू० पं० पद्मविजय गणि शिष्य पं० रूपविजयगणिभिः प्रतिष्ठितं श्रीसौराष्ट्रदेशेतिलकायमाने श्रीसिद्धिगिरितीर्थक्षेत्रे।

भरथनी फणसहित मूलसहित बिम्ब १६ बाहिररै एवं २१

तिणमे लिखत तिणमे एहिज लेख जाणवा। बिम्ब ११ हैं। भगवान जी के जीमणेपासे मंदिर है। तिणरी नकल—

संवत् १८६३ वर्षे शाके १७५८ प्रवर्तमाने माघ शुक्ल पक्षे तिथौ त्रयोदशी बुधवासरे। श्रीगुर्जरदेशे *श्रीअहमदाबादनगरे श्रीमालज्ञातौ* लघुशाखायां साहजी दामोदरदास तत्पुत्र साह प्रेमचन्द्र तत्पुत्र सा........यमुनादास तत्पुत्र खेमचन्द्र............प्रमुख कुटुम्बयुतेन सा० यमुनादास स्व श्रेयसे श्रीपद्मप्रभजिनबिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं च संविज्ञमार्गीय *श्रीतपागच्छे श्रीविजयसिंहसूरिसंतानीय* संविज्ञ मार्गीय श्री प० *पद्मविजयगणि* शि० पं० *रूपविजय* गणिभि: प्रतिष्ठितं च ॥ बिम्ब १५

ए लिखत है प्रतिमा मूलनायकनी सामने पुँडरीकजीनी थापना मूलनायकजी ना द्वार पूर्वनुँछे। भगवान जी सेती डावे पासे मंदिर है तिनका लेख इसा है—

स्वस्ति श्री विक्रमात् संवत् १८६३ वर्षे शाके १७५८ प्रवर्त्तमाने माघमासे शुक्ल पक्षे दशमी तिथौ बुधवासरे श्री *गुर्जरदेशे* श्री *अहम्मदावाद नगरे श्रीमाल ज्ञातौ* लघुशाखायां सा० श्री ५ दामोदरदास तत्पुत्र सा० पू० प्रेमचन्द्र तत्पुत्र सा० कर्मचन्द्र तत्पुत्र सा० श्री० पू० श्रीमूलचन्द्र तेन स्वश्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभबिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं च संविज्ञ *तपागच्छे श्री विजयसींहसूरि*सन्तानीय श्री पू० श्री *पद्मविजय* गणिभि: पं० *रूपविजय* गणिभि:।

कमल लंछन बिंब १२, ७ बाहिर बिम्ब ३ देहरी में बगतामा थासे। मूलनायकजी से जीमणे पासे यक्ष (गोमुख) गवे पासे (चक्रेश्वरी) देवी है।

छीपावसीनी विगत

सम्वत १७४१ वर्षे वैशाष शुदि ७ विधपक्षे *विधासागरसूरि* विजयराज्ये *सूरतनगर* वास्तव्य: सा० गोविन्दजी पुत्र गोडीदास भीमनदास कारितं श्रीआदिनाथबिम्बं प्रतिष्ठितंच *खरतरगच्छे* उपाध्याय दीपचंद गणि पं० देवचन्द्र गणिना।

प्रतिमा काली है। मूलनायक प्रतिमा से जीमणा पासे आला में यक्ष है, पासे पगला है। "अन्चलगच्छे प्रतिष्ठितं"। मन्दिरनी भमती मांहे प्रतिमा ५ है। ओर पबासण खाली है,।

रायणरे आगे मन्दिर है ३ मन्दिर १ नेमनाथजीनो प्रतिमा श्याम है। रहीनामो लिखत नहीं है। २ रायण आगे दूजो मंदिर है–

संवत् १६८८ वर्षे माघवदि ५ पाटणनगर वास्तव्यः समृद्धि सूरमल कारितं कुंथुनाथ बिम्बं·······*श्रीसुमतिसागरसूरिभिः*।

बिंबं १ नानो चूने मे ढका है।

रायणनीचै पगला श्रीऋषभदेवजी ना पादुका, प्रभुना पादुकानै पासे देहरी ६ खाली है।

छीपावसी मां वडता डावे पासे मंदिर १ तहाँ प्रतिमा ३ आदिनाथ जी मूल····में नहीं है। छीपावासी मे पड़ता डावे पासे मंदिर दूजो।

"संवत् १६८८ वर्षे माघ सुदि ६ शुक्रे *सागरगच्छे श्रीकल्याण-सूरिराज्ये* सा० नानजी पुत्र मदन कारितं प्रतिमा एक श्वेत।

संवत् १६८८ वर्षे माघ सुदि ६ शुक्रे सा० सूरचंद पुत्र लालचंद कारितं श्री युगमंधर १ बिंब प्रतिष्ठितं संविज्ञपक्षीय *श्रीसुमतिसागर सूरिभिः*।

हेमावसीनी विगत

मूलमंदिर नन्दीश्वरद्विपरो है। देहरे पर चौमुख है। बीचमें मेरु है।

संवत १८०३ माघसुदि १० बुध *राजनगरवास्तव्यः* ओसवाल ज्ञातीय सा० हेमाभाई प्रेमाभाई कारापितं प्रतिष्ठितं *सागरगच्छे शान्तिसागरसूरिभिः*॥

पोलमा वडता जिमणेपासे मंदिर है तिनरी विगत—

॥ सम्वत १८९३ शाके.......प्रवर्त्तमाने माघमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ बुधवासरे *श्रीअहम्मदावाद*वास्तव्यः *उसवाल*ज्ञातीय वृद्धशाखायां सिसो० वृद्धशाखायां शेठ शान्तिदास पुत्र सा० लखमीचंद तत्पुत्र शेठ खुशालचन्द तत्पुत्र शेठ वखतचन्द तत् भार्या जडावबाई तत् नाम तावत् पुण्यार्थं श्रीमहावीरबिम्बं सेठ हेमाभाई सेठ मनसुखभाईयुतेन उजमबाई प्रमुखकुटुम्बयुतेनस्वमातृभक्त्यार्थं श्री.........बिम्बं प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं *श्रीसागरगच्छे उदयसागरसूरिभिः*

बिम्ब सात............देहरा पासे देरीमें बिम्ब १७ है। सागर-गच्छे प्रतिष्ठित है।

पोलमे वडता डाबे पासे मन्दिर है तिनरी विगत—

॥ संवत १८९३ शाके १७५८ प्रवर्त्तमाने माघमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथौ बुधवासरे *श्री अहम्मदावाद* वास्तव्यः *उसवाल*ज्ञातीय वृद्धशाखायां *सिसौदियावंशे* कुकडलोलगोत्रे शेठ सा० खुशालचन्द तत्पुत्र शेठ वखतचन्द तत् भार्या जडावबाई तत्पुत्र शेठ अनोपभाई तत्पुत्र शेठ डाह्याभाई प्रमुखकुटुम्बेन स्वपिताभक्तिरागेन पुण्यार्थं श्री-कुँथुनाथबिम्बं कारापितं प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठापितं *सागरगच्छे* भ० *शान्ति-सागरसूरिभिः* प्रतिष्ठितं ॥

बिम्ब १२ सर्व, मूलनायक।

हेमावसीनी विगत

मूलनायकमन्दिरमें—

संवत १६८३ (? १८९३) मिति ज्येष्ठवदि ६ श्रीशान्तिदासजी पुत्र वखतशाह तत्पुत्र खुशाल तत्पुत्र हेमाभाई श्रीअजितनाथबिम्बं कारापितं प्रति० *श्रीशान्तिसागरसूरिभिः*। *सागरगच्छे*।

मूलनायकजी समेत प्रतिमा४२, धातुकी ३, नवपदजी, ओंकार, ह्रींकार तिणमें प्रतिमा ५८ है, प्रतिमाकराणेवालेरी जोडसमेत । सामने पुंडरीकजी ।

संवत् १६८६, पुंडरीकजी समेत प्रतिमा १७, चोवीसटो १, पंचतीर्थी ४, पाषाणरी, वड़ता जीमणा पासेटांको १ जलरो है । ७ देरी में (देवकुलिका) में प्रतिमा १६० हैं चौमुख सं० १८८२ नों ज्येष्ठ वदि ६ । डाबे पासे चौमुख १, विनानामेरा (बिना नाम का) है । आगे पोल तिनरे पार दो तरफ कुण्ड बीच में पगथीया भीभू कुण्ड, खोडीकुण्ड, डावे पासे बगीचो तिणमें देहरी १, गौतम ना चरण सं० १८७७ रो ।

प्रेमावसीनी विगत

मूलनायकनो मंदिर—

"संवत् १८४३ शाके १७०८ प्रवर्त्तमाने माघमासे शुक्लपक्षे ११ तिथौ चन्द्रवासरे *श्रीराजनगरवास्तव्यः* श्रीमालीज्ञातीय वृद्ध शाखायां काश्यपगोत्रे पुरमारवंशे मोदी श्रीखजी, तस्यपुत्र लवजी भार्या रतनबाई तत्पुत्र प्रेमचन्द्रेन कारापितं श्रीआदिनाथबिम्बं *श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिः तपागच्छे* ॥

प्रतिमा मूलगुंभारे ६६, यक्ष एक, माता ४, *सभामंडप है तिनरी विगत—*

ओंकार ह्रींकार ११ प्रतिमा ओर सवी ६६ है । बिंबे, सामने पुंडरीकजी—

संवत् १८४३ माघ शुदि ११ चन्द्रे सा० हेमचंद्र लालचंदकेन पुंडरीक कारापितम् ॥

प्रतिमा ३१

देहरो जीमणी बाजू

"संवत् १८६० वैषाख सु ५ चंद्रवासरे मथह प्रेमचंद भार्या जुइनी पुत्र सवाइचंदेन सहसफणा बिम्बं कारितं प्रति० *विजयाणंद सूरिभिः* ॥

बिम्बं ११ सर्व तिणमें सहसफणा बाकी, ओर इणदेहरे रे उपर चोमुख १ देहरो दूजो खूणे में, तिहाँ प्रतिमा मूलनायकजीरे पिछाडी देहरी १ तिण में चरण बड़ा है रायणरा।

देहरो ३ तीजो खूणे में तिणमें प्रतिमा १४ पाषाणरी। देहरी चक्रेश्वरीजीरी है। देहरो ४ चौथो खूणे में सहसफणाजीरो संवत् लारलै मुजब, पहिले देहरेरो प्र० ८, तिणमें सहस्रफणाजी। बाकी ओर प्रतिमा नग दोय। २२ बारणे। इणहीज मंदिररे सभामंडप में प्रतिमा २ आले में कोरणी आबूजीरी छे। इण ४ मंदिर रे ऊपर चोमुख ३ ओर है ऊपर ओर मेरु भी है। खंभा ४, प्रतिमा १६ है, एवं २८ भमतीरी देहरी ५७ तिणमें प्रतिमा सर्व २४३ है। देवी मूरत व भमती है। चौवीसट्टा २। अने पोल बार भैंरू की मूरत २। सिचाई की ओरडी १ है। १ कुण्ड है। खोडियामाताको बगीचो छोटो है। देहरो आदबाबारो है। तिनरे पासे मोतीबाई वेन भगवानजीरी है।

बालावसीरीविगत

मूलनायकजी श्रीआदिनाथजीरी सम्प्रति की भराओडी तिणमें नामो नहीं है। पसवाड़े प्रतिमा तिण मे नामो—

॥ सम्वत् १८६३ ना मि० माह सुदि पक्षे १० तिथौ बुधवासरे कल्याणजी कानजी तत्पुत्र दीपचन्द अपरनाम बालाभाई श्रीआदिनाथ बिम्बं कारापितं, प्र० श्री देवेन्द्रसूरिभिः। *तपागच्छे*।

प्रतिमा ३० मूलगुंभारा मे,। पंचतीर्थी ४, गट्टो १, बाहिरे मंडप मे २३, बाहिर यक्ष-यक्षणी है। सामने पुंडरीकजी तिणरी विगत

सम्वत् १८६३ ना मि० महाशुदि १० तिथौ बुधवासरे श्री मम्बोईवासी कुँवरबाई पुत्र बालाभाई आदिनाथबिम्बं कारापितं प्रति०

विजयदेवेन्द्रसूरिभिः।

प्रतिमा २६, उर भमती में प्रतिमां ११७ बाकी अधुरी है। भुरज (बुर्ज) १ मे प्रतिमा ६५ है । तपांरी प्रतिष्ठित है। पिछाड़ी चरण वडा है। *फतेचंद सुहालीयेरो देहरो इण मे वणे छे।* बगलाओ।

मोतीवसीनी विगत

मूलमन्दिर

सम्वत् १८६३ ना मि० शाके १७५८ माघमासे शुक्लपक्षे १० तिथौ बुधे नाहटागोत्रे अमीचन्द साकरचन्द तत्पुत्र मोतीचन्द तद्भार्या दीवालीबाई तत्पुत्र खेमचन्द आदिनाथबिम्बं कारापितं "मंडोरीये" (*श्री जिनमहेन्द्रसूरिजी का नाम था पर लेखक ने द्वेषवश छोड़ दिया है।*)

सिद्धचक्राय नमः

"सम्वत् १८६३ वर्षे शाके १७५८ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममाघ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे *श्रीपादलिप्तनगरे* गोहिलवंशे श्री प्रतापसिंघजीविजयराज्ये श्रीमुम्बईबन्दरवास्तव्यः उसवालज्ञातीय वृद्धशाखायां नाहटागोत्रे सेठ अमीचन्द तद्भार्या रूपाबाई तत्पुत्र सेठ मोतीचंद तद्भार्या दीवालीबाई तत्कुक्षी समोद्भुति पुत्ररत्न श्री शत्रुँजय........................भिधानसंप्राप्तश्रीसंघपतीतिलकनवीनजिन भवनस्या...............साधर्मिवात्सल्यादिस्ववित्तसफलीकृतसंघनायक खेमचन्द्रजी परिवारयुतेन श्रीसिद्धाचलोपरिश्रीआदिनाथबिम्बं कारितं........गच्छे भट्टारक श्रीजिनदेवसूरिः पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरि विद्यमानेसपरिकरयुतेः प्रतिष्ठितंच श्री *बृहत्खरतरगच्छे* जं० यु० प्रधान श्री *जिनहर्षसूरि* आगे मंडोरीयेरो नाम है" (पट्टे श्री *जिनमहेन्द्रसूरिभिः।*)

श्री चोमुखजीरी पहिली पोल वडता डावे पासेरी विगत। बारी मे वडता डावे *अंगारसापीर* है ।

संवत १६७५ वर्षे वैषाख सुदि १३ शुक्रे पातसाहजहाँगिर

विजयराज्ये ऊसवालज्ञातीय श्रीअहम्मदावादवास्तव्य: भणसाली ......भार्याबाई मूली भणसाली कमलसी भार्याबाई कमलादे पुत्र भ० लखराज भार्याबाई वरबाई पुत्र भ० सदूआ भणसाली लखराज प्रमुखयुतेन श्रीश्यांतिनाथबिम्बं सपरिकरेण कारितं प्रतिष्ठितं च *बृहत्खरतरगच्छे* *श्रीजिनमाणिक्यसूरि* पट्टालंकार दिल्ली-पति पातस्याह *श्रीजहांगीरप्रदत्त* युगप्रधानंविरुदधारक *श्रीजिन चंद्रसूरिभिः* तत्पट्टे भट्टारक *श्रीजिनसिंहसूरिभिः* ॥

बिम्ब ८ मूल सफेद सहित परिकर युक्त।

दूजो मंदिर

सम्वत १५८७ (? १८८७) मिते वैशाख सित १३ बुधवासरे राजश्रीगोहिलवंशे *कुंअरनोंघणजीविजयराज्ये* *श्रीपादलिप्तनगरे* *श्रीअजमेरवृद्धशाखायां* उकेशज्ञातीय...........पुत्र हिमरांमजी तत्पुत्र.... ....लछमी प्रमुख कारापितं श्रीकुंथुनाथबिम्बं स्थापितं *श्रीबृहत्खरतरगच्छे* भट्टारक जंगमयुगप्रधान *श्रीजिनहर्षसूरिजीविजयराज्ये*, पं० देवचन्द्र प्रतिष्ठितं ।

श्री श्री श्री बिंम्ब ७ मूलनायक सफेद पंचतीर्थी इहै ।

तीजो मंदिर

संवत १८८८ मा० शु० श्रीश्रीमालवंशे इसढोणगोत्रे सुरतरांम पुत्र चुनीलाल तत्पुत्र कालकादासेन *लखनऊनगर* वस्तव्येन श्री अजितजिनबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं बृहद्भट्टारक *खरतर ग० जिनाक्षयसूरि* पादचंचरीक *श्रीजिनचंद्रसूरिभि:* स्वश्रेयोर्थं ॥

बिंम्बं ३, सफेद । जीमणेपासेरी विगत ।

पोलरे पासे प्रथमखाडो, पडुवा, आगे मरुदेवी मातारो देहरो । आगे *नरसी नाथारो देहरो* वणो छे। *आंचलगच्छ है* । रहवासममोईमे है । श्रीहालखरडीरो देहरो *दोलुमल हरषचंदरो है*, तिहां मूल प्रतिमा मे नाम जंगम *श्रीजिनचंदसूरि* प्रतिष्ठितं.......संघवा, आदिनाथभिम्बं

श्रीखरतरगच्छे। भगवान से जीमणे पासे प्रतिमाका बारणाई श्राविकाय। धर्मनाथबिम्बं श्री *बृहत्खरतरगच्छे* युगप्रधान *श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः*।

मूलनायकसे डावे पासे—

संवत १८६३ प्रमिते शाके १७५८ प्रवर्त्तमाने माघमासे सिते १० बुधौ श्री *पादलिप्तनगरे* गोहिल श्रीकांधाजी *कुंवरमोंघणजी* राज्ये श्रीआदिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितंच श्री *बृहत्खरतरगच्छे* भ०ज०यु० प्र० श्री *जिनहर्षसूरिभिः* ॥

जीमणे पासेरी विगत

॥ सम्वत १८८८ भा० सु० ५ श्री*श्रीमालवंशे इणठोणगोत्रे* सूरतरांम पुत्र चुनीलाल तत्पुत्र कालकादासेन लखनऊ नगर वास्तव्येन श्रीऋषभजिनबिम्बं कारितं प्र० श्रीबृहतभट्टारक—*खरतरगच्छे श्रीजिनाक्षयसूरि* पाद चंचरीक *श्रीजिनचन्द्रसूरिभि* :

एनाम प्रतिमाजी मे हैं। नीचे पटडी मूँकी तिणमें एनाम लिखे हैं सो जाणना। चौमुखजीमे पहेली पोले बड़ता पासे डावे पासे मंदिर है तिनरी विगत। ४ मन्दिर *श्रीखरतरगच्छे राजश्रीरायसिंहजी* राज्ये *श्रीजिनमाणिक्यसूरि* पटै युगप्रधान *श्रीजिनचंद्रसूरिभिः* शिष्य आचार्य *श्रीजिनसिंहसूरि* समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान प्र० ॥ मुँह आगे प्रतिमा तिणमे लिख्यो है—

॥ सम्वत् १५ (?६) ६२ वर्ष मि० माघ शु० १ श्री *अमरसर*—संघेन कारितं श्रीपार्श्वनाथबिम्बं प्रति० *श्रीजिनराजसूरिभिः*॥

बिम्ब ५ मूलवेदी मे सफेद, आला २ जामे दोय बिम्ब। दर एक *मंडोरियो*।

मंदिर पाचमो

सम्वत १७६१ (? १८६१) वैशाख शुदि सप्तमी सा० उदैसिंघ पुत्र सा० लख............पार्श्वनाथबिम्बं कारितं अजितनाथ चौमुख है। बिम्ब १६ नीचे रखा है *मंडोरीयोरा*।

सम्वत् १८६१ मिते माघसित पंचम्यां चंद्रवासरे श्रीपादलिप्त-नगरे गोहिल श्रीकाधाजी कुंअरश्रीनोंघणजी तस्य पुत्र प्रतापसिंघ-जीविजयराज्ये श्रीमकसूदावाद—वालुचरवास्तव्य बृहतशाखा ऊसवालज्ञातीय दुगडगोत्रे निहालचंदजी तस्यपुत्र इन्द्रचंदजी श्रीशत्रुंजयतीर्थयात्राविधानसंप्राप्तनवीनजिनभुवनबिम्बं, श्रीसाधर्मिकवात्सल्यादिधर्मक्षेत्रेसप्तस्ववित्तसं० श्रीविमलाचलोपरि-विहारशृङ्गारहार श्रीरिषभजिनबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं च श्रीबृहत्खरतरगच्छे भ० यंगम युगप्रधान श्रीजिनहर्षसूरीश्वर विजयराज्ये वा० कल्लाजी शिष्य पं० जयवन्तजी शिष्य पं० देवचन्द्रेण प्रतिष्ठितं ॥

जोडे जिन बिम्ब दोय, बिम्ब ३ ओर है, सर्व ६ बिम्ब आला २ खाली है। इण आगे बडी पोल है।

पहेली पोलमे वडता जीमणे पासे चोमुखजी में तीजो मंदिर—

सम्वत् १८६३ शाके १७५८ प्रमिते माघसित १० बुधे मकसूदावाद (वास्तव्यः) उकेशज्ञातीय वृद्धशाखायां नवलखागोत्रे सा० नसरुपजी तत्भार्या रुकमादे तत्पुत्रं हर्षचंदजी सपरिवारयुतेन श्रीशान्तिनाथजीजिनबिम्बं नवीनविहारकारितं बृहत्खरतरगच्छे। मूलसहित बिम्ब आठ हैं।

दूजोमन्दिर

सम्वत् १८६३ प्रमिते वैशाख सित ३ वार शुक्रे श्रीपादलिप्त-नगरे गोहिल श्रीकाधाजी कुंअरनोघणजी तत्पुत्र प्रतापसिंहजी विजयराज्ये श्रीमकसूदावाद-वालुचरवास्तव्य बृहत्शाखा प्रकट उकेशज्ञातीय दुगडगोत्रे बाबू बुधसिंहजी तत्पुत्र बहादुरसिंहजी तत्भ्राता बाबू प्रतापसिंहजी तद्भार्या महताबकुंअर श्रीशत्रुंजय-यात्राविधानसंप्राप्त बाबू प्रतापसिंहजी श्रीसंघपतितिलक........ नवीनजिनभुवन......................साधर्मिकवात्सल्यादिधर्मक्षेत्रेसप्त-स्ववित्तसं० श्रीविमलाचलोपरिविहारशृङ्गारहार श्रीसंभव-नाथजी त० श्रीपार्श्वनाथजी त० शीतलनाथजीबिम्बं कारितं

प्रतिष्ठितं च श्रीमहावीर देवपट्टपरंपरायात् श्रीजिनउद्योतनसूरि श्री वर्द्धमानसूरि वस्तिमार्गप्रकाशक इत्यादि शास्त्र...........धूरिण भृङ्गारक सकलभट्टारक पुरंदर बन्दारक जंगम-युग-प्रधान श्री *जिनहर्षसूरीश्वरविजयराज्ये बृहत्खरतरगच्छे* वा० कनकशेखरजी तत् शिष्य पं० *जयभद्र*जी तत् शिष्य पं० देवचन्द्रेण प्र० ॥

उहां सेती गु० टोडरमलजी ताराचन्द आए थे। अयं प्रशस्ति। अठासुं चौमुखजी में वडतां वडी पोल आगे है। चौमुखजी तथा पुंडरीकजी री विगती लारले पानेमे है सो देखलेणी। पुण्डरीकजी से डावे पासे लेई जीमणे पासेसूं धीरी विगत लिखे हैं। पुण्डरीकजी तांई गणधर पादुका देहरी ३ है।

सम्वत १७८४ वर्षे मगसिर बदि ५ दिने श्री*मालज्ञातीय* खुशालचन्द्र भार्या बाइमावा कारितं प्रतिष्ठितं च *बृहत्खरतरगच्छे* उपाध्याय श्री *दीपचंद* शिष्य पं० देवचंदयुतैः श्री ॥

पासे छोटी देहरी एक चौमुखजीरी, ४ और देहरी पिण है सर्व्व प्रतिमा १५ देहरी १में।

सम्वत १८९३ माघसित १० बुधौ श्रीशान्तिनाथबिम्बं कारितं *बृहत्खरतरगच्छे* मंडोरीयेरी (श्री *जिनमहेन्द्रसूरि*) प्रतिष्ठितं।

श्री पालीताणानी तलहटी "संजत गुलाब" एनांव (म) प्रतिमामें हैं। नीचे पटड़ी है—

सम्वत १८९६ ना वइशाष मासे कृष्णपक्षे तिथौ ५ गुरुवासरे *लखनउ*वास्तव्य *उसवाल*ज्ञातीय वृद्धशाखायां......लाव गोत्रे महानन्दजी तत्पुत्र सदानन्दजी तत् भार्या बाई कुमारी......... गुलाबरायजी भार्या जूनोबीबी भ्रातृ मेहताबरायजी श्रीविमला-चलोपरिविहार कारितं, गुलाबरायजीनं शान्तिनाथजी, जूनोबीबी धर्मनाथजी, महेताबराय सुमतिनाथजी, अमरोबीबी चन्द्रप्रभु गुलाबबीबी ऋषभदेवबिम्बं कारापितं श्री*बृहत्खरतरगच्छे* भ० श्री*जिनसौभाग्यसूरिजी* शि० पं० देवचन्द्र शिष्य *हीराचन्द्र* प्रतिष्ठितं। बिम्ब ५ है देहरी ३ में है।

सम्वत् १८८८ वर्षे महाशुदि ५ दिने सोमवासरे *उकेशज्ञातीय भणशाली* विमलसाहजी तत्पुत्र........साहजी तत्भार्या जमुनाबाई श्रीऋषभनाथबिम्बं कारापितं श्री*बृहत्खरतरगच्छे श्रीजिनहर्षसूरि-विजयराज्ये* पं० देवचन्द्रेण प्रतिष्ठितं।

श्री मूरतबिम्बं २ तिणमे १ *मंडोरीये* प्र०।

देहरी ४ में

सम्वत १८९३ ना शाके १७५८ मासोत्तममासे माघमासे शुक्ल पक्षे दशमीतिथौ बुधवासरे *उसवाल*ज्ञातीय लोभजी पुत्र प्रभा करापितं श्रीसम्भवनाथजीबिम्बं प्र० मंडोरीयेरी (श्री*जिनमहेन्द्र-सूरिभिः* ३ बिम्ब है।

आगलो देहरो १—

सम्वत १६७५ वैशाख सित १२ शुक्रे सुरतांणनूरदीजहांगीर सवाई...................................नी[1]।

१ मूलनायकजीमे नांम १ प्रतिमा ओर २ चोबीसट्टा पाषाणरा पासे देहरी एक तिणमे प्रतिमा ६ है।

सम्वत १८५६ शाके १७२१ प्रवर्तमाने माघ शुक्ल पंचम्यां गुरौ *श्रीमहिमापुर वास्तव्य गहिलड़ागोत्रे* बाबू गंगादास पुत्र हुकमचन्द भार्या जयकुंअरकया श्रीपार्श्वनाथबिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं च बृहत्खरतरगच्छेश भ० *जिनहर्षसूरिभिः*।

पासे छोटी देहरी तिणमें चोमुख "प्रति *जिनहर्षसूरिभिः*" पासे देहरी एक तिणमे चरण दादेजीरा। सम्वत १८७० अषाढ़ शुदि १० दिने दादाजी श्री*जिनदत्तसूरिजी*, दादाजी श्री*जिनकुशलसूरिजी*, मुंह आगे चरण ३ हैं। सांजाराजोड ३ मुह आगे चरण *कल्लाजीरा*, पासे देहरी तिणमे श्रीजिनलाभसूरिजी, श्रीजिनचन्द्रसूरिजी रा चरण। १८५७ मिती फागुणवदि १ दिने। पासे देहरी तिणमे प्रतिमा ५

---

१ यह लेख "*एपिग्राफिया इण्डिका*" और "*प्राचीन जैनलेखसंग्रह*" पृ० ३२ में प्रकट हो चुका है। अतः यहां नहीं दिया है।

संवत् १६२१ वर्षे वैषा० सु० ५ दिने सूरतनगरे

पासे देहरी तिणमे चरण–

संवय १८०२ फा० व० २ दिने श्रीबीकानेरवास्तव्य वेद भगनी रामेण श्रीआदिनाथपादुका कारापितं श्री बृहत्खरतरगच्छे जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनहर्षसूरिभिः ।

पासे देहरो ।। सकलसूरिराजाधिराज श्रीजिनराजसूरिभिः ।।

पासे एक मन्दिर तिणमें प्रतिमा ३ मूल श्याम सहित दोय जूनी मूरत, चोवीसट्टो १, नन्दीश्वरपट्ट १, विगत–

संवत १६७५ वैषाख सुदि १३ शुक्रे श्री राजनगरवास्तव्यः प्राग्वाटज्ञातीय सं० सोमजी.. श्रीपार्श्वनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतरगच्छाधिराज प्रधान श्रीजिनसिंहसूरिपट्टे शृङ्गारक भट्टारक वृन्दारक श्रीजिनराजसूरीश्वरैः ।

संवत १६७५ वैषाख सुदि १३ शुक्रे श्री रूपजीकेन परमकल्याणाय युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरिमूर्तिः कारिता प्रतिष्ठिता श्रीजिनराजसूरिभिः

दूजी मूरति श्रीजिनकुशलसूरिजी री है ।

सम्वत १८८४ वर्षे मृगसिर वदि ५ दिने श्रीनन्दीश्वरद्वीप द्विपञ्चाशतचैत्यशाश्वत जिनबिम्बं कारितां अहम्मदावादवास्तव्य श्रीमालज्ञातीय सा० ताराचन्द पुत्र हरखचन्द्रेण कारिता प्रतिष्ठता श्रीबृहत्खरतरगच्छे भट्टारक १०६ श्रीजिनचन्द्रसूरिशाखायां महोपाध्याय श्रीराजसारजी तत्शिष्य महोपाध्याय श्रीज्ञानधरमजी शिष्य उपाध्याय श्रीदीपचंदगणिसंयुतैःसम्यगदर्शन प्राप्त्यर्थं भवतु लिखितं पण्डित मतिरत्नमुनिना ।

क्रमसे चलता देहरो बडो तिनरी विगत–

संवत १६७५ वैशाख सित १३ शुक्रे ....१।

भमती लगती देहरी तिणरी विगती—

संवत १६७५ माघवदि ४ *मेमदाबादवास्तव्य श्रीमालज्ञातीय* लघुशाखायां का० भ० विमलादे सुत श्रीपारसबिम्बं प्रतिष्ठतं *बृहत्खरतरगच्छाधिराज* भट्टारक *श्रीजिनराजसूरिभिः*

बिम्ब ३ है। चरणपादुका चार है। तिणमें २ भगवान का २ साध्वी राज्यसरी (श्री) उदेश्री रा है। देहरी एक गणधरपादुकारी १४५२ है तिणरी विगत—

॥ ५० ॥ नमः श्रीमारुदेवादि वर्द्धमानान्ततीर्थकराणांश्री पुण्डरीकांद्यगौतमस्वामिपर्यन्तेभ्योगणधरेभ्यः सभ्यजनेभ्यःपूज्यमा— नेभ्यःसेव्यमानेभ्यः। [२]

संवत १६७५ वैशाष सुदि १३ शुक्रे *प्रागवाटज्ञातीय* सा० रूपजीकेन सार परिवारसहितेन श्रीकवडयक्षमूर्ति कारिता प्रतिष्ठिता *श्रीजिनराजसूरिभिः। बृहत्खरतरगच्छे।*

संवत१६७५ वर्षे वैशाख शुदि १३ शुक्रे अहम्मदाबादवास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय सं० रूपजीकेन भार्या जेठी पुत्र उदवन्त बाईकोडि कुंअरि प्रमुखपरिवारसहितेन परमहिताय श्रीचक्रेश्वरीमूर्वि कारिता प्रतिष्ठ० *श्रीजिनराजसुरिभिः। खरतरगच्छेश्वरे : ॥*

आगे देहरी तिणमे प्रतिमा ५ मूलनामो नहीं है। बगल मे प्रतिमा है तिणमे नामो है

---

१ यह लेख भी प्राचीन जैनलेख संग्रह में छप चुका है। अन्तर केवल इतना ही है कि इसमें शान्तिनाथजिनबिम्बं भरवाने का उल्लेख है।

२ यह लेख भी "*प्राचीन जैन लेखसंग्रह*" पृ० ३४ पर मुद्रित हो चुका है। अतः यहां देना उचित नहीं समझा गया।

संवत १७२५ वर्षे वैशाख सुदि चन्द्रे सा० वीरचन्द सुत तारार्चंदेन श्रीपार्श्वनाथबिम्ब भरापितं। *श्रीविजयाणंदसूरिगच्छे श्रीविजयउदयसूरि* उपदेशात् श्रे योर्थं प्रतिष्ठितं ।

बगलमे प्रतिमा तिणमे नामो–

संवत १८२५ वर्षे वैशाख वदि शुक्रे श्रीमालवृद्धशाखायां सा० हेमचन्द........*पार्श्वचंद्रगच्छे* प्रति० श्री *तपागच्छे*......सूरिभिः ।

पासे देहरी तिणमे प्रतिमा ३–

संवत १८८० वर्षे माह शुदि ५ शुक्रे श्रीपार्श्वनाथबिम्बं कारितं बाई रतन पुत्रज जीवतेन प्रतिष्ठितंच *श्रीखरतरगच्छे* उपाध्याय श्री *दीपचंद्रगणिभिः* ।

पासे १ देहरी तिणमे प्रतिमा ५ मूलनायकजी मे नामो–

खरतरगच्छे जं०यु०प्र०भ० श्री*जिनलाभसूरिभिः* । *बगलकी प्रतिमामे* संवत १८३८ वैशाख शुदि ५ बुधे *श्रीसूरतबिंदरवासी* सा नेमीदास सुत सा० भाईदासकेन श्री*खरतरगच्छे* श्रीअजितनाथबिम्बं ॥ *पांचही बिम्ब में प्रतिष्ठा खरतरनी ॥*

देहरी पहिली मे प्रतिमा दोय हैं ।

सं० १९०० वैशाख सित १५ गुरुवासरे श्री लखणेउवास्तव्य श्रीमालज्ञातीय वृद्धशाखायां सा० सदासुखजी तत्पुत्र छ......जी चुनीलालजी शिवप्रसाद सपरिवारयुतेन श्रीचन्द्रप्रभ (बिम्बं) कारापितं श्री*बृहत्खरतरगच्छे* प० *देवचंदजीशिष्य हीराचंद्रेण* प्रतिष्ठितं । *एनाम पटडी मे है* ।

मूलनायकजी मे छे, १ मालूम होता है। प्रतिमा २ है। पासवाडे प्रतिमामे नामों *मंडोरीयोरोछे* । पटडी नीचे तारी छे। २ देहरी प्रतिमा ४ *मंडोरीयेरी* प्र० पटडी तीन में है *लषणेउरा रतनचन्द, बनारसरा* बानसिंहजीरी भार्या शभोबीबी।

३ देहरी ५ चरण ४ मालूगोत्र छोटेमलजी शान्तिनाथबिम्ब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीबृहत्खरतरगच्छे भ० श्री...आगे अक्षर चरण पीछे ढंका है। (प्र० ५) ४ देहरी प्रतिमा ५ मूलमे आदिनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितंच *श्रीजिनराजसूरिभिः*।

२ प्रतिमा *मंडोरीयेरी* छोटी बगल मे।

(प्र० ३) ५ देहरी प्रतिमा *मंडोरीयेरी* नीचे पटडी मे नामो मंडोरीयेरो । सं० १८८२ ना श्रीपूज्यजी नामा ३, नामा ५ साजांरा कलाजी प्रमुखरा।

आगे देहरो बड़ो एक प्रतिमा बड़ी सफेद मूलनायकरी और प्रद० ५ प्रतिमा ३ सफेद २ श्याम्।

पसवाडे प्र० १ *मंडोरीयेरी* नीचे पटडी में नामो

संवत १८८५ ना चै० सु० ११ वार भोमे *श्रीबीकानेरवास्तव्य* ओशवा० वृद्धशाखा डागागो० सा० बींजराजजी पुत्र हरषचंदजी भा० रतनकुंवर स्वनात्मानं बाई आसां................श्रीआदिनाथ स्थापितं, श्रीखरतरगच्छे ॥

॥ गणधर पादुकांरे आगे देहरी १ तिणमें प्रतिमा १ चरण थापना १३ री है। ७ ओर चरण है।

॥ संवत् १७६१ वर्षे वैशाष (ख) शुदि ७ रवौ *राजनगर-वास्तव्य, प्राग्वाट्ज्ञातीय* लघुशाखायां साह जीवनदास भार्या बाई वची पुत्र वनमालीकेन कारितं श्रीवासुपूज्यबिम्बं प्रतिष्ठितं *खरतरगच्छे* उपाध्याय श्रीदीपचंद्रगणिना उ० देवचंद्रगणिना सहितेन ॥

चरण ३ आडीबाजू लाल

संवत् १८०४ ना पोष वदि ६ दिने रवौ श्री*खरतरगच्छे* उपाध्याय श्रीदीपचंदजी शिष्य पं० श्री देवचंद्रेण ॥

१५७५ वैशाखसित ११ शुक्र का एक लेख है जो प्राचीन जैनलेख संग्रह में छप चुका है।

बगलां मे ओर चरण १ है।

संवत् १८३१ ना वर्षे महावदि ५ सोमे श्री रानेर (रांदेर) वास्तव्यः *श्रीमालीज्ञातीय* सा० षुसाल तसभार्या बाईरूपा तस पुत्र सा०मोतीचंदकेन *तपागच्छे* ॥ श्रीधर्मनाथ पादुका कारापितं च

भ० *श्रीजिनभक्तिसूरीणां* चरण १, । *श्रीसुधर्मस्वामि* पंचम गणधरनाचरण। भ० *श्रीजिनलाभसूरीणां* चरण २। वाचनाचार्य *अमृतधर्मगणीनां* चरण। *श्री प्रीतिसागरगणीनां* चरण वाचनाचार्य *क्षमाकल्याणगणि* रा चरण।

संवत् १८५४ मिते श्रावण सुदि १ बुधे *श्रीमकसूदाबाद* वास्तव्योपकेश्य सांडसुखागोत्रीय सा० कीर्त्तिचंदाभ्यां श्री-सुधर्मास्वाम्यादीनां विद्यमान स्वगुरोश्चपादन्यासाः कारिताः *बृहत्खरतरगणाधीश* भ० *श्रीजिनजंद्रसूरि* विजयराज्ये प्रतिष्ठिता श्री वाचनाचार्य *क्षमाकल्याणगणिना*। श्रीरस्तुतराम्म ॥

कल्याणविजयस्य पादुके इमे, विवेकविजयस्य पादुके इमे तवाडे चोमुख १ सं० १८८१ रो चरण १ ओर है। चरण जोडा २ *गच्छे*। जातरुचि खरतर ॥ संवत् १८४९ मिती श्रावण सुदि ७ प्र श्री *तत्त्वकुमारमुनीनाचरणन्यासः*! भट्टारक *श्रीजिनचंद्रसूरि* जयराज्ये ॥

रायणतले देहरी ३ तिणमे पगलां है ३८ वड़ा तिणारी विगत। जोड़ा पगलावड़ा आदिनाथजी रा २ देहरी में। ३८ पगलां जोड़ा री एकमे है। बगला वड़ा मे लिषत है!

॥ संवत्···४६ वर्षे ज्येष्ठ शुदि १२ वार शुक्रे आचार्या *खरतरगच्छे* वा० *रामचंदजी* तत् शिष्य *प्रेमचंदजी* करापित:।

उपा० देवचंद्रगणिनी पादुका, वा० *मनरूपगणिनी* पादुका,। पगला में चरण मंडोरिया रे है। प्र।

---

१ इस पादुका का लेख "प्राचीन लेख संग्रह पृ० २३ में छप ा है अतः देना स्थगित कर दिया है।

पासे देहरी १ तिणमें आलो (खत्तक) पिणछे तिणमें प्रतिमा १, मुंह आगे चोवीसीना चरण छे।

संवत् १८८८ वेशाख सित दिल्लीना गंगादास प्रमुख कराया बृहत्खरतरगच्छे भट्टारक श्रीजिनहर्षसूरिभिः विजयराज्ये पं० देवचंद्रण प्रतिष्ठितां।

ए नाम मात्र लिखा है। लिखित यादी है सो जाणना..........। एक देहरी पासे तिणमे चोमुष है। नामोमा वारकातीवाई मोती०''र पासे देहरी प्रतिष्ठितं च बृहत्खरतरगच्छे भ० श्री जिनलाभसूरिभिः प्रति०। १ पासे देहरी प्रतिमा १ चरण दो है नामो प्रतिष्ठितं च बृहत्खरतरगच्छे सासो० "भागचूला पादुका" सा० पुष्फचूला पादुका। आगे देहरो वडो तिणमे मूलनायकजी री प्रति० १ वडी। प्रतिमा तीन ओर है। कवडयक्षमूर्ति १ चक्रेश्वरी मूर्ति १ दोय मूर्ति ओर है। तिणमे नामरी

सुरतानूणरदोनजहाँगीरसवाइहैविजयराज्ये ॥ सं० १६७५ वैशाष शुदि १३ शुक्रे ओसवालज्ञातीय भणसाली सा० साना भार्या भूली पुत्र कमलसी भार्या कमलादे पुत्र-लषराज भार्या वरबाई पुत्ररत्न सा० सदूआकेन भार्या पहुती पुत्री देवकी प्रमुख-सहितेन श्रीराजनगरवास्तव्येन श्री अजितनाथबिम्बं कारितं प्रतिष्ठितं च बृहत् खरतरगच्छे........श्री जिनसिंहसूरिपट्टालंकार भ० श्री जिनराजसूरि राजेः ॥

१ कवडयक्षमूर्त्ति १ चक्रेश्वरी मूर्त्ति

---

१ यह प्रेमचंद्रजी वही होने चाहिये जो पादलिप्तपुर-पालीताना में रहा करते थे। यों तो वे पूर्वावस्था में बीकानेर के थे परन्तु बाद में आपने मिथ्या परिग्रह का सर्वथा त्यागकर मुनित्त्व की दीक्षा स्वीकार कर ली थी! आपका चारित्र बहुत ही उच्चकोटि का था। आपने योग का भी अच्छा अभ्यास किया था। आपकी यौगिक शक्ति को देखने वाले अभी भी बंगाल में विद्यमान हैं। वयोवृद्ध बाबू गोविन्दचंदजी भूरा (जीयागंज वाले) ने आपके विषय में मुझे भली-भांति परिचित कराया। छुटपन में आपके पास ये पढ़े थे। श्रीभूराजी भी उस समय के धार्मिक इतिहास की एक कड़ी है। इतिहास के स्वाभाविक रुचि होने के कारण आपको उस समय की घटना आज भी ज्यों कि त्यों याद है। मु० कां० सा०

लेखों में आये हुए आचार्य व प्रतिष्ठायक मुनियों के नाम

परिशिष्ट ३—

लेखों में आये हुए गच्छों के नाम

[ख]

परिशिष्ट ४—

लेखों में आये हुए नगरों के नाम